CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

K. K. Sharma Guild
6.3.81

अस्याः सर्वेऽधिकारा राजशासनानुसारेण प्रकाशकेन स्वायत्तीकृता

B-1

* भाषाटीकासहिता *

* प्रेत मंजरी *

टीका.—स्व० पं० वायुनन्दन मिश्र

* प्रारम्भ *

मास्टर खेलाड़ीलाल शीतलप्रसाद
संस्कृत पुस्तकालय, कचौड़ीगली, वाराणसी-१

मूल्य १२)-

मुद्रक—मास्टर प्रिण्टिंग वर्क्स, बुलानाला, वाराणसी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

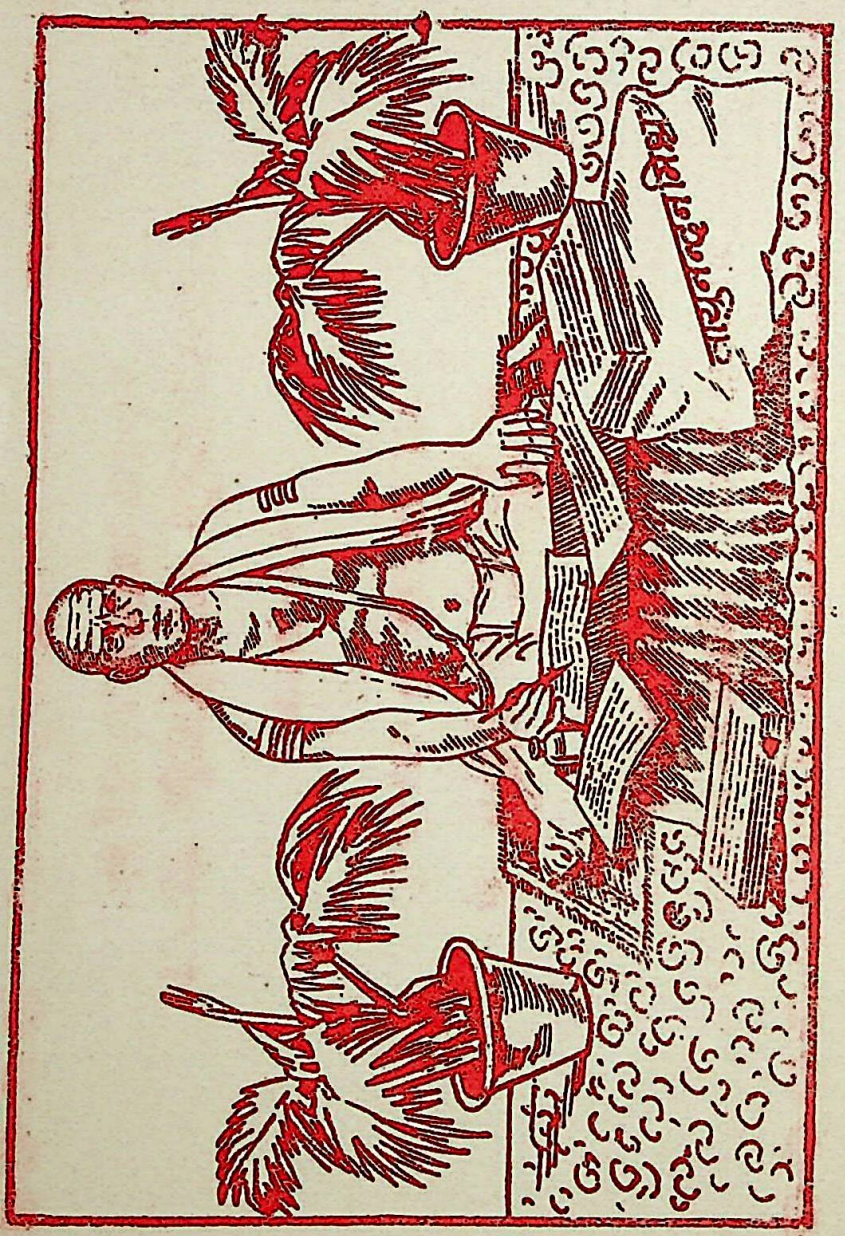

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

पण्डित-श्रीवायुनन्दनमिश्रप्रणीता

अथ प्रेतमञ्जरी प्रारभ्यते

[भाषाटीकासहिता]

संसार के बीज कारणस्वरूप हयग्रीव भगवान् को नमस्कार करके वायुनन्दन मिश्र इस पद्धति की रचना करते हैं ॥ १ ॥ नाना प्रकार के स्मृति-निबन्धों और बुद्धिमानों के मत को देख कर, बालकों के बोध के लिए उत्तम प्रेतमंजरी

नमस्कृत्य हयग्रीवं जगत्कारण-कारणम् । वायुनन्दनमिश्रेण रच्यते प्रेतमञ्जरी ॥ १ ॥ नाना-स्मृतिनिबन्धानां मतमालोक्य धीमताम् । लिख्यते बालबोधाय प्रेतमञ्जर्यनुत्तमा ॥२॥ अथ प्रेताधिकारिणः कथ्यन्ते । पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा भ्राता वा भ्रातृसन्ततिः । सपिण्डसन्ततिर्वाऽपि क्रियार्हो नृप ! जायते ॥३॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदकसन्ततिः । सपिण्डत्वं तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्त्तते ॥४॥

लिखते हैं ॥ २ ॥ पहिले प्रेतक्रिया के अधिकारियों को बतलाते हैं—पहिला अधिकारी पुत्र है, इसके अभाव में पोता, यह भी न हो तो परपोता, यह भी न हो तो भाई या भतीजा, इनके भी न होने पर सात पीढ़ी तक की कोई सन्तान अधिकारी होता है ॥ ३ ॥ इन सब के अभाव में चौदह पीढ़ी तक की सन्तान अधिकारी है । सपिण्डत्व ७ पीढ़ी तक लिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता है ॥ ४ ॥ और समानोदकभाव १४ पीढ़ी तक है। पिता का पिण्डदान और तिलांजलि पुत्र करे ॥ ५ ॥ पुत्र के अभाव में स्त्री करे। वह भी न हो तो सगा भाई करे। नष्ट कुल वालों और परित्यक्त बन्धुओं का राजा करावे ॥ २ ॥ मनु भगवान् कहते हैं कि पिता के मरणकाल के समय यदि पुत्र समीप न हो तो दूसरा कोई दस दिन की क्रिया कर दे, लेकिन सब क्रिया कभी न करे ॥ ७ ॥ मृतक की क्रिया तीन प्रकार की होती है—(१) प्रथम, (२) मध्यम और

समानोदकभावस्तु निवर्त्तेताचतुर्दशात्। पितुः पुत्रेण कर्तव्या पिण्डदानोदकक्रिया ॥ ५ ॥ पुत्राभावे तु पत्नी स्यात् पत्न्यभावे सहोदरः। उच्छिन्न-त्यक्तबन्धूनां कारयेदवनीपतिः ॥६॥ (तथा मनुः)—पित्रोर्मरणकाले तु न चेत् स्यात्सन्निधौ सुतः। अन्यः कुर्याद्दशाहं च न च सर्वे कदाचन ॥७॥ ततो मृतस्य त्रिविधा क्रिया भवति। प्रथममध्यमोत्तमाः। ततः षट्पिण्डादारभ्य दशाहान्तं मलिनषोडशी। इति प्रथमा क्रिया। विष्ण्वादिप्रेतान्तमध्यषोडशी, इति मध्यमा क्रिया। आद्यश्राद्धादारभ्य सपिण्डनान्ता उत्तमा क्रिया। (केचित्तु दाहादारभ्याऽशौचान्तदिनपर्यन्ता पूर्वा क्रिया। एकादशाहादारभ्य

(३) उत्तम। इसमें छः पिण्ड घर से लेकर श्मशान तक, दश पिण्ड दशवाँ तक मलिन षोडशी नामवाली प्रथम क्रिया होती है। विष्ण्वादि से विष्णुपर्यन्त ग्यारह ११ पिण्ड ब्रह्मादि प्रेतान्त पाँच पिण्ड तक मध्य षोडशी नामवाली मध्यम क्रिया होती है और एकादश से लेकर सपिण्डनान्त तक उत्तमक्रिया होती है। कोई-कोई आचार्य दाहकर्म से लेकर अशौचान्त दिन (दशवाँ) तक पूर्व क्रिया, एकादशाह से लेकर सपिण्डनान्त तक मध्यम क्रिया और सपिण्डन के बाद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांवत्सरिक (साल भर का पिण्ड) पार्वण, आभ्युदयिक (नान्दीश्राद्ध), नित्य श्राद्ध आदि को उत्तर क्रिया बतलाते हैं। इसमें औरस आदि तेरह प्रकार के पुत्रों का अधिकार है। उन तेरह प्रकार के नाम ये हैं—(१) औरस, (२) पुत्रिका-पुत्र (नाती), (३) क्षेत्रज, (देवरादि से उत्पन्न पुत्र), (४) कानीन, (अविवाहित कन्या के पितृगृह में उत्पन्न पुत्र), (५) सहोढज (गर्भवती कन्या के विवाह होने पर उत्पन्न पुत्र), (६) गूढ़ोत्पन्न (गुप्त रीति से उत्पन्न पुत्र), (७) पुनर्भू पुत्र

सपिण्डनान्ता मध्यमा क्रिया। सपिण्डनाऽनन्तरं सांवत्सरिक-पार्वण-ऽऽभ्युदयिक-नित्यश्राद्धादिरूपोत्तरा क्रिया) तत्र औरसादि-त्रयोदशपुत्राणामधिकारः। ते च त्रयोदशपुत्राः। औरसः १, पुत्रिका-पुत्रः २, क्षेत्रजः ३, कानीनः ४, सहोढजः ५, गूढोत्पन्नः ६, पौनर्भवः ७, अपविद्धः ८, दत्तकः ९, क्रीतः १०, कृत्रिमः ११, स्वयमुपगतः १२, पारशवः १३, तेषु मुख्यः औरसः। तदभावे पुत्रिकापुत्रः। ततः पूर्वपूर्वाभावे उत्तरोत्तराधिकारी। एषां त्रयोदशपुत्राणां लक्षणम्। ततः प्राणप्रयाणसमये वैतरणीनदीतरणकामः स-वत्सगोदानं कुर्यात्। तस्य विधिः। तत्र सन्निकृष्टमरणं

(विधवा होने पर अन्य से उत्पन्न पुत्र), (८) अपविद्ध (नाल सहित प्राप्त पुत्र), (९) दत्तक (गोद लिया हुआ पुत्र), (१०) क्रीत (खरीदा हुआ पुत्र), (११) कृत्रिम (पुत्र के गुणों से युक्त मान लिया गया पुत्र), (१२) स्वयं उपगत (खुद अपने यहाँ आकर रहनेवाला पुत्र), (१३) पारशव (शूद्र-स्त्री से उत्पन्न पुत्र)। इन तेरह प्रकार के पुत्रों में मुख्य औरस पुत्र है, उसके अभाव में नाती, उसके अभाव में क्रमश. बाद वाले अधिकारी होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

इन तेरह प्रकार के पुत्रों का लक्षण समाप्त। मरने के समय वैतरणी नदी पार होने के निमित्त बछड़े सहित काली गौ का दान करे [उसकी विधि बतलाते हैं] मृत्यु को नजदीक जानकर गोबर से लिपी हुई और कुश बिछाई हुई जमीन पर उत्तर की ओर शिर कर दाहिने हाथ में कुश लेकर वैतरणी नदी पार होने के लिए गौदान करे। तब पूर्व मुख आचमन करके देवता और ब्राह्मणों की पूजा कर, तीन कुशों को लेकर 'अद्य० अमुकगोत्रः०' इत्यादि

ज्ञात्वा। गोमयोपलिप्तायां भूमौ कुशैराच्छादितायां तदुपरि उत्तरशिरस्कां निदध्यात्। दक्षिणहस्तेन कुशं नीत्वा वैतरणीतरणाय गां दद्यात्। तत्र प्राङ्मुखः कृताऽऽचमनः देव-ब्राह्मणान् सम्पूज्य कुश-त्रयमादाय। अद्येत्यादि अमुकगोत्र अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः वैतरणीनदी-तरणकामः इमां कृष्णां गां स-वत्सां रुद्रदैवतां यथाऽलङ्कारसहिताम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। दक्षिणादानम्। कृतस्य कृष्णागोदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। उभयस्थाने ॐ स्वस्तीति पठेत्। प्रार्थना। उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वर्षति। दुर्गं तारयते यस्मात्तस्माद् वैतरणी स्मृता॥ यमद्वारे पथे घोरे घोरां वैतरणीं नदीम्। तर्तुकामः प्रयच्छामि कृष्णां वैतरणीं च गाम्॥

वाक्यों को पढ़े। (दक्षिणादान) 'कृतस्य०' यह वाक्य पढ़कर, दक्षिणा दे। ब्राह्मण दोनों स्थानों पर 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहे। (प्रार्थना) तब 'उष्णे वर्षति०' इन श्लोकों को पढ़े। तब पुत्र आदि अधिकारी मुर्दे को प्राण रहित जान कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलावें। (अब दाहक्रिया बतलाते हैं)—मुर्दे के शरीर को मिट्टी और जल से धोकर उस नहाये हुए शव के अङ्गों में सात सोने के टुकड़े रखे। उसका क्रम बतलाते हैं। १ मुँह में, २ कान में, २ नेत्र में, २ नाक में—इस प्रकार सातों छेदों में सोने के टुकड़ों को रखकर अथवा केवल मुख में रखे। नाखून, बाल और दाढ़ी-मूँछ बनवा दे, कपड़ा पहिनावे, जनेव

ततो पुत्राद्यधिकारी गतप्राणं शवं ज्ञात्वा दहेत्। तत्र दाहप्रक्रिया। ततो गतप्राणस्य मृत्तिका-तोयाभ्यां देहं प्रक्षाल्य स्नापितस्य सप्तकनकखण्डानि विन्यसेत्। तत्र क्रमः। एकं मुखे कर्णद्वये नेत्रद्वये नासापुटद्वये च सप्तसु छिद्रेषु प्रक्षिप्य, सुवर्णखण्डं केवलं मुखे क्षिपेदिति वा। नख-केश-श्मश्रु-वपनं वस्त्रं परिधत्ते ब्राह्मणस्य सोपवीतम्। सक्चन्दनादिभिर्विभूषितम्। तच्छरीरमाज्येनाऽभ्युक्ष्येति कात्यायनः। तत्र पुत्रादिभिः वपनं स्नानं वस्त्रं परिधार्य पवित्रधारणम्। ततो मृतकस्थानादारभ्य अस्थिसञ्चयनान्तं षट् पिण्डान् दद्यात्। स्थाने[1] द्वारे[2] चतुष्पथे[3] चितायां[4] शवहस्तके[5]। अस्थिसञ्चयने

बदले, माला-चन्दन आदि से विभूषित शरीर को घी से स्नान करावे, ब्राह्मण के लिये ऐसा कात्यायन का वचन है। तब पुत्रादि बाल बनवावें, नहाय, कपड़ा पहन कर पवित्र धारण करें। तब दाहकर्ता मृतकस्थान से लेकर अस्थिचयन तक ६ पिण्ड दे। १ पिण्डस्थान पर, १ द्वार पर, १ चौराहे पर, १ विश्राम स्थान पर, १ शव के हाथ में, १ चिताभूमि पर दे। यह मलिन नामवाला ६ पिण्ड पहला षोडश में कहा जाता है। 'अद्य०' आदि पढ़कर मृतक स्थान पर ॥ १ ॥ 'अद्य०'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि पढ़कर द्वार पर ॥ २ ॥ 'अद्य०' आदि पढ़कर चौराहे पर ॥३॥ 'अद्य०' आदि पढ़कर विश्राम स्थान पर ॥४॥

प्रेत० ६ भा०

षष्ठो दश पिण्डा दशाह्निकाः ॥ १ ॥ मलिनं षोडशं चैतत् प्रथमं परिकीर्तितम् । तत्र क्रमः । (स्थाने)–अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत भूमितुष्टयर्थं मृतकस्थाने शवो नाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ (ततो द्वारदेशे)–अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेत दूततुष्टयर्थं गृह-वास्त्वधिदेवतातुष्टयर्थं च द्वारदेशे पान्थनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ (चतुष्पथे)–अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत भूतकोटिपलायनकामः चत्वरे खेचरनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ३ ॥ (विश्रामस्थाने)–अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत विामकाले पिशाचादि-अविघ्नार्थकामः विश्रामे भूतनाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ४ ॥ (चितायाम्)–अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत मोक्षकामः चितायां दाहसाधनं नाम एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ५ ॥ (अस्थिसञ्चयनस्थाने)–अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेत मोक्षकामः अस्थिसञ्चयननिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ६ ॥ ततो नारायणनाम-

'अद्य०' आदि को पढ़कर चिता पर ॥ ५ ॥ 'अद्य०' आदि वाक्य से अस्थिसंचयन स्थान पर ॥ ६ ॥ तब नारायण का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh .

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम लेकर मुर्दे को उठा कर गङ्गा आदि अथवा पवित्र पृथिवी भाग पर ले जाकर चन्दन आदि उत्तम यज्ञीय काष्ठों से चिता रच कर, उसके ऊपर पुरुष का नीचे को मुँह, उत्तर की ओर शिर रखे और स्त्री का उतान देह और उत्तर की

स्मरणपूर्वकं शवमुत्थाय गङ्गादिनदीषु पवित्रभूभागे वा गत्वा चन्दनोत्तमादियज्ञीयकाष्ठैश्चितां रचयित्वा तस्योपरि पुरुषमधोमुखं उदक्शिरसं च निधाय। नारीं तूत्तानदेहामुत्तरशिरस्कां च स्थापयेत्। गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गङ्गां च यमुनां च सरिद्वराम्॥ कौशिकीं चन्द्रभागां च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा॥ वैष्णवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुरः सागरांस्तथा॥ एतानि तीर्थानि मनसा ध्यात्वा। पञ्चके मृतश्चेत् पञ्चकविधानम्। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितरमुकप्रेतस्य धनिष्ठादि-पञ्चकमरण-सूचितवंशारिष्ट-विनाशार्थं पञ्चकमरणविधिं करिष्ये। दर्भमयान् पञ्च पुत्तलान् कृत्वा यवपिष्टैरनुलिप्य ऊर्णासूत्रेण वेष्टयित्वा प्रेतोपरि न्यसेत्। प्रथमं शिरसि

ओर शिर रखे। इसके बाद गया आदि तीर्थों का मानसिक ध्यान करे। यदि पञ्चक में मृत्यु हुई हो तो पञ्चक विधि करे। 'अद्य०' आदि पढ़कर संकल्प करे। दर्भमय पाँच पुतला बनाकर, जौ के आटे में अनुलेपन करे, ऊन के सूत में लपेट कर, मृतक पर रखे। एक पुतला शिर पर, दूसरा दाहिनी कोख पर, तीसरा बाईं कोख पर, चौथा नाभि पर, पाँचवाँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पैरों के बीच में रखें। उसके बाद नाममन्त्रों—प्रेतवाहाय० ॥ १ ॥ प्रेतसखाय० ॥२॥ प्रेतपाय० ॥३॥ प्रेतभूमिपाय० ॥४॥ प्रेतहर्त्रे० ॥ ५ ॥ से घृत की आहूति दे। तब दक्षिण मुँह हो अग्नि लेकर, 'कृत्वा तु' इन मन्त्रों को पढ़कर, प्रदक्षिणा कर

द्वितीयं दक्षिणकुक्षौ। तृतीयं वामकुक्षौ। चतुर्थं नाभौ। पञ्चमं पादयोर्मध्ये न्यसेत्। तदुपरि नाममन्त्रैर्घृताहुतीर्दद्यात्। प्रेतवाहाय स्वाहा ॥ १ ॥ प्रेतसखाय स्वाहा ॥ २ ॥ प्रेतपाय स्वाहा ॥ ३ ॥ प्रेतभूमिपाय स्वाहा ॥ ४ ॥ प्रेतहर्त्रे स्वाहा ॥ ५ ॥ ततः दक्षिणाभिमुखो हुताशनं गृहीत्वा। कृत्वा तु दुष्करं कर्म जानता वाऽप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम् ॥ धर्माऽधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्याँल्लोकान् स गच्छतु ॥ इति मन्त्रमुदीर्य प्रदक्षिणं विधाय प्रज्वलदुल्मुकस्य शिरोदेशे दानम्। ततस्तृणकाष्ठादिषु घृतं परिक्षिप्य दग्ध्वा किञ्चिच्छेषयेत्। ततः प्रादेशमात्रं सप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणासप्तकं विधाय ॥ कुठारेणोल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं कृत्वा। क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं स गच्छत्विति प्रवाहः। इहैवाऽयमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं च ददतु प्रजानयत्स्वाहा (तूष्णीं वा) एकैकां

जलती आग को शिर स्थान में लगावे। तब तृण, काष्ठ आदि पर घी देकर जलावे। जब कुछ शेष बच जाय तो दस अङ्गुल की सात लकड़ी लेकर, सात प्रदक्षिणा कर, कुठार से जलती लकड़ी पर सात बार प्रहार कर, 'क्रव्याद०' मन्त्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़कर (या चुपचाप) एक-एक लकड़ी को अग्नि में छोड़े । दो वर्ष कँ भीतर मरे हुए को गन्ध-माला आदि से अलंकृत कर 'अहरह' इस यमगाथा को गाते हुए बान्धव लोग गाँव से बाहर पबित्र भूमि में खनकर गाड़ दें । उसका उदकदान न करें । प्रेत के दाह के बाद सब मुर्दे को छूनेवाले और मुर्दे के संग जाने वाले चिता के वाम पार्श्व से घूमकर जलाशय

काष्ठिकामग्नौ क्षिपेत् । अनतीतद्विवर्षप्रेतं गन्धमाल्यादिभिरलंकृत्य । अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशून् । वैवस्वतो न तृप्यति सुराप इव दुर्मतिः ।। इति यमगाथां गायन्तो बान्धवा ग्रामाद् बहिः शुचिदेशे निखनेयुः । तत्र नोदकदानादि । तत्र प्रेतदाहाऽनन्तरं सर्वे शवस्पृशः शवानुगमनकर्तारश्च चितावामावर्तेन परावृत्य व्यावर्त्य जलाशये सर्वे गच्छेयुः । सकृन्निमज्जेयुः । अङ्गं च न विघर्षेयुः । ततो द्विवासस आचम्य जले वा पाषाणपृष्ठे वा शुचितीरदेशे वा दक्षिणाग्रकुशत्रयोपरि वामहस्तान्वारब्ध-दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठ-तर्जनीमध्यमात्मक-पितृतीर्थेन द्विगुणभुग्नकुशत्रयेण प्रेतगोत्रनामनी उच्चार्य मृतं मनसा ध्यायन्तः प्रेताय सतिलजलाञ्जलिं दद्युः । ॐ अद्यामुकगोत्र-पितरमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इयं च जलदानक्रिया दशपुरुष-

में जाँय । एक गोता लगावें । अङ्ग न मले । तब दो कपड़ों के सहित आचमन कर जल में, या पत्थर पर या पवित्र तीर पर दक्षिणाग्र कुशत्रय के ऊपर बाँया हाथ लगा हुआ दाहिने हाथ की अँगूठा-तर्जनी-मध्यमा अंगुली के साथ पितृतीर्थ से तीन कुशा दोहरा लेकर, प्रेत का गोत्र नाम 'ॐ अद्यामुक०' उच्चारण कर, मृत व्यक्ति का मानसिक ध्यान करते हुए प्रेत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए तिल सहित जलाञ्जलि देवे। यह जलदानक्रिया दशपुरुष पर्यन्त करना चाहिए। दूसरे दिन से लेकर दश दिन पर्यन्त प्रातः जलदान करना और सायंकाल को पीपल के नजदीक 'सर्वतापो०' पढ़कर जल देना और 'अन्धकारं

पर्यन्तं कर्तव्या। द्वितीयदिनमारभ्य दशरात्रावच्छिन्न-प्रातःसायङ्काले पिप्पलसमीपे जलदीपदानम्। (तद्यथा)—सर्वतापोपशमनमध्व-श्रमविनाशनम्। प्रेततृप्तिकरं वारि पिब प्रेत! सुखी भव॥ अद्याऽमुगोत्राऽमुकप्रेत एष तद्गताध्व-तापश्रमनिवर्तका-ऽशौचान्तर्गत-प्रथमदिनेऽश्वत्थशाखावलम्बित-जलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति जलदानम्। अथ सायङ्काले दीप-दानम्। अन्धकारं महाघोरं रविर्यत्र न दृश्यते। तस्योपकरणार्थाय दीपोऽयं दीयते मया॥ ॐ अद्याऽशौचान्तर्गतप्रथमदिनेऽमुकगोत्रामुकप्रेत यममार्गानुसन्तरणघोरमिश्रान्धतमःसन्तरणकामः पिप्पलसमीपे एष दीपो मद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम्। अथ बान्धवैः सह तडागे गत्वा नद्यादौ वा गत्वा दशरात्रमात्मशुद्धयर्थं प्रत्यहं स्नानं कुर्यात्। एवं प्रत्यहं दशरात्रावच्छिन्नं सायंप्रातः कुर्यात्। क्रियामुपविशेत्। अलवणमेकवारमेकभुक्तं स्वयं पाकं कुर्यात्।

महाघोरं०' पढ़कर दीपक बालना। ओर बान्धवों के साथ बावली, नदी आदि में जाकर दशरात्र आत्मशुद्धि के निमित्त प्रतिदिन स्नान करे। इस प्रकार प्रतिदिन बिना नागा दोनों समय करे। जो क्रिया करे बिना नमक, एक बार स्वयं भोजन बनाकर खाये।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ पिण्डदानक्रिया कहते हैं। अन्य गोत्र हो, या सगोत्र हो, स्त्री हो, या पुरुष पहले दिन जिस चीज का पिण्डदान करे उसी वस्तु का बराबर दश दिन तक करना। चाहे वह सालि (जड़हन का चावल) हो, या सत्तू हो, या साग हो। षोडश श्राद्ध करना पुत्र का कर्तव्य है। रोज बराबर न कर सके तो १ ले, ३ रे, ५वें ७वें, ९वें, १०वें दिन

अथ पिण्डदानक्रिया

अन्यगोत्रः सगोत्रो वा नारी वा यदि वा पुमान्। प्रथमेऽहनि यो दद्यात् स दशाहं समापयेत्। शालिना सक्तुभिर्वाऽपि शाकैर्वाऽपि च निर्वपेत्। प्रथमेऽहनि यद्द्रव्यं तदेव स्याद्दशाह्निकम्॥ षोडश-श्राद्धानि तु पुत्रेणैव कर्तव्यानि, इति सिद्धम्। प्रथमे च तृतीये वा पञ्चमे सप्तमे तथा। नवमे दशमे चैव पिण्डदानं प्रकीर्तितम्॥ वृद्धगार्ग्यः—पतिः पत्नीसमायुक्तो दह्यत्येकहुताशने। पाकमेकं प्रकुर्वीत पिण्डं दद्यात् पृथक् पृथक्॥ यदि पुत्राद्यधिकारिणि विदेशस्थेऽन्येन दाहकर्त्रा पिण्डदाने कृतेऽपि पुत्रादिरपि पिण्डं दद्यात्। (अथाऽस्थिसञ्चयनम्।) चतुर्थे ब्राह्मणानां तु

पिण्डदान करे। वृद्ध गार्ग्य का वचन है कि—पति और पत्नी एक चिता पर दग्ध किये गये हों तो पाक एक बनाना और पिण्ड अलग-अलग देना। यदि पुत्र आदि अधिकारी परदेश हों और दूसरा दाहकर्ता हो तो पिण्डदान करने पर भी पुत्र आदि पिण्डदान करें।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अथ अस्थिसञ्चयनम्। चौथे दिन ब्राह्मण, पाँचवें दिन क्षत्रिय, नवें दिन वैश्य, दशवें दिन शूद्र देश-काल के अनुसार श्राद्ध करे। यहाँ श्राद्ध में अस्थिसञ्चय और एकोद्दिष्ट विधान ग्रहण करना। इस प्रकार अशौच के अंगस्पर्श के सम्बन्ध में भी ४ थे दिन ब्राह्मण का, छठे दिन क्षत्रिय का, ८वें दिन वैश्य का, १०वें दिन शूद्र का स्पर्श है। पहले दिन, तीसरे

पञ्चमेऽहनि भूभुजाम्। नवमे वैश्यजातीनां शूद्राणां दशमात् परे। कर्तव्यं तु नरैः श्राद्धं देश-कालविरोधतः॥ श्राद्धमत्राऽस्थिसञ्चयम् एकोद्दिष्टविधानकम्। एतच्च सम्पूर्णाऽशौचेषु दिनकथनम्। एवमाशौचिनामङ्गस्पर्शेऽपि। चतुर्थेऽहनि विप्रस्य षष्ठे वै क्षत्रियस्य तु। अष्टमे दशमे चैव स्पर्शः स्याद् वैश्य-शूद्रयोः॥ यत्तु—प्रथमेऽह्नि तृतीये वा सप्तमे नवमेऽपि वा। अस्थिसञ्चयनं कार्य्यं निजैस्तद्-गोत्रजैः सह॥ इति स्मृतिवाक्यम्। तद्ब्राह्मणादीनां चतुर्थादिदिनेष्वस्थिसञ्चयासम्भावनायां प्रथमादि-दिवसेष्वस्थिसञ्चयनविधायकम्। त्र्यहाशौचे तु—द्वितीयेऽह्नि। सद्यः शौचे तद्दिन एवाऽस्थि-सञ्चयः कर्तव्यः। असम्पूर्णाशौचान्तरेषु तृतीयभागोत्तरमस्थिसञ्चयोऽङ्गस्पर्शश्च कर्तव्य इति।

दिन, सातवें दिन, नवें दिन भी निज गोत्रज के साथ अस्थिसंचय करना, ऐसा स्मृति का वचन है। ब्राह्मण आदि को चौथे दिन अस्थिसंचय की सम्भावना हो तो प्रथम दिन करे। तीन दिन के अशौच में दूसरे दिन, एक रोज के अशौच में उसी रोज अस्थिसंचय करे। असम्पूर्ण अशौच के तीसरे भाग में अस्थिसंचय अंगस्पर्श करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ अस्थिसञ्चोयनप्रयगः। चौथे दिन स्नान कर ४ पिण्ड देकर श्राद्धस्थान को गोबर से या पंचगव्य से लिपवा कर, जलते अंगारे को घुमावे और गौरमृत्तिका से आच्छादन कर, सफेद सरसों और तिल बिखेरना। स्वयं पाक करे।

अथाऽस्थिसञ्चयनप्रयोगः

चतुर्थदिने स्नात्वा चतुर्थपिण्डं दत्वा श्राद्धदेशस्य गोमयोपलेपनं पञ्चगव्योपलेपनं च ज्वलदङ्गारभ्रमणं गौरमृत्तिकाऽऽच्छादनानि कारयित्वा। गौरसर्षपैस्तिलैश्च विकरणम्। स्वयं पाकमारभेत्। ततः सिद्धान्ने रक्षादीपं निधाय। नमो नमस्ते गोविन्द! पुराणपुरुषोत्तम!। इदं श्राद्धं हृषीकेश! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥ ॐ प्राच्यै नमः। ॐ अवाच्यै नमः। ॐ प्रतीच्यै नमः। ॐ उदीच्यै नमः। ॐ अन्तरिक्षाय नमः। ॐ भूम्यै नमः। इति दिग्-रक्षणं कुर्यात्। श्राद्धदेयानि वस्तून्यासाद्य। पूर्वाभिमुख उपविश्याऽऽचम्य। 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वे'ति आत्मानं श्राद्धसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। ततः त्रिकुश-तिल-जलान्यादाय। ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽस्थिसञ्चयननिमित्तकमेकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये। ततस्त्रिर्गायत्रीं जपित्वा। ॐ देवताभ्यः

तब सिद्धान्न होने पर रक्षादीप रखकर, 'नमो नमस्ते०' आदि मंत्र पढ़कर दिशाओं की रक्षा करे। श्राद्ध में देने योग्य वस्तु के पास जाकर, पूर्वमुख बैठ कर, आचमन करे, अपने ऊपर और श्राद्धसामग्री पर जल छिड़क कर तीन कुशा, तिल और जल ले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर 'अद्य०' पढ़े। तब तीन बार गायत्री जप कर 'ॐ देवताभ्यः' तीन बार पढ़े। तब अपसव्य हो मोटक, तिल, जल लेकर दक्षिण की ओर मुँह कर, सव्यजानु से 'अद्याऽमुक०' पढ़कर आसन पर, तिल बिखेर कर 'ॐ आयन्तु०' ऐसा मंत्र पढ़े।

पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥ इति त्रिः पठेत्। ततोऽपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय दक्षिणाभिमुखः सव्यं जान्वाच्य। अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाँ सि वेदिषदः, इति श्राद्धदेशे तिलान् विकीर्य। ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ इति मन्त्रं पठेत्। ततः पुटके कुशपत्रद्वयं प्रादेशमात्रं दक्षिणाग्रं धृत्वा। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥ इति पुटके जलं क्षिपेत्॥ ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा। इति तिलान् क्षिपेत्। गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्। तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा। तदुपरि

तब पुटक में दो कुशपत्र प्रादेशमात्र धरकर 'ॐ शन्नो०' ऐसा कह कर पुटक में जल छोड़े। 'ॐ तिलोऽसि०' पढ़ कर तिलों को छोड़े। गंध और पुष्प को चुपचाप छोड़े। तब अर्घपात्र बायें हाथ में लेकर पवित्र भोजनपात्र पर उत्तराग्र धरकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके ऊपर कुछ जल देकर 'ॐ या दिव्या०' यह मन्त्र पढ़कर मोटक आदि लेकर 'अद्य०' यह संकल्प पढ़कर पवित्र पर कुछ जल गिरावे। तब पवित्र आदि के सहित अर्घपात्र को अधोमुख करके 'प्रेतस्थानमसि' ऐसा कहकर आसन के बायें

किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा। ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्याऽअन्तरिक्षाऽउतपार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः शर्ठ स्योना सुहवा भवन्तु॥ इति पठित्वा, मोटकादीन्यादाय। ॐ अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयन-निमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति पवित्रोपरि जलमुत्सृजेत्। ततः पवित्रादिसहितमर्घपात्रमासनवामपार्श्वे प्रेतस्थानमसि, इत्यधोमुखं स्थापयेत्। ततः चटोपरि गन्धादि दत्वा मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयनमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ततो जलेन भोजनपात्रा-ऽऽसनयोश्चतुर्दिशं मण्डलं कृत्वा। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥ ततो घृत-तिल-जलयुतमन्नमादाय। ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।

बगल में रख दे। तदनन्तर चट के ऊपर चन्दन, पुष्प, धूप आदि चढ़ाकर हाथ में तिल, जल आदि लेकर 'अद्याऽमुकगोत्र०' यह संकल्पवाक्य पढ़े। तब 'यथाचक्रायुधो०' आदि मंत्र पढ़ता हुआ जल से भोजनपात्र और आसन के सहित चारों ओर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मण्डल करे। फिर घृत, तिल और जल युक्त अन्न लेकर, 'ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामि०' इस मंत्र से दक्षिण की ओर कुशा पर रख दे। इसके बाद अन्न से भरा हुआ ताम्रपात्र दोनों हाथों से उठावे और क्षणभर रुककर पितरों का ध्यान करता हुआ एक मनुष्य के खाने भर अन्न भोजनपात्र में परोसे। फिर दो दोना में घृत तथा जल लेकर रखे, दोनों हाथों से अन्न

इति कुशोपरि दक्षिणत उत्सृजेत्। ततो हस्ताभ्यां ताम्रपात्रमन्नपूर्णमादाय मनाक्स्थित्वा पितरं ध्यायन् पुरुषतृप्तिक्षममन्नं परिविष्यात्। पुटकद्वये घृतं जलं चोपनीय अन्नोपरि हस्तद्वयेन मधु दत्वा। ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त-मुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। ॐ मधु मधु मध्विति च जपेत्। ततो व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यां पात्रमा-लभ्य। ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदी-यम्। इति पठित्वा। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं कवि-

पर मधु डाले। साथ-साथ 'मधु व्वाता०' आदि मन्त्र पढ़ता रहे। मंत्रपाठ के अनन्तर तीन बार 'मधु मधु मधु' का जप करे। तब उल्टे हाथों से भोजनपात्र का स्पर्श करता हुआ 'ॐ पृथिवी ते पात्रं०' आदि मन्त्र पढ़े। तब 'इदमन्नं०' कहकर अन्न में 'इमा आपः' जल की तरफ, 'इदमाज्यं' घी की तरफ, 'ॐ इदं कविः' कह कर फिर अन्न की ओर दाहिने अँगूठा से संकेत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे। 'ॐ अपहताऽअसुरा०' यह मंत्र पढ़े। तिल भोजनपात्र पर छिड़के, बायें हाथ से भोजनपात्र का स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथ में मोटक, तिल, जल आदि लेकर 'ॐ अद्यामुकगोत्र०' यह संकल्प वाक्य पढ़कर मोटक आदि पृथ्वी पर रख दे। सव्य हो तीन बार गायत्रीमन्त्र 'ॐ मधु व्वाता०' इस ऋचा को पढ़े, और 'मधु मधु मधु' का भी जप करे। साथ

रिति पुनरन्ने। इति दक्षिणाङ्गुष्ठं निवेश्य। ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाँ ऽसि वेदिषदः। इत्यन्नोपरि तिलान् विकीर्य। वामहस्तेन पात्रमत्यजन् दक्षिणहस्तेन मोटकादीन्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रपितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत्। ततो गायत्रीं त्रिर्जपेत्। ॐ मधु व्वातेति तृचं मधु मधु मध्विति च जपेत्। अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु। इति च जपेत्। ततः कुशेषूपविश्य गायत्रीं त्रिर्जपेत्। मधु व्वातेति त्र्यृचं मधु मधु मध्विति च जपेत्। ततो रक्षोघ्नीसूक्तं जपेत्। ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ ऽइभेन।

ही 'अन्नहीनं क्रियाहीनं०' इस मन्त्र को भी जपे। तदनन्तर कुशाओं पर बैठकर फिर तीन बार गायत्री का जप करे। 'मधु व्वाता०' यह ऋचा और 'मधु मधु मधु' इसको भी जपे। तब 'ॐ कृणुष्वपाजः०' आदि पाँच रक्षोघ्नीसूक्तों का पाठ करे। पुनः 'उदीरितामवर०' इस मन्त्र को, 'सहस्रशीर्षा०' आदि पुरुषसूक्त के १६ मन्त्र, 'आशुः शिशान०' आदि १२ मन्त्र,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके अतिरिक्त और भी बहुत से पवित्र मन्त्रों का अपनी शक्ति अनुसार पाठ करे। इसी क्रम से 'नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष०' इस श्लोक का भी पाठकरे। तदनन्तर भोजनपात्र के पास की कुशाओं से ढकी भूमि को जल से सींचे और तिल, घृतयुक्त

तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणानो स्तानि ऽविद्धच रक्षस्तपिष्टैः ॥ १ ॥ तव कामास ऽआशुया पतन्त्य-नुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गा न सन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरेऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ२ ॥ ऽओषता-त्तिग्महेते। यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्धचास्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने अव स्थिरा तनुहि यातु जूना जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ इति रक्षोघ्नीसूक्तम्। ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः असुं ऽय ईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ इति पितृमन्त्रम्। पुरुषसूक्तम्–सहस्रशीर्षा १६ मन्त्रा। अतिरथम्। आशुः शिशान १२ मन्त्रान्। अन्यानि पवित्राणि यथाशक्ति च जपेत्। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे !। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति श्लोकं च पठेत्। तत उच्छिष्टसन्निधावास्तृतकुशत्रयीं भूमिं जलेन प्रोक्ष्य, तिल-घृत-सहितमन्नं

अन्न को जल से गीला करके 'ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा०' यह मन्त्र पढ़ता हुआकुशा पर अन्न रखे। अपसव्य होजाय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचमन, प्राणायाम करके भगवान् का स्मरण करे। यह करके फिर अपसव्य हो जाय। तब भोजनपात्र के समीप पिण्ड दान के निमित्त मिट्टी की वेदी के मध्य में एक बालिश्त नाप कर बायें हाथ से सटे हुए दाहिने हाथ से 'ॐ अपहता ऽअसुरा०' यह मन्त्र पढ़ता हुआ कुश के मूल भाग से एक रेखा खींचे। उस कुश की पिंजुली को उत्तर दिशा में फेंक दे। तब 'ये

जलेनाऽऽप्लाव्य। ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥ इति कुशोपरि अन्नं विकिरेत्। ततः सव्यम्। आचम्य, प्राणानायम्य, हरिं स्मृत्वा। अपसव्यम्॥ भोजनपात्रसमीपे पिण्डदानार्थं मृद्वेदिकाया मध्ये प्रादेशमात्रं परिमाय वामान्वारब्ध-दक्षिणहस्तेन। ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाँसि वेदिषद÷॥ इति कुशमूलेन रेखा-करणम्। दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत्। रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा। ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽसुराः सन्त÷ स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान्प्रणुदात्य-स्मात्॥ इत्यङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत्। ततो रेखोपरि छिन्नमूलान् कुशानास्तीर्य सव्यम्। 'ॐ

रूपाणि प्रतिमुञ्च-' इस मन्त्र को पढ़ता हुआ उन रेखाओं पर आग का अङ्गारा घुमाकर दक्षिण की ओर रख दे। तब जिनकी जड़ काट डाली गयी है, ऐसी कुशाओं को रेखा के ऊपर बिछा कर सव्य हो जाय, 'ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च०' इस मन्त्र को तीन बार जपे। फिर अपसव्य हो जाय। एक दोने में तिल, जल, चन्दन तथा पुष्प डालकर उसे बायें हाथ में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखे और दाहिने हाथ में मोटक आदि लेकर 'ॐ अद्यामुकगोत्र०' आदि पढ़ता हुआ कुशा पर थोड़ा सा अवनेजन जल डाले और थोड़ाजल आगे रख दे। तब घृत, मधु, तिल युक्त अन्न से पिण्ड बनावे। उसमें मधु और घृत लगाकर मोटक आदि लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' आदि संकल्प वाक्य पढ़कर, बायें हाथ से छुए हुए दाहिने हाथ से पिण्ड दे। तब वेदी पर बिछे

देवताभ्यः०' इति त्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्यम्। पुटके तिल-गन्ध-पुष्पाणि क्षिप्त्वा, पुटकं वामहस्ते कृत्वा, दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय। ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्ट-श्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति कुशोपरि अवनेजनजलं किञ्चिद् दद्यात्। किञ्चिदग्रे धारयेत्। ततो घृत-मधु-तिलयुक्तेनाऽन्नेन पिण्डं निर्माय मधुघृताभ्याम-भिघार्य मोटकादीन्यादाय। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति कुशोपरि वामान्वारब्धदक्षिणहस्तेन पिण्डं दद्यात्। तत आस्तृतदर्भमूले करं प्रोक्ष्य। सव्यं कृत्वा, आचम्य। अपसव्यम्। ॐ अत्र पितरो मादयस्व यथाभागमावृषायस्व। उत्तराभिमुखीभूय, श्वासं नियम्य, पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन्। अमी

कुशों में हाथ पोंछ कर सव्य हो जाय। आचमन करके फिर अपसव्य हो जाय। 'ॐ अत्र पितरो मादयस्व०' यह मंत्र पढ़ता हुआ उत्तर दिशा में मुख करके और श्वाँस रोक कर देदीप्यमान मूर्तिधारी पितर का ध्यान करता हुआ 'अमी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मदन्त पिता०' यह मन्त्र पढ़े। तब पूर्व में बचे अवनेजनपात्र तथा मोटक आदि को लेकर 'ॐ अद्यामुकगोत्र०' आदि वाक्य कहे। इसके बाद नीवी ढीली करके सव्य हो आचमन तथा हरिस्मरण करे। फिर अपसव्य होकर बायें हाथ से सूत्र उठा कर दाहिने हाथ में ले और 'एतत्ते पितर०' यह मन्त्र पढ़कर दोनों हाथों से पिण्ड के ऊपर सूत्र चढ़ावे। तब मोटक आदि

मदन्त पिता यथाभागमावृषायिषत ॥ ततः पूर्वदत्तावशिष्टाऽवनेजनपात्रमादाय मोटकादीनि चादाय। ॐ अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ततो नीवीं विस्रंस्य। ततः सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा। अपसव्यं कृत्वा। वामहस्तेन सूत्रमादाय दक्षिणहस्ते धृत्वा, उभाभ्यां हस्ताभ्यां 'ॐ एतत्ते पितर्वासः' इति पिण्डोपरि सूत्रं दद्यात्। मोटकादीन्यादाय। ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ततः पिण्डे गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूलानि दत्वा, पिण्डशेषाऽन्नं पिण्डसमीपे विकिरेत्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ सौमनस्यमस्तु। ॐ अक्षतं चाऽरिष्टमस्तु। इत्यन्नपात्रे दत्वा मोटकादीन्यादाय। अद्या-

हाथ में लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' यह संकल्प वाक्य पढ़े। इसके अनन्तर पिण्ड पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और ताम्बूल आदि चढ़ाकर बाकी बचे अन्न को पिण्ड के समीप में रखे। 'ॐ शिवा आपः सन्तु' 'ॐ सौमनस्यमस्तु' 'ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु' इन मंत्रों का उच्चारण करके भोजनपात्र पर रख दे, मोटक आदि लेकर 'अद्यामुक०' यह वाक्य पढ़ कर मोटक आदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमीन पर रख दे। तब सव्य होकर दक्षिण दिशा की ओर देखता हुआ 'ॐ अघोरः पिताऽस्तु' कह कर पिण्ड पर ऐसी जलधारा दे कि जिसका अग्र भाग पूर्व की तरफ रहे। तदनन्तर पूर्वाभिमुख हो हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हुआ 'गोत्रन्नो

ऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत्। सव्यं कृत्वा दक्षिणां दिशं पश्यन्। ॐ अघोरः पिताऽस्तु। इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्। ततः पूर्वाभिमुखः, ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन॥ एताः सत्याः आशिषः सन्तु। ततोऽपसव्यम्। पिण्डोपरि सपवित्रकुशान् दक्षिणाग्रमास्तीर्य्य। ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितरम्॥ इति कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात्। ततः पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत्। पिण्डाधारकुशानुल्मुल्कं च वह्नौ क्षिपेत्। अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य मोटका-

वर्द्धतां सन्तु०' यह वाक्य कहे। तब पवित्री समेत कुशाओं को दक्षिणाग्र करके पिण्ड पर रखकर 'ऊर्जं वहन्ती०' यह मन्त्र पढ़ता हुआ दक्षिण को अग्रभाग करके जलधारा दे। तब पिण्ड को सूँघ कर उठावे। उन कुशाओं को जिन पर पिण्ड रखा था और अंगारा जो कि रेखा पर घुमाकर दक्षिण में रखा है दोनों को अग्नि में डाल दे। उलट कर रखे हुए अर्घ-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पात्र को सीधा कर दे और मोटक, तिल, जल आदि लेकर 'अद्यामुकगोत्रस्य०' आदि संकल्प वाक्य पढ़ कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे। फिर सव्य हो जाय और 'ॐ देवताभ्यः०' इस मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर अपसव्य हो रक्षादीप को बुझाकर

दीन्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतदस्थिसञ्चयननिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। इति दक्षिणां दद्यात्। ततः सव्यं कृत्वा। 'ॐ देवताभ्यः०' इति त्रिर्जपेत्। अपसव्यम्। रक्षादीपं निर्वाप्य, हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य। सव्यमाचम्य। प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत्। अम्भसि वा क्षिपेत्। ततः पुत्रादि-ज्ञातिबन्धुमिलितस्नातः सुधौतवाससी परिधाय। ततो नानाविधफलमूलादिभिः स्वजात्यनुरूपैरष्टौ पात्राणि पूरयित्वा। गन्ध-पुष्प-धूप-दीपादि गृहीत्वा। श्मशानसमीपमागत्य कैश्चित्पुष्पैः कैश्चिद्भोजनैः कैश्चिद्धूपैः कैश्चिद्दीपैः कैश्चित्पानीयैः कैश्चिदक्षतैः सर्वाणि निवेदयेत्। कैश्चिन्निरहङ्कार-

हाथ पाँव धो डाले। फिर सव्य होकर आचमन करे। और 'प्रमादात् कुर्वतां' यह वाक्य पढ़ता हुआ श्राद्ध की सभी वस्तुएँ ब्राह्मण को दे दें, या जल में फेक दें। तदनन्तर पुत्र आदि भाई-बन्धुओं के साथ स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहने। तब अपनी जाति के अनुसार विविध प्रकार फल मूल आदि से आठ पात्रों को भर कर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, आदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामग्री लेकर श्मशान भूमि पर जाय। वहाँ कुछ लोग पुष्प, कुछ भोजन, कुछ धूप, कुछ दीप, कुछ माल्य, कुछ पानी और कुछ अक्षत यह सब उस भूमि को निवेदन करें। इसके बाद कुछ लोग निरहंकार भाव से चारों दिशाओं में जल आदि के चार पात्र निवेदन करें और प्रथम चिता के उत्तर द्वार के समीप बैठकर 'ॐ नमः क्रव्यादमुख्येभ्यो०' आदि वाक्य पढ़े।

युक्तैः समन्ततश्चतुर्दिक्षु चतुर्षु अन्नादिपात्रेषु निवेदितेषु। प्रथमं चितायाम् उत्तरद्वारसमीपे उपविश्य, ॐ नमः क्रव्यादमुख्येभ्यो देवेभ्य इति सर्वदा। येऽस्मिन् स्मशाने देवाः स्युर्भगवन्तः सनातनाः॥ तेऽस्मत्सकाशाद् गृह्णन्तु बलिमष्टाङ्गमक्षयम्। प्रेतस्याऽस्य शुभाँल्लोकान् प्रयच्छन्तु च शाश्वतान्। अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च ददतां वरम्॥ इति पठित्वा। ॐ एषोऽष्टाङ्गबलिः शङ्करादिदेवताभ्यो नमः, इत्येकं बलिं दत्वा, एवम् अपरद्वारेषु बलिं दद्यात्। तान् बलीन् क्षीरेणऽभ्युक्ष्य शङ्करादि-देवताः स्वीय-स्वीयस्थानं गच्छन्तु, इति देवताः विसृज्य। अवशिष्टक्षीरेण वाग्यतः चितास्थानान्यस्थीनि अभ्युक्ष्य प्रथमं शिरोऽस्थीनि शमीपलाशशाखाभ्यामुद्धृत्याऽऽज्येना-

तब 'ॐ एषोऽष्टांगबलिः०' यह मन्त्र पढ़कर एक बलि दे। इसी तरह और द्वारों पर भी बलि देनी चाहिए। तदनन्तर उन बलियों को दूध से स्नान कराकर 'शंकरादिदेवताः' यह वाक्य कह कर देवताओं का विसर्जन करे। बलि स्नान कराने पर भी जो दूध बचा हो उसे चिता की हड्डियों पर डाल दे। फिर शमी और पलाश की दो लकड़ियों से पहले मस्तक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करके सुगन्धित जल से सींचे। फिर अपसव्य होकर दाहिने हाथ के अँगूठे तथा कनिष्ठिका उँगली से उठावे। तब और-और अङ्गों की हड्डी बटोर कर उन्हें पंचगव्य तथा सुगन्धित जल से सींचे, तब उन हड्डियों को पलाश के दोने में रखे और रेशमी कपड़े से लपेट कर मिट्टी के नये बर्तन में रखकर बर्तन को ढाँक देवे। फिर उस बर्तन को जङ्गल में किसी वृक्ष की जड़ में अथवा

ऽभ्युदय गन्धवारिणा च सिक्त्वा कृताऽपसव्यो दक्षिणाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां गृहीत्वा ततोऽन्यानि अस्थीनि गृहीत्वा पञ्चगव्येन सुगन्धवारिणा च सिक्ता। पलाशपुटके निक्षिप्य क्षौमवस्त्रेण संवेष्ट्य मृण्मये नूतनभाण्डे साच्छादने निदध्यात्। तद्भाण्डमरण्ये वृक्षमूले वा पङ्क-शैवालयुतगर्ते वा निभृत निर्वासयेत्। चिताभस्मादितोये विनिःक्षिपेत्। गोमयाऽम्बुभिश्चितामूमिशुद्धिं विधाय पूर्ववच्चतुर्दिक्षु शङ्करादिदेवताभ्यो बलिं दद्यात्। तान् विसृज्य बल्यन्नमम्भसि क्षिपेत्। ततश्चितामूमेराच्छादनार्थं वृत्तः पुष्करकः पट्टको वा कारयितव्यः। (पुष्करकः = इष्टकानिर्मितं देवकुटकाकारं गृहम्) ततः चैलो बन्धुभिः सह नायात्। अथ कैश्चित्पुत्र-पौत्र-सहोदरादिभिर्गङ्गातीरमस्थीनि

कीचड़ और सेवार से युक्त किसी गढडे में चुपचाप रख दे। चिता की राखी आदि जल में फेंक दे। तब गोबर से उस जमीन को लिपवाकर चिता का भूमि शुद्ध करके और पहले की तरह चारों दिशाओं में शंकर आदि देवताओं को बलि दे। तब उन देवताओं का विसर्जन करे और बलि का अन्न जल में फेंक दे। तदनन्तर चिता की भूमि को ढाँकने के लिए उस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान पर वृक्ष लगा दे, देवालय के समान कोई घर बना दे, या चबूतरा ही बनाकर छोड़ दे। तब अपने बान्धवों के साथ कपड़ों सहित स्नान करे। कुछ लोगों का यह मत है कि पुत्र, पौत्र तथा भाई आदि के साथ उन हड्डियों को गंगा के तीर लेता जाय। वहाँ स्नान करे, फिर हड्डियों पर पञ्चगव्य डाले। तब सुवर्ण, मधु, घृत तथा तिल रख कर उन्हें मिट्टी के पात्र में डालकर दक्षिण ओर निहारता और 'ॐ नमोऽस्तु धर्माय०' यह वाक्य कहता हुआ जल में जाय और मृत व्यक्ति

प्रेत० २६

नीत्वा स्नात्वा तान्यस्थीनि पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य हिरण्य-मध्वाज्य-तिलैः संयोज्य मृत्पिण्डपुटे निधाय दक्षिणां दिशं पश्यन्। 'ॐ नमोऽस्तु धर्मायेति वदन् जले प्रविश्य, प्रेतो गतः स्वर्ग-कामो दक्षिणाभिमुखः 'स मे प्रीतः' इत्युक्त्वा गङ्गाम्भसि क्षिपेत्। ततः स्नात्वा उत्थाय सूर्यं पश्येत्। तत आचम्य। अद्य कृतैतदस्थिप्रक्षेपप्रतिष्ठार्थम् इदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। इति दक्षिणां दद्यात्। एवं कृते प्रेतपुरःस्थितस्य, स्वर्गे गतिः स्यात्तु महेन्द्रतुल्या। यावदस्थि मनुष्यस्य गङ्गातोयेषु मज्जति। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्ग-

का ध्यान किये हुए उसकी स्वर्गकामना करता हुआ 'स मे प्रीतः' कहकर गंगाजी में डाल दे। तब स्नान करे और खड़ा होकर सूर्य की ओर देखे। फिर आचमन करे और 'अद्य कृतैतदस्थि०' यह संकल्पवाक्य पढ़कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे। प्रेत का उत्तराधिकारी यदि प्रेत की हड्डियों को गंगाजी में डालता है तो प्रेत स्वर्गगामी होकर इन्द्र के समान हो जाता है। जितने वर्षों २६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक जिस मृत मनुष्य की हड्डी गंगाजी में डूबी रहती है, वह मनुष्य उतने ही हजार वर्षों तक स्वर्गलोक में पूजा जाता है। जिस धर्मात्मा की हड्डियाँ गंगाजी में पड़ जाती हैं, वह कभी भी ब्रह्मलोक से नहीं लौटता, सदा वहीं रहता है। गौडपादाचार्य कहते हैं कि—दस दिन के भीतर जिसकी हड्डियाँ गंगाजी में पहुँच जाती हैं तो जो फल गंगाजी में मरने का होता है वही फल गंगा में हड्डी फेंकने में भी होती है। ब्रह्मपुराण कहता है कि—कोई मनुष्य यदि मातृकुल तथा पितृकुल के अतिरिक्त और

लोके महीयते ॥ गङ्गातोये तु यो ऽथ प्लवते स्थिमकर्मणः। न तस्य पुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात् कथञ्चन ॥ गौडाः—दशाहाभ्यन्तरे यस्य गङ्गातोयेऽथ स्थिमज्जति। गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात् ॥ ब्रह्मपुराणे—मातुःकुलं पितृकुलं वर्जयित्वा नराधमः। अस्थीन्य-न्यकुलोत्थानि नीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ अथ पर्णशरदाहः। अथाऽऽचारान्निरग्नेरप्यस्थि-पर्णशरदाहः। दाह्यशरीरा ताभे तदमथ घृतेनाभ्यज्य वस्त्रेणाऽऽच्छाद्य दहेत्पूर्ववत्। अस्थ्यलाभे

किसी कुल की हड्डियाँ उठाता है तो वह चान्द्रायण व्रत करने पर शुद्ध होता है। अब पर्णशरदाह विधान बताते हैं। आचारानुसार निरग्निक याने जो अग्निहोत्री न हो उनका भी पर्णशरदाह किया जा सकता है। यदि दहन करने योग्य शरीर न प्राप्त हो सके, याने परदेश में कोई की मृत्यु हो और पुत्र आदि को शरीर न मिले, कोई फूँक दिये हो अथवा चेचक आदि से मृत्यु हुई हो तो गाड़ दिया जाय तो बाद में उसकी हड्डियों को निकाल कर घी से तर कराके और वस्त्र से लपेटकर पूर्वोक्त विधि से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलावे। यदि हड्डियाँ न मिल सकें तो तीन सौ आठ (३६०) पलाशपत्र से पुरुष बनाकर 'असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा' कहकर जला दे। पुरुष निर्माण करते समय पहले नारियल से सिर बनाकर दो सरपत से दोनों जंघायें बनावे। यह पुरुष मृग-चर्म पर बनाकर ऊन के सूत्र या पलाश के पत्तों से लपेटकर उस पुरुष का माथा जौ के पिसान से लपेटे और ऊपर से भी मृगचर्म

षष्ठ्यधिकपलाशपत्रशतत्रयेण पुरुषाकृतिं विन्यस्य। ॐ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा। इति दहेत्। प्रथमतः शिरो निवेश्य, शरखण्डद्वयेन जंघाद्वयं कृष्णसारचर्मोपरि ऊर्णासूत्रैर्ग्रथितैः पलाशपत्रैर्वृतैर्वाऽऽवेष्ट्य शिरः यवचूर्णेन विलिप्य कृष्णसारचर्मणाऽऽच्छाद्य पूर्ववद्दहेत् (तद्विन्यासप्रकारः) शिरस्यशीत्यर्द्धं देयाद् ग्रीवायां च दशैव तु। बाह्वोश्चैव शतं दद्यादङ्गुलीषु तथा दश॥ उरसि त्रिंशतं दद्याद् विंशतिं जानुजङ्घयोः। पादाङ्गुलीषु दश वै एतत् पत्रविकल्पनम्। एवं पर्णैर्दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्॥ तत्राऽशौचान्तपूर्वदिने सर्वेषां

ओढ़ाकर पूर्वोक्त विधि से जला दे। पुरुष के बनाने की विधि यह है—मस्तक में चालीस पत्र, गले में दश पत्र दोनों बाहुओं में सौ पत्र, उँगलियों में दश पत्र, छाती में तीस पत्र, पेट में बीस पत्र, लिङ्ग में चार पत्र, तीन-तीन दो अण्डकोशों में दोनों घुटनों में सौ पत्र, जानु तथा जंघा में तीस पत्र, और पैर की उँगलियों में दश पत्र देना चाहिए। इस तरह पर्णनिर्मित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

मनुष्य का दाह करने पर केवल तीन दिन का अशौच रहता है। जिस दिन अशौच समाप्त होने वाला हो उसके एक दिन पहले सभी बान्धव धोबी से अपने-अपने कपड़े धुला लें। फिर अशौच समाप्त होने वाले दिन सब घर लीप-पोतकर साफ करे। घर में जितने मिट्टी के बर्तन हों, उन्हें निकाल डाले। फिर सभी बान्धवों के साथ नदी तथा जला- भा०
प्रेत० शय पर जाकर स्नान करे। उसी रोज दसवाँ पिण्डदान करे। फिर जलाशय के तट पर केश, लोम और नखों को कटवाकर
२९

रजकद्वारा वस्त्रशुद्धिं कारयित्वा। अशौचान्तदिवसे गृहशुद्धिं कृत्वा मृण्मयभाण्डानि त्यक्त्वा स्नात्वा दशमं पिण्डं दत्त्वा बहिरुदकान्ते केश-लोम नखान् यथायोग्यं वापयित्वा तिलतैलेनाऽभ्यक्त्वा गौरसर्षपकल्केन शिरश्चोन्मृज्य स्नात्वा प्रेतस्पृष्टवासांसि नापिताय दद्यात्। अथाऽऽचम्य वाग्यतो वासो युग्महतं नवं शुद्धं पुरातनं वा युक्तमव्रणं परिधाय। अश्माविष्टो गां सुवर्णं गोरोचनं दधि-दूर्वा-सित-सर्षपान् ब्राह्मणाऽग्निं क्षत्रियो वाहनायुधौ वैश्यः प्रतोद-प्रग्रहौ शूद्रो

तिल का तेल लगावे और सफेद सरसों के उबटन से माथा मलकर, स्नान करे। प्रेत से स्पर्श किया हुआ कपड़ा नाई को दे दे। तब आचमन करके एक जोड़ा कपड़ा जो कि फटा न हो अर्थात् नया हो और नया न हो तो भी शुद्ध, जोड़ से रहित और छेदा न हो तो पुराना ही वस्त्र लेकर पहने। फिर श्राद्धकर्ता तथा उसके साथी क्षण भर पत्थर पर बैठें और गौ, सुवर्ण, २९
गोरोचन, दही, दूब, सफेद सरसों छूवें। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण अग्नि, क्षत्रिय वाहन तथा शस्त्र, वैश्य चाबुक और

पगहा तथा शूद्र छड़ी का स्पर्श कर मंगल वाक्यो का उच्चारण करता हुआ अथवा ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन कराके घर के भीतर जाय। इस दिन ब्राह्मण पञ्चगव्यपान करते है—यह रीति है। पराशर का मत है कि दसवें दिन गाँव से बाहर जल में स्नान करे। वहीं पर अपना कपड़ा त्याग दे और केश, दाढ़ी, मूँछ और नाखून वही कटवा डाले। उस दिन सामुद्र लवण या

यष्टिसंस्पृश्य मङ्गलानि सङ्कीर्तयन् ब्राह्मणान् स्वस्तिं वाचयित्वा गृहं प्रविशेत्। अत्र दिने ब्राह्मणाः पञ्चगव्यपानं कुर्वन्तीति समाचारः। दशमेऽहनि सम्प्राप्ते स्नानं कुर्याद् बहिर्जले। तत्र त्याज्यानि वासांसि केश-श्मश्रु-नखानि च॥ इति पराशरः। तत्र सामुद्रसैन्धवलवणानि यव-मुद्ग-कल्माष-गोक्षीर-दधि-घृतखण्डान्यश्नीयात्। मधुमांसस्त्रीवर्जिता भवेयुः। सपिंडा एकवारं भुञ्जीयुः। इति नियमाः।

अथ दशगात्रश्राद्धारम्भः। तत्रादौ पुत्राद्यधिकारिणो लगुडमादाय मृण्मये नूतनभाण्डेन जलमानीय ग्रामाद् हिर्देवतायतने गृहद्वारि शुचितीरे वा पिण्डदानादेशान्यां दिशि अग्निं प्रज्वाल्य

सेंधा नमक, यव, मूँग, उरदी, गौ का दूध, दही, घी, खाँड़ इत्यादि भोजन करे और मधु, मांस तथा स्त्री से पृथक्-पृथक् रहे। सपिण्ड के लोग एक बार भोजन करें। यह नियम कहा गया है। अब दशगात्र की विधि बताते हैं। उसमें सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि प्रेत के पुत्र आदि अधिकारी हाथ में दण्ड लिए मिट्टी के बर्तन में जल लेकर गाँव से बाहर किसी देवस्थान पर, घर के दरवाजे पर या किसी नदी के तट पर पिण्डदान देने का निश्चय करें। निश्चित स्थान की ईशान दिशा में आग जलावे। फिर दो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसर चावल धोकर अपने हाथ से खीर पकावे। फिर ऐसी जगह, जहाँ की जमीन दक्षिण की ओर ढालू हो, उसे गोबर से लिपवाकर सफेद मिट्टी से दक्षिण को ढालू वेदी बनावे। तब आचमन कर, अपसव्य हो दहिना घुटना मोड़कर दक्षिण की ओर

तण्डुलप्रसृतिद्वयं प्रक्षाल्य सुभृतं स्वयं पचेत्। ततो दक्षिणप्रवणे भूभागे गोमयोपलिप्ते गौर-मृत्तिकया पिण्डार्थं दक्षिणप्रवणं स्थानं निर्माय आचान्तः कृताऽपसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातित-वामजानुः पिण्डस्थानोपरि दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य पुटकादौ तिल-जल-गन्ध-पुष्पाणि प्रक्षिप्य तत्पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटक-तिल जलान्यादाय, ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथम-पिण्डस्थानेऽत्रावने निक्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति कुशोपरि अवनेजनं दद्यात्। ततस्तिल-घृत-मधुयुक्तं दुग्धसिक्तं तप्तमेव पिण्डमादाय मोटकतिल-जलानि चादाय, ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत एष शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति कुशोपरि अवनेजन स्थाने पिण्डं दद्यात्। ततः प्रत्यवनेजनम्। पूर्वदत्ताऽवशिष्टाऽवनेजनपात्रमादाय मोटक तिल-जलानि

मुख करके बैठे। वेदी पर दक्षिण को अग्रभाग करके तीन कुश बिछावे। दोने या कटोरे में तिल, जल, गन्ध, पुष्प डालकर बायें हाथ में वह पात्र तथा मोटक, तिल और जल लेकर, 'अद्यामुक गोत्र०' यह वाक्य पढ़कर वेदी पर बिछी हुई कुशाओं पर अवनेजन जल डाले। इसके बाद तिल, घृत और मधु से युक्त और दुग्ध से सिक्त गरम पिण्ड तथा मोटक, तिल और जल को हाथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

में लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' यह वाक्य पढ़कर वेदी पर उस जगह रखे जहाँ कि पहले अवनेजन जल डाला। तब पूर्व में अव नेजन देने से कुछ अवशिष्ट जलयुक्त पात्र तथा मोटक, तिल जल, लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' यह वाक्य पढ़कर पिण्ड पर जल डाल

चादाय अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति पिण्डोपरि दद्यात्। ततः प्रेतमुद्दिश्य तूष्णीम् एव गन्ध-पुष्प-खश-भृङ्गराजपत्र-राल-धू -दीप-ताम्बूल-पूगीफल-ऊर्णातन्तुमयबहुवस्त्राणि पिण्डे दद्यात्। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपि डे एतानि ऊर्णासूत्रोशीरचन्दनभृ राजपत्रराल धूपदीपादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम्। ततो यावद्वाष्पं निःसरति तावत् पिण्डाभिमुखस्तिष्ठेत्। ततोऽपसव्यादिनैव। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डे एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठ-ताम्। इत्येकं तिलतोयाञ्जलिं पिण्डोपरि दद्यात्। एवं पिण्डसमीपे एकं तिलतोयपूर्णपात्रं दद्यात्। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत पि डसमीपे एतत्तिलतोयपूर्णपात्र ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

दे। तत्पश्चात् प्रेत के निमित्त चुपचाप पिण्ड के ऊपर खस, चन्दन, भृङ्गराजपत्र, पुष्प, धूप, दीप, पान, सोपाड़ी और ऊन का सूत चढ़ाकर मोटक, तिल, जल हाथ में लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' आदि वाक्य दे। यह जबतक पिण्ड में से भाप निकलता रहे तब तक पिण्ड के सामने बैठा रहे। तदनन्तर अपसव्य ही से मोटकादि लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' आदि वाक्य पढ़े और प्रथम शिरः-

पूरक पिण्डके ऊपर एक तिलयोयांजलि देवे। इसी प्रकार 'अद्यामुकगोत्र०' आदि पढ़कर तिल, जल से भरा एक पूर्णपात्र पिण्ड के समीप रखे। इसके बाद पिण्ड के दोनों तरफ समीप में त्रिकाष्ठिका रखे और उस पर जल तथा दूध से भरा हुआ पात्र (दोनिया) रखे और 'श्मशानाऽनलदग्धोऽसि०' इस मन्त्र को पढ़कर पिण्ड पर देवे। सब करने के बाद सभी चीजें जल में डाल दे।

ततः पिण्डपार्श्वयोस्त्रिकाष्ठिकारोपणम्। तस्या उपरि जल-दुग्धपात्रं च निदध्यात्। श्मशानाऽनल-दग्धोऽसि परित्यक्ताऽसि बान्धवैः। इदं नीरम् इदं क्षीरमत्र स्नहि इदं पिब ते मया दीयते तवो-पतिष्ठताम्। इति पिण्डोपरि दद्यात्, पश्चाज्जले सर्वं क्षिपेत्। तत उपलिप्तायां भूमौ माल्यं पानीयं दीपं च निधाय। अद्याऽमुकगोत्र पितरमुकप्रेत इदं माल्यं परिधेहि ते मया दीयते तवोप-तिष्ठताम्। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत इदं पानीयं पिब ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। अद्यामुक-गोत्र पितरमुकप्रेत इमं दीपं पश्य ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति दद्यात्। अथवा सायङ्काले गृहद्वारि प्रेतमुद्दिश्य दशरात्रं त्रिरात्रं वा दद्यात्। तत्र क्रमः। रात्रौ गोमयोपलिप्तायां

फिर उस जमीन को गोबर से लीपकर वहाँ पर माला, जल और दिया जलाकर रखे। मोटक, तिल जल लेकर 'अद्यामुक-गोत्र०' यह वाक्य पढ़कर जल छोड़े। अथवा घर की दुआरी पर ही प्रेत के उद्देश्य से त्रिकाष्ठिका रखकर पहले की तरह संकल्प करे और कहे कि—'इदं स्नाहिइदं पिब इदं परिधेहि अनेन पश्य।' इसी प्रकार पूर्ववत् दूसरे दिन से लेकर दस दिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक पिण्ड देवें । दूसरे दिन पिण्ड देने के समय जो वाक्य कहे तो 'कर्णाक्षिनासिकापूरको द्वितीयः पिण्डः, द्वौ तिलतोयांजली, द्वे तिलतोयपात्रे ।' इस वाक्य को जोड़ लेवें । तृतीय दिन 'गलासभुजवक्षः पूरकः तृतीयः पिण्डः त्रयस्तिलतोयाञ्जलयः, भूमौ त्रिकाष्ठिकासमारोपित-मृण्मयपात्रद्वये जलं क्षीरं निधाय तत्समीपे माल्यं दीपं च निधाय । अद्याऽस्यां रात्रौ अमुकगोत्र पितरमुकप्रेताऽत्र स्नाहि इदं पिब इदं परिधेहि अनेन पश्य, इति निवेदयेत् । अनेनैव क्रमेण प्रथमपिण्डवद् द्वितीयादिदिवसेषु द्वितीयादिपिण्डं दद्यात् । तत्र विशेषः । द्वितीयदिने पिण्डदानवाक्ये कर्णाऽक्षिनासिकापूरको द्वितीयः पिण्डः, द्वौ तिलतोयाञ्जली, द्वे तिलतोयपूर्णपात्रे । तृतीयदिने गलांसभुजवक्षः पूरकः तृतीयः पिण्डस्त्रयस्तिलतोयाञ्जलयः, त्रीणि तिलतोयपूर्णपात्राणि । चतुर्थदिने नाभिलिङ्गगुदपूरकः चतुर्थः पिण्डश्चत्वारः तिलतोयाञ्जलयश्चत्वारि तिलतोयपूर्णपात्राणि । पञ्चमदिने जानुजंघापादपूरकः पञ्चमः पिण्डः, पञ्च तिलतोयाञ्जलयः पञ्च तिलतोयपूर्णपात्राणि । षष्ठदिने सर्वमर्मपूरकः षष्ठः पिण्डः, षटतिलतोयाञ्जलयः षटतिलतोयपूर्णपात्राणि । सप्तमदिने सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डः, सप्ततिलतोयाञ्जलयः, सप्ततिलतोयपूर्णपात्राणि । त्रीणि तिलतोयपूर्णपात्रणि ।' चतुर्थदिन 'नाभि-लिङ्ग-गुह्यपूरकः चतुर्थः पिण्डः, चत्वारस्तिलतोयाञ्जलयः, चत्वारि तिलतोयपूर्णपात्राणि ।' पांचवें दिन 'जानुजंघापादपूरकः पञ्चमः पिण्डः, पञ्चतिलतोयांजलयः, पञ्च तिलतोयपूर्णपात्राणि' । छठे दिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सर्वमर्मपूरकः षष्ठः पिण्डः, षट्तिलतोयाञ्जलयः, षट्तिल-तोयपूर्णपात्राणि ।' सातवें दिन–'सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डः, सप्त तिलतोयाञ्जलयः, सप्त तिलतोयपूर्णपात्राणि ।' आठवें दिन–'दन्तलोमादिपूरकः अष्टमः पिण्डः, अष्टतिलतोयाञ्जलयः, अष्टतिलतोयपूर्णपात्राँणि' । नवें दिन–'वीर्यपूरको नवमः पिण्डः, नव तिलतोयाञ्जलयः, नव तिलोयपूर्णपात्राणि' । दशवें

अष्टमदिने दन्तलोमादिपूरकेऽष्टमः पिण्डः, अष्टौ तिलतोयाञ्जलयः, अष्टौ तिलतोयपूर्णपात्राणि । नवमदिने वीर्यपूरको नवमः पिण्ड, नव तिलतोयाञ्जलयः, नव तिलतोयपूर्णपात्राणि । दशमदिने पूर्णत्वतृप्ततासुद्विपर्ययपूरको दशम पिण्डो देयः, दश तिलतोयाञ्जलयः, दश तिलतोयपूर्णपात्राणि, अन्यत्सर्वं समानम् । अनादिनिधनो देवः शङ्ख-चक्र-गदाधरः । अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ इति स्मृत्वा, कुलधर्मं समाचरेत् । कृतैतद्दशगात्रपिण्डकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशपललीह-निष्क्रयभूतं द्रव्यं ताम्रं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । इति दशगात्रप्रयोगः समाप्तः ।

दिन–'पूर्णत्वतृप्ततासुद्विपर्ययपूरको दशमः पिण्डः, दश तिलतोय-पूर्णपात्राणि'–इस वाक्य की योजना कर लेवे, इसके अतिरिक्त और सभी कार्य प्रथम पिण्ड में बताये क्रम के अनुसार ही होंगे । इसके बाद 'अनादिनिधनो देवः०' इस श्लोक को कहकर भगवान् का स्मरण करे । और अपने कुल के अनुसार व्यवहार करे । 'अद्यामुक०' इत्यादि कहकर ब्राह्मण को दस पल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोह का दान दक्षिणा में दे। इस प्रकार दशगात्र की विधि समाप्त हुई।

अब एकादशाह के रोज प्रथम मध्यषोडशी को कहते हैं। इसका प्रमाण गरुडपुराण के बारहवें अध्याय में है, वह

अथैकादशाहे मध्यषोडशीप्रारम्भः

तत्र प्रमाणं गरुडपुराणे द्वादशाऽध्याये। प्रथमं विष्णवे दद्याद् द्वितीयं श्रीशिवाय च। याम्याय परिवाराय तृतीयं पिण्डमुत्सृजेत् ॥ १ ॥ चतुर्थं सोमराजाय हव्यवाहाय पञ्चमम्। कव्यवाहाय षष्ठं च दद्यात् कालाय सप्तमम् ॥ २ ॥ रुद्राय चाऽष्टमं दद्यान्नवमं पुरुषाय च। प्रेताय दशमं चैवैकादशं विष्णवे नमः ॥ ३ ॥ द्वादशं ब्रह्मणे दद्याद्विष्णवे च त्रयोदशम्। चतुर्दशं शिवायैव यमाय दशपञ्चकम् ॥ ४ ॥ दद्यात्तत्पुरुषायैव पिण्डं षोडशकं खग!। मध्यं षोडशकं प्राहुरेतत्तत्त्वविदो जनाः ॥ ५ ॥ द्वादश प्रतिमासेषु पाक्षिकं च त्रिपाक्षिकम्। न्यूनषाण्मासिकं पिण्डं दद्यान्न्यूनाब्दिकं तथा ॥ ६ ॥ उत्तमं षोडशं चैतन्मया ते परिकीर्तितम्। श्रपयित्वा चरुं तार्क्ष्य! कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ ७ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाऽष्टौ श्राद्धं प्रेतत्वनाशनम्। यस्य जातं विधानेन स भवेत् पितृपंक्तिभाक् ॥ ८ ॥ पितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं कारयेत् षोडशत्रयम्। एतच्छ्राद्ध-

मूल में १० श्लोक पहिले लिखकर तब प्रयोग आरम्भ किया है। प्रयोग का क्रम यह है कि—स्नान करके शुद्ध और नई सफेद धोती, अंगोछा धारण कर अथवा धोबी के यहाँ धोया वस्त्र फटा सीया हुआ न हो ऐसा धारण कर गोबर से लिपे हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमि में आवे, पूर्व मुंह हो अपने आसन पर बैठकर पवित्री पहिने, आचमन तथा प्राणायाम करे, 'अपवित्रः पवित्रो वा०' इसको पढ़कर श्राद्धकी सामग्री पर और अपने ऊपर जल छिड़के और तिल्लीके तेलका दीया जलाकर दक्षिण तरफ रखे,

विहीनश्चेत् प्रेतो भवति सुस्थिरम् ॥ ९ ॥ यावन्न दीयते श्राद्धं षोडशत्रयसंज्ञकम् । स्वदत्तं परदत्तं च तावन्नैवोपतिष्ठति ॥ १० ॥ अथ प्रयोगः । आचम्य, प्राणानायम्य । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इत्यात्मानं श्राद्धसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य । रक्षादीपं निधाय । ततो वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाऽऽच्छाद्य । ॐ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराणपुरुषोत्तम ! । इदं श्राद्धं हृषीकेष ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ ॐ प्राच्यै नमः । ॐ अवाच्यै नमः । ॐ प्रतीच्यै नमः । ॐ उदीच्यै नमः । ॐ अन्तरिक्षाय नमः । ॐ भूम्यै नमः । इति पूर्वादिदिक्षु विकिरेत्, नीवीं बद्ध्वा यव-पुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः, इति त्रि सम्पूज्य । सङ्कल्पः । ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि प्रेतत्वविमुक्तहेतुकमध्यषोडश्यां विष्ण्वादितत्पुरुषपर्यन्तान् षोडशश्राद्धानि एक-

बायें हाथमें पीली या सफेद सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढाँककर, 'ॐ नमो नमस्ते०' इस श्लोकको पढ़कर दाहिने हाथसे पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर चारों दिशामें फेंकनेके बाद नीवी बाँधे, यव फूल लेकर तीन दफे भूमिपर 'श्राद्धभूम्यै नमः'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहकर छोड़े। त्रिकुश यव जल लेकर संकल्प करे। तीन बार गायत्री मन्त्रको जपे और 'देवताभ्यः०' इस मन्त्रको भी तीन

तन्त्रेणाऽहं करिष्ये । त्रिर्गायत्रीं जपित्वा । ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् । दक्षिणाभिमुखः, सव्येनैव पश्चिमत आरभ्य पूर्वान्ताः षोडशाऽऽशानानि दद्यात् । तद्यथा । त्रिकुश-यवजलान्यादाय, अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णोरिदमासनं ते नमः ॥ १ ॥ 'ॐ यवोऽसी'ति यवान् । अपसव्येन 'ॐ अपहते'ति तिलान् श्राद्धदेशे विकिरेत् । एवं शिवमिदमासनं ते नमः ॥ २ ॥ याम्य सपरिवारमिदमासनं ते नमः ॥ ३ ॥ सोमराज इदमासनं ते नमः ॥ ४ ॥ हव्यवाह इदमासनं ते नमः ॥ ५ ॥ कव्यवाह इदमासनं ते नमः ॥ ६ ॥ काल इदमासनं ते नमः ॥ ७ ॥ रुद्र इदमासनं ते नमः ॥ ८ ॥ पुरुष इदमासनं ते नमः ॥ ९ ॥ अपसव्यम् । मोटक-तिल-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडश-श्राद्धान्तर्गतप्रेत इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् । अद्याऽमुकगोत्रस्य

बार पढ़े। दक्षिण मुख होकर सव्य ही से पश्चिमसे पूरबतक सोलह आसन बिछावे और उसपर क्रमसे तीन-तीन कुशा रखे। त्रिकुश यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' कहके विष्णुको आसन देवे। इसी प्रकार मूलमें लिखे हुए नामोंसे नव आसन देवे,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सव्य होकर दसवाँ, अपसव्यसे ग्यारहवेंसे पन्द्रहतक, सव्यसे तथा सोलहवाँ अपसव्यसे देवे । इसके बाद सव्य-अपसव्य क्रमसे

प्रे पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णोरिदमासनं ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मन्निदमासनं ते नमः ॥ १२ ॥ विष्णोरिदमासनं तें नमः ॥ १३ ॥ शिव इदमासनं ते नमः ॥ १४ ॥ १६ यम इदमासनं तें नमः ॥ १५ ॥ अपसव्यम् । मोटक-तिल-जलान्यादाय । तत्पुरुष इद-मासनं तें मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ सव्यम् । ततो भोजनपात्रस्याऽग्रे षोडश-पुटकानि धृत्वा, नवसु पुटकेषु दक्षिणाग्रपवित्राणि धृत्वा दशमपुटके अपसव्येन पवित्रं धृत्वा पुनः सव्येन पञ्चसु पुटकेषु अपसव्येन षोडशके पुटके पवित्रं धृत्वा । अपसव्येन नवसु पटकेषु 'ॐ शन्नो देवीरि'ति जलं क्षिपेत् । अपसव्येन दशमपुटके । सव्येन पञ्चसु पुटकेषु । अप-सव्येन षोडशके पुटके 'ॐ शन्नो देवीरि'ति जलं क्षिपेत् । सव्येन नवसु पुटकेषु 'ॐ यवोऽसि यवया ऽस्मद्वेषो यवयारातीरि' ति यवान् । अपसव्येन दशमपुटके 'ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा ॥' इति तिलान् क्षिपेत् ।

भा० ३० ११

१६ दोनियाँ १६ हों भोजनपात्रके समीपमें रखे, पूर्ववत् १६ दोनियाँमें दक्षिणको अग्र करके पवित्री रखे 'शन्नो देवि०' इस मन्त्रको पढ़कर, १६ हों पुटकमें जल छोड़कर 'ॐ यवोऽसि०' इस मन्त्रसे सव्यसे नवेंमें यव, अपसव्यसे दशवेंमें तिल, सव्यसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्यारहवेंसे पन्द्रहवेंतक पुटकमें यव, सोलहवेंमें अपसव्यसे तिल इसीप्रकार सोलहों पुटकमें सव्य-अपसव्यसे चुपचाप चन्दन फूल छोड़े। सव्य होकर प्रथम अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे पवित्री भोजनपात्रपर उत्तरको अग्र करके रखे। उस पवि-

पुनः सव्येन पञ्चसु पुटकेषु 'ॐ यवोऽसी'ति यवान्। अपसव्येन षोडशके पुटके 'ॐ तिलोऽसी'-ति तिलान् क्षिपेत्। सव्याऽपसव्येन यथाक्रमेण गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्। प्रथमार्घपात्रं गृहीत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा। दक्षिणहस्तेनाऽर्घपात्रमाच्छाद्य ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः सꣳस्यो ना सुहवा भवन्तु॥ त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धातर्गत--प्रथमविष्णोरेष हस्तार्घस्ते नमः। इत्यर्घपात्रं स-पवित्रकं दक्षिणपार्श्वे उत्तानमेव धारयेत्। एवं शिवाय २, याम्याय सपरिवाराय ३, सोमराजाय ४, हव्यवाहाय ५, कव्यवाहाय ६, कालाय ७, रुद्राय ८, पुरुषाय ९ दद्यात्। अप-

त्रीपर अर्घपात्रके अतिरिक्त किंचित् जल देवे, तब दाहिने हाथसे अर्घपात्रको ढँककर 'या दिव्या०' इस मन्त्रको पढ़े। तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र०' इत्यादि वाक्यसे अर्घका जल पवित्रीपर देवे, वह पवित्री उठाकर अर्घके सहित आसनके दाहिने तरफ 'विष्णोः स्थानमसि' कहकर उत्तान रख देवे (कुछ लोग न्युब्ज यानी अधोमुख रखते हैं, अधोमुख जहाँ कहा है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

वहाँपर बायें तरफ रखना। वास्तवमें देवताका दाहिने, पितृका बायें रखे) इसी प्रकार सव्य-अपसव्यसे मूलमें लिखे हुए नाम, से १५हों स्थानमें देवे फिर हाथमें जल लेकर सव्यसे आरंभ करके अपसव्यसे १६ हों आसन और भोजनपात्रके चारोंतरफ जल

सव्यं मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडश्राद्धान्तर्गत-प्रेत एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। एवं त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। विष्णोः ११, ब्रह्म १२, विष्णु १३, शिव १४, यम १५, अपसव्येन मोटकादीन्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य मध्य० प्रेत एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ सव्याऽपसव्येन सर्वेषु भोजनपात्रसहितासनेषु चतुष्कोणं मण्डलं 'यथा चक्रायुधे'ति कुर्यात्। ततः श्राद्धीयान्नाऽग्रभागं घृत-व्यञ्जन-तिलयुक्तं पुटकादौ कृत्वा। ॐ इदमन्नम् एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः, इति कुशोपरि दक्षिणतः उत्सृजेत्। ताम्रपात्रादिस्थितमन्नं हस्ताभ्यामादाय सव्याऽपसव्याभ्यां षोडशभोजनपात्रेषु परिवेषयेत्। तत्र पुटकयोः घृतं जलं षोडशस्थानेषूपनीय। हस्तद्वयेन सव्याऽपसव्याभ्यामन्नोपरि मधु दत्वा। ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥

घुमावे। 'यथा चक्रायुधो०' इस श्लोकसे श्राद्धके वास्ते जो अन्न पकाया है उस अन्नके ऊपरका भाग निकालकर उसमें घी तिल मधु मिलाकर दोनियाँमें रखे। 'ॐ इदमन्नं' कहकर कुशके ऊपर दक्षिणके तरफ रखे। बाद ताँबेके बरतनमें अन्न लेकर दोनों

हाथसे सव्य-अपसव्यसे सोलहों जगह परोसे, व अन्नपर दोनों हाथसे 'मधु व्वाता०' इस मन्त्रको कहते हुए मधु देवे और 'मधु मधु मधु' ऐसा कहे। आगे सव्य-अपसव्यसे दोनों हाथसे भोजन पात्रको स्पर्श करके 'पृथिवी ते पात्रं—इदं विष्णु०'

ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ २ ॥ मधुमान्नो वनस्पति-र्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ३ ॥ मधु मधु मध्विति च जपेत्। ततः सव्याऽसव्याभ्याम् उत्तानव्यस्तहस्ताभ्यां च अन्नपात्रमालभ्य। ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते ऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्णहव्य (कव्य)मिदं रक्ष मदीयम्। इति पठित्वा। वामेन पाणिना पात्रमत्यजन् दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेन इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् इदं हव्यं (इदं कव्यं) पुनरन्ने। सव्याऽपसव्याभ्याम् अन्नपात्रेषु ॐ यवोऽसीति यवान्, ॐ अपहतेति तिलान् विकिरेत्। सव्यम्। त्रिकुश-यव-जलान्यादाय, अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णोरिदमन्नं सोपकरणं ते नमः। एवं श्रीशिव २, यमसपरिवार ३, सोमराज ४, हव्यवाह ५,

इत्यादि पढ़े। बाँया हाथ भोजनपात्रमें लगाये हुये दाहिने हाथके अँगूठेसे अन्न जल घी फिर अन्नको छुवे। सव्य-अपसव्यसे अन्नपात्रों पर 'ॐ यवोऽसि०' इस मन्त्रसे यव, 'अपहता०' इस मन्त्र से तिल छोड़े, सव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

'अद्यामुकगोत्र०' कहकर अन्नका त्याग करे। इसी प्रकारसे पन्द्रहों जगह सव्य-अपसव्यसे करे, सव्य होकर तीन दफे गायत्री

कव्यवाह ६, काल ७, रुद्र ८, पुरुष ९। अपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽमुक-गोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेत इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यं त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडश-श्राद्धान्तर्गतविष्णोः इदमन्नं सोपकरणं ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्माणे १२, विष्णवे १३, शिवाय १४, यमाय १५। अपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुष इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ सव्यम्। ततो गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। ॐ मधु वाता० ३। मधु मधु मध्विति च जपेत्। अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु। ततः कुशेषीपविश्य। पुनर्गायत्रीं ३ मधु वाता० ३। मधु मधु मध्विति च जपेत्। ॐ कृष्णुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं य्याहि राजे-वामवाँ २॥ ऽइभेन। तृष्वीमनुप्रसितिन्द्रूणा नोस्तासि विद्धचरक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव

पढ़े, 'मधु व्वाता०' इस मन्त्रको तीन दफे पढ़े 'मधु मधु मधु०' ऐसा कहे, 'अन्नहीनं' इस श्लोकको पढ़े। उसके बाद कुशा पर बैठकर फिर पहलेकी तरह गायत्री तथा 'मधु व्वाता', तीन बार पढ़े, 'मधु मधु मधु' ऐसा कहें, 'कृणुष्व पाजः.' यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँच मन्त्र तथा रक्षोघ्नीसूक्तको पढ़े, अपसव्यसे 'उदीरता' इस मन्त्रसे जमीन पर तिल्ली छिड़के। सव्य होकर 'सहस्रशीर्षा'

ब्भ्रमास ऽआशु या पतन्त्यनुस्पृशधृषता शोशुचानः । तपूꣳष्यग्ने जुह्वापतङ्गा न सन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः । यो नो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ने ष्ठिठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ २ ॥ ऽओषतात्तिग्ममहेते । यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्ध्याद्ध्यस्म्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने । अव स्थिरा तनुहि यातु जूनाञ्जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥ ५ ॥ इति रक्षोघ्नमन्त्रान् जपेत्। अपसव्यम्, भूमौ तिलान् विकीर्य। ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुँय ऽईयूरवृका ऽऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ १ ॥ सव्यम् । 'ॐ सहस्रशीर्षे'ति पुरुषसूक्तस्य १६ मन्त्रान्। ॐ आशुः शिशान० १२ मन्त्रान्नप्रतिरथम् । नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे !। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥ इति पठेत्। अपसव्यम्। उच्छिष्टसन्निधावास्तृतकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य, पुटके घृत-मधु-तिलयुतमन्नं कृत्वा वारिणाऽऽप्लाव्य। ॐ अनग्नि-

यह ११ मन्त्र पुरुष सूक्त पढ़े और 'आशुः शिशान.' यह १२ मन्त्र अप्रतिरथ सूक्त पढ़े, 'नमस्तुभ्यं' इस श्लोकको पढ़े, अपसव्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

होके भोजनपात्रके समीपमें तीन कुशासे जल छिड़ककर कुशा रखे, एक दोनियाँमें अन्न, घी सहित तिल, जल मिलाकर ले 'अनग्निदग्धाः' इस मन्त्र से उस कुशे पर अन्न रख देवे, सव्य होकर आचमन करे, भगवान् का ध्यान करे, पश्चात् सव्य

दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम्॥ तदन्नं कुशोपरि विकिरेत्। ततः सव्यं कृत्वा आचम्य हरिं स्मृत्वा। ततः सव्याऽपसव्येन षोडषवेदिकां निर्माय। तन्मध्ये दर्भपिञ्जुल्या प्रादेशमात्रां रेखां षोडशस्थानेषु सव्याऽपसव्येन 'अपहते'ति कुर्यात्। ॐ अपहता ऽसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः। दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत्। ततः षोडशरेखोपरि सव्याऽपसव्येन अङ्गारं 'ये रूपाणी'ति भ्रामयेत्। ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्च माना ऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान्प्रणुदात्यस्मात्॥ अङ्गारं दक्षिणतः त्यजेत्। ततः सव्याऽपसव्येन रेखोपरि उपमूलसकुल्लूनकुशत्रयं षोडशवेदिकायामा-स्तृणुयात्। सव्यम्। ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै

अपसव्यसे सोलह वेदी बनावे, उन सोलहों वेदियों पर कुशा लेकर दोनों हाथसे दस अङ्गुलकी रेखा 'अहपता' इस मन्त्रसे दक्षिणाग्र करे, कुशा उत्तरकी तरफ फेंके, सोलह वेदियों पर 'ये रूपाणि' इस मन्त्रसे आग घुमाकर दक्षिणकी तरफ रखे, सव्य-अपसव्यसे रेखाओंपर मूलके सहित किंचित् जड़ कटा हुआ तीन-तीन कुशा बिछावे। सव्य होकर 'देवताभ्यः' इस मन्त्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को तीन दफे पढ़े सव्य अपसव्यसे सोलहों दोनियाँमें क्रमसे नवेंमें यव जल चन्दन फूल दशवें में तिल जल चन्दन फूल ग्यारहवेंसे पन्द्रहवें तक यव जल चन्दन फूल सोलहवें में अपसव्यसे तिल जल फूल छोड़े, सव्य होकर तीन कुशा यव जल

नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत्। ततः सव्याऽपसव्येन षोडशपुटकेषु नवसु यवजल, दशसु तिल-जल-गन्ध-पुष्पाणि एकादशादारभ्य पञ्चदशान्तं यव-जल-गन्ध-पुष्पाणि, षोडशसु तिल-जल-गन्ध-पुष्पाणि कृत्वा। सव्यम्। त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते नमः। एवं शिव २, याम्य-सपरिवार ३, सोमराज ४, हव्यवाह ५, कव्यवाह ६, काल ७, रुद्र ८, पुरुष ९। अपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रेतपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठाम् ॥ १० ॥ सव्यम्। त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते नमः ॥११॥ एवं ब्रह्मं १२, विष्णुं० १३, शिवं० १४, यमं० १५। अपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य

लेकर 'अद्याऽमुकगोत्र' इस वाक्यसे वेदीकी कुशापर दोनियाका आधा जल गिरावे आधा बचाकर वेदीके समीपमें रखे, इसी तरहसे सव्य-अपसव्यसे पन्द्रहों स्थानमें देवे। उसके बाद सव्य-अपसव्यसे १४ पिंड यव घृत मधुके सहित अन्नका बनावे और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो पिण्ड तिल घृत मधुके सहित अन्नका बनावे शहद घी पिण्डके ऊपर लगावे सव्य होकर त्रिकुश यव जल लेकर 'अद्या-
पितुरमुप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुषपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते
तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ ततश्चतुर्दशपिण्डान् यव - घृत-मधुयुतानन्नेन, द्वे तिल - घृत - मधु--
युतान्नेन निर्माय, मधु-घृताभ्यामभिघार्य । सव्यम् । त्रिकुशयवजलान्यादाय । अद्यामुक-
गोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णोरेष पिण्डस्ते नमः । एवं श्रीशिव० २,
याम्यसपपिवार० ३, सोमराज० ४, हव्यवाह० ५, कव्यवाह० ६, काल० ७, रुद्र० ८ पुरुष० ९ ।
अपसव्यम् । मोटकतिलजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्त-
र्गत-प्रेत एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यं त्रिकुश-यव-जलान्यादाय
अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णोरेष पिण्डस्ते नमः ॥ ११ ॥ एवं
ब्रह्माणं १२, विष्णुं० १३, शिवं १४, यमं० १५ ॥ अपसव्यम् । मोटकतिलजलान्यादाय ।
अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुष एष पिण्डस्ते मया दीयते तवो-
पतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ ततः सव्याऽपसव्येन कुशमूले करं प्रोक्ष्य । सव्यम् । आचम्य हरिं

मुकगोत्र' इत्यादि कहकर पिंड देवे । इसी तरहसे शिव आदिको सव्य-अपसव्यसे देवे इसके बाद सव्य-अपसव्य से पिंड

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नीचे कुशाके जड़में हाथ पोंछे। सव्य होकर आचमन करे भगवान्का ध्यान करे तिसके बाद सव्य-अपसव्य से उत्तरकी

स्मृत्वा। ततः सव्याऽपसव्येन उत्तराभिमुखो भूत्वा श्वासं नियम्य, दक्षिणतस्त्यजेत्। ॐ अत्रा पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम्। अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत्। इति पठेत्। ततः सव्यं त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्याऽमुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडश-श्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डेऽत्रा प्रत्यवने निक्ष्व ते नमः॥ १॥ एवं श्रीशिवपिण्डे० २, याम्यसपरि-वारपिण्डे० ३, सोमराजपिण्डे ४, हव्यवाहपिंडे० ५, काव्यवाहपिंडे ६, कालपिण्डे० ७, रुद्रपिंडे० ८, पुरुषपिंडे ९। अपसव्यम्। मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रास्य पितुर-मुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रेतपिंडेऽत्रा प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ १०॥ सव्यम्। त्रिकुशयवजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिंडेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते नमः॥ ११॥ एवं ब्रह्मपिंडे० १२, विष्णुपिंडे० १३, शिव-पिंडे० १४, यमपिंडे० १५। अपसव्यम्। मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य

तरफ बाँयेसे श्वाँस खींचकर दक्षिणकी तरफ छोड़े 'अत्र पितर.' इस मन्त्रसे इसके बाद सव्य होकर तीन कुशा यव जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र' इस वाक्यको कहकर विष्णुपिण्ड पर प्रत्यवनेजन जल जो कि अवनेजन का आधा बचा हुआ है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सो देना, इसी प्रकार से सव्य-अपसव्य से पन्द्रहों पिण्ड पर देना, सव्य होकर आचमन करे और सव्यसे दोनों हाथ में सूत्र

प्रेत० पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुषपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्षत्र ते मया दीयते तवोपतिष्ठ- भा०

तामू ॥ १६ ॥ सव्यम् । आचम्य । ततः सव्याऽपसव्येन उभाभ्यां पिण्डोपरि 'एतत्ते वासः'

४६ इति सूत्राणि दद्यात् । सव्यम् । त्रिकुशयवजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डे एतद्वासस्ते नमः ॥ १ ॥ एवं श्रीशिवपिण्डे० २ याम्यसपरिवार-पिण्डे० ३ सोमराजपिण्डे० ४ हव्यवाहपिण्डे० ५ कव्यवाहपिण्डे० ६ कालपिण्डे० ७ रुद्रपिण्डे० ८ पुरुष-पिण्डे० ९ । अपसव्यम् । मोटकतिलजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडश-श्राद्धान्तर्गत-प्रेतपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् । त्रिकुशयवजला-न्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुपिण्डे एतद्वासस्ते

नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मपिण्डे० १२ विष्णुपिण्डे० १३ शिवपिण्डे० १४ यमपिण्डे० १५ । अप-

५ सव्यम् । मोटक-तिल - जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत- ४६

लेकर 'एतत्ते वासः' इस मन्त्र से । इसी प्रकार से सव्य-अपसव्यसे पन्द्रहों पिण्ड पर वस्त्र का संकल्प करे, उसके बाद सव्य-अपसव्यसे सोलहों पिण्डपर चढ़ावे, सव्य होकर तीन कुशा, यव,जल लेकर 'अद्यामुकगोत्र०'इत्यादि वाक्य कहकर संकल्प करे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाद चुपचाप सोलहों पिण्ड पर चन्दन, फूल, धूप, दीप, पान, सोपाड़ी चढ़ावे और पिण्ड से बचा हुआ अन्न पिण्डके समीप में
प्रेत० तत्पुरुषपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डेषु तूष्णीं गन्ध-पुष्पादिकं दद्यात् । ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् । ततः
५० सव्याऽपसव्येन भोजनपात्रेषु शिवा आपः सन्तु, इति जलम् । सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम् । अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु, इति तन्दुलान् क्षिपेत् । सव्यम् । त्रिकुशयवजलान्यादाय । अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-विष्णुश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ते नमः ॥ १ ॥ एवं श्रीशिवश्राद्धे दत्तै० २ याम्यसपरिवारश्राद्धे दत्तै० ३ सोमराजश्राद्धे दत्तै० ४ हव्यवाहश्राद्धे दत्तै० ५ कव्यवाहश्राद्धे दत्तै० ६ कालश्राद्धे दत्तै० ७ रुद्रश्राद्धे दत्तै० ८ पुरुषश्राद्धे दत्तै० ॥ ९ ॥ अपसव्यम् । मोटक-तिल-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत - प्रेतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ १० ॥ सव्यम् । त्रिकुश-यव-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धा- ५०
न्तर्गत-विष्णुश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ते नमः ॥ ११ ॥ एवं ब्रह्मश्राद्धे दत्तै० १२
रखे, सव्य-अपसव्य से सोलहों भोजनपात्र पर क्रमसे जल, फूल, अक्षत डाले, सव्य होकर तीन कुशा, यव जल लेकर 'अद्या-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

मुकगोत्र०' कह कर जल छोड़े, इसी प्रकारसे पन्द्रहों भोजन पात्र पर देना, सव्य होकर 'अघोराः' इस वाक्य को कहकर

प्रेत० विष्णुश्राद्धे दत्तै० १३ शिवश्राद्धे दत्तै० १४ यमश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादि० ॥ १५ ॥ अपसव्यम् । अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुषश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्य- मुपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ सव्यम् । अघोराः पितरः सन्तु, इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । प्रार्थना । गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्याः आशिषः सन्तु । सन्त्वेताः सत्याः आशिषः । ततः सव्याऽपसव्येन पिण्डोपरि स-पवित्रान् कुशानास्तीर्य । पुटकादिस्थितजलेन (पयेन वा) कुशो- परि दक्षिणाग्रां जलधारां (पयधारां वा) दद्यात् । तत्र मन्त्रः । ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् । पिण्डाधार- कुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् । ततः सव्याऽपसव्येन अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य । दक्षिणासङ्कल्पः ।

पिंडों पर पूर्वाग्र जलधारा देवे, बाद 'गोत्रन्नो०' इस मन्त्रसे प्रार्थना करे,उसके बाद सव्य-अपसव्यसे पिंडोंपर पवित्रीके सहित तीन-तीन कुशा दक्षिणाग्र रखे, दोनियामें जल या दूध लेकर पिंड पर जो कुशा रखा है उसपर दक्षिणाग्र देवे, सव्य-अपसव्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

से पिंड सूँघकर उठावे, पिंडके नीचेका कुशा और जौ कि वेदी पर अंगार घूमाकर दक्षिणमें रखा है वह दोनों दूसरे अग्निमें त्रिकुश-यव-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्ध-प्रतिष्ठासिद्धचर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे १ । एवं श्रीशिवद० २ याम्यसपरिवारद० ३ सोमराजद० ४ हव्यवाहद० ५ कव्यवाहदक्षिणां० ६ कालद० ७ रुद्रद० ८ पुरुषद० ९ । अपसव्यम् । मोटक-तिल-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक-प्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रेतश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे १० । सव्यं त्रिकुश-यव-जलान्यादाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य षोडश-श्राद्धान्तर्गत-विष्णुश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । ११ । एवं ब्रह्मद० १२ विष्णुद० १३ शिवद० १४ यमद० १५ । अपसव्यम् । मोटकतिलजलान्या-दाय । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मध्यषोडशश्राद्धान्तर्गत-तत्पुरुषश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणा-द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे १६ । सव्यम् , आचम्य । ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् । ततोऽप-

डाले, सव्य-अपसव्यसे अर्घपात्र जो सीधा है उसको हिला दे, जो उलटा है उसे सीधा कर दे और सव्य-अपसव्यसे सोलहों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिंडकी दक्षिणा देवे, सव्य होकर आचमन करे, 'देवताभ्यः०' इस मन्त्रको तीन दफे पढ़े, अपसव्य होकर दोनों हाथसे रक्षा-दीपको बुझा देवे, हाथ-पैर धोकर सव्य होके आचमन करे, 'प्रमादात्०' इसको पढ़कर विष्णुका स्मरण करे।

सव्यम्। उभाभ्यां हस्ताभ्यां रक्षादीपं निर्वाप्य। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य। सव्यम्, आचम्य। ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ॐ विष्णवे नमः, इति त्रिर्जपेत्। इति मध्यषोडशीप्रयोगः समाप्तः।

अथ वृषोत्सर्गप्रारम्भः

अथ वृषोत्सर्गादिकारिका। अशौचान्तद्वितीयेऽह्नि शय्यां दद्याद् विचक्षणः। नानावर्णैर्वितानैश्च हेमपट्टिरलङ्कृतैः॥ पुष्पाद्यैर्भूषणैराढ्यां दर्पणादिसमन्विताम्। काञ्चनं पुरुषं तद्वत्फ वस्त्रसमन्वितम्॥ पूजयेद् द्विजदाम्पत्यं नानाभरणभूषणैः। वृषोत्सर्गं प्रकुर्वीत देया च कपिला

अब वृषोत्सर्ग इत्यादिकी कारिका (याने अनुक्रम) कहते हैं—दसवाँ के दूसरे रोज शय्यादान करे, वह कैसी शय्या हो कि अनेक वर्णोंके वस्त्र और सोनेकी पट्टीसे अलंकृत हो, फूल, गहना, ऐना, फल इत्यादिके सहित हो, उसी प्रकार से फल वस्त्रके सहित सोनेके पुरुष (विष्णु) का दान करे और द्विज (ब्राह्मण)-दम्पति (अर्थात् ब्राह्मण और उसकी स्त्री) का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूजन अनेक प्रकार का कपड़ा व गहना देकर करे। बाद वृषोत्सर्ग करे। कपिला गौका दान करे। इसके बाद एकोद्दिष्ट (एकादशाह) श्राद्ध करे और सीधा जल भरा घड़ा दे। तब मासिक श्राद्ध (याने षोडशी) करे। इसके बाद सपिण्डन श्राद्ध करे। अब कुण्डसिद्धि के अनुसार मण्डप वेदी इत्यादि का प्रमाण कहते हैं—दस हाथ और १२ हाथका चौकोर मंडप

शुभा ॥ एकोद्दिष्टं ततः श्राद्धं ततः सान्नोदकं तथा। मासिकं च ततः श्राद्धं सपिण्डनमतः परम् ॥ वृषोत्सर्गे मण्डपवेदीप्रमाणं कुण्डसिद्धौ। दशहस्तं अथवा १२ हस्त चतुष्कोण अधम, द्वादश चतुर्दश हस्त मध्यम, षोडश अष्टादश हस्त उत्तम। तत्र षोडशहस्तायामविस्तीर्णां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितामर्धहस्तोच्छ्रितां वा कुर्यात्। तत्र द्वादशस्तम्भान् पञ्चहस्तान् चतुरस्तम्भानष्टहस्तान् दीर्घान् कृत्वा चतुर्द्वारं तु वस्वङ्गुलोत्तरहस्तद्वयं विस्तीर्णं कुर्यात्। तत्र भूमिम् उदग्दक्षिणं पूर्वापरं च त्रिभागं कृत्वा मध्ये हस्तोच्छ्रितां विष्णुवेदिं प्रकल्प्य। ईशान्यां रुद्रवेदीं

अधम होता है, और १२ हाथ १४ हाथ का चौकोर मण्डप मध्यम, और १६ हाथ १८ हाथका चौकोर मण्डप उत्तम होता है। यहाँ पर उत्तम मण्डप १६ हाथका ग्रहण करे, १हाथ ऊँचा अथवा आधा हाथ ऊँचा बनवावे, उसमें १६ खम्भा लगावे, ४ खम्भा ८ हाथ का बीचमें, १२ खम्भा बाहर ५ हाथका लगावे। और चारों दिशामें एक-एक द्वार दो हाथ ८ अंगुलका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौड़ा लगाना। आगे मंडपको सूतसे नापकर दक्षिण-उत्तर पूरब पश्चिमसे तीन-तीन हिस्सा करना। सब नव कोठा हुआ। मध्यके कोठामें विष्णु वेदी १ हाथ अथवा आधा हाथ ऊँची बनाना। ईशानके कोठामें १ रुद्रवेदी बनाना, १ हाथ चौड़ी १ हाथ लम्बी १ हाथ ऊँची। इसी प्रकारके नैर्ऋत्य कोण और पश्चिमके बीचमें प्रेतमातृकी वेदी बनावे, विष्णु वेदीके उत्तर

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये प्रेतमातृवेदिं हस्तपरिमितां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितां च कुर्यात्। विष्णुवेद्युत्तरतः हवनवेदिं हस्तायामविस्तारौ चतुरङ्गुलोच्चां कुर्यात्। मण्डपे अग्निकोणादारभ्य नैर्ऋत्यान्तं चतुर्दश-वेदीवितस्तिमात्रं चतुर्दशयमार्थं कुर्यात्। ततो द्वारपालकलशार्थं प्रतिद्वारे द्वे द्वे वेद्यौ कुर्यात्। ततो मण्डपाद् बहिः दशदिक्पालार्थं दिशां प्रतिदिशां हस्तपरिमितां दिग्वेदीं कृत्वा शरकण्डैः कटैर्वा आच्छादयेत्। मण्डपस्य दक्षिणे वैतरण्यर्थं खातं चतुर्हस्तदीर्घं द्विहस्तविस्तृतम् एकहस्तमितं खातं च कुर्यात्। वैतरणीसमीपे इक्षुदण्डमयनौकां स्थापयेत्। विष्णुवेद्युपरि

तरफ के कोठा में होम की वेदी १ हाथ लम्बी, चौड़ी ४ अंगुल की ऊँची, मंडप के अग्नि कोणसे लेकर नैर्ऋत्य कोण तक १४ वेदी एक बित्ता की चौदह यम के वास्ते बनावे। उसके बाद मण्डप के चारों द्वार पर दो-दो कलश के वास्ते एक-एक हाथकी ८ वेदी और मंडप के बाहर दशदिक्पाल के लिये १० वेदी, एक-एक हाथ की ४ अंगुल ऊँची बनावे। चटाई तथा सरपत से छावे। मण्डप के दक्षिण तरफ वैतरणी के वास्ते ४ हाथ लम्बा, २ हाथ चौड़ा, १ हाथ गहरा गड़हा खने।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैतरणी के समीप में ऊँख की नाव बनाकर रखे। विष्णु वेदी पर शय्या रखे। सामान सहित ध्वजा पताका को कहते हैं। २ हाथ चौड़ी, ५ हाथ लम्बी ध्वजा और १ हाथ चौड़ी, ७ हाथ लम्बी पताका। इसका रंग पूर्व दिशा के क्रम से कहते हैं। पीला लाल काला पीला सफेद धूआँ का रंग सफेद-सफेद लाल मेघवर्ण (काला) अथवा किसी आचार्य का मत है कि—

सोपस्करां शय्यां निधाय। ध्वजपताकाप्रमाणम्। हस्तद्वयायती पञ्चहस्तदीर्घा ध्वजा, एकहस्तायती सप्तहस्ता दीर्घा पताका। पीता-ऽरुण-नील-श्वेत-धूम्र-श्वेत-श्वेतरक्त-मेघवर्णा अथवा वितस्त्या-यती हस्तदीर्घा दशहस्तदण्डेषु दद्यात्। ग्रन्थविस्तरभयान्नाऽत्र लिख्यते। श्राद्धसङ्ग्रहे द्रष्टव्यः।

(अथ प्रयोगः) सव्यम्, आचम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। हस्ते त्रिकुश-यव-जलान्यादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य वृषोत्सर्गकर्माऽहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन यथालब्धोपचारैः अष्टौ द्वारपालानां पूजनमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य

१ हाथ लम्बा १ बित्ता चौड़ा उसी रंगका १० हाथ के बाँस पर लगावे। यहाँ पर ग्रन्थविस्तार के भयसे थोड़ेमें लिखा गया। विशेष श्राद्धसंग्रहमें लिखा है। अब प्रयोग कहते हैं—सव्य होकर आचमन करे। 'अपवित्रः०' इस मंत्रसे अपने ऊपर और पूजन सामग्रीपर कुशासे जल छिड़के। हाथ में तीन कुशा, यव जल लेकर 'अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि०' वाक्य कहकर प्रतिज्ञा संकल्प

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे। इसके बाद द्वारपाल पूजनका संकल्प करे। बाद पंचगव्य से 'आपो हि ष्ठा०' मन्त्र को कहकर मण्डप वेदी पर छिड़के। चन्दन अक्षत फूल हाथ में लेकर मण्डप के अधिष्ठातृ देवता के निमित्त भूमि पर छोड़े। अब ८ द्वारपाल कलश

प्रथमतः पञ्चगव्येन 'आपो हि ष्ठेति' मण्डपवेदीप्रोक्षणम्। ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा ऽअरङ्ग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। ततो गन्धा-ऽक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा, ॐ मण्डपाऽधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि। (अथ दारपालपूजनम्) कलशौ द्वौ प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि पूर्वद्वारपालाभ्यां नमः, इति नाममन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य। एवं दक्षिणपश्चिमोत्तरद्वारान् यथालब्धोपचारैः क्रमेण सम्पूज्य। (अथ दशदिक्पालपूजनम्) देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य वृषोत्सर्गकर्मणि इन्द्रादिदशदिक्पालानां पूजनमहं करिष्ये। ततः कलशस्थापनविधिना कलशं

का पूजन कहते हैं। पहिले पूर्व के द्वार पर कलश स्थापन करके कलश के ऊपर 'पूर्वद्वारपालाभ्यां०' इस मन्त्र से पूजन करे। इसी तरह से दक्षिण पश्चिम उत्तर के द्वारों पर भी नाम मन्त्र से पूजन करे। आगे दशदिक्पाल का पूजन संकल्प-पूर्वक मूल में लिखे हुए मन्त्रों से करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि इन्द्रं पूजयेत्। एह्येहि सर्वाऽमर-सिद्धसङ्घैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ! । संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यात्वा । गजस्कन्धसमारूढं वज्रहस्तं पुरन्दरम्। आवाहयामि तमहं सुरराजं शचीपतिम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ स योषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रुरपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ ॐ इन्द्राय नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत्। इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रार्थना। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार-मिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इति मन्त्रेण पीतपताकां दद्यात्। तत्र कुमुदाक्षाय नमः, इति पूजयेत्। ततो बलिदानम्। इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं स-तोय-दधि-माष-भक्तबलिं ते नमः। बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ १ ॥ ततोऽग्नये गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि अग्निं पूजयेत्। एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्ट। संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षा-ऽध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यात्वा । शक्तिहस्तं ज्वलद्रूपं छागारूढं सुरोत्तमम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवाहयामि ज्वलनं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥ ॐ अग्नये नमः । इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । सर्वतेजोमयश्चैव रक्तवर्णो महाबलः । शक्तिहस्तो महावीर्यो वैश्वानर ! नमोऽस्तु ते ॥ इति प्रार्थना । ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् । अपाꣳ रेनाꣳसि जिन्वति ॥ इति मन्त्रेण रक्तपताकां दद्यात् , तत्र कुमुदाक्षं पूजयेत् । ततो बलिदानम् । अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं स-तोय-दधिमाषभक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ २ ॥ दक्षिणे गत्वा । कलशं प्रतिष्ठाप्य, तस्योपरे यमं पूजयेत् । एह्येहि वैवस्वत धर्मराज ! । सर्वाऽमरैरर्चितधर्ममूर्त ! । सुराऽसुराणामधिप प्रजेश ! शिवाय तुभ्यं सततं नमो नमः ॥ इति ध्यात्वा । महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् । ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे । ॐ यमाय नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । दण्डहस्तः कृष्णवर्णो धर्माध्यक्षो महाबलः । प्रेताधिपतये नित्यं यज्ञराजाय ते नमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति प्रार्थना । ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु । पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ इति मन्त्रेण कृष्णपताकां दद्यात् । तत्र पुण्डरीकाक्षाय नमः, इति पूजयेत् । ततो बलिदानम् । यमाय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये गत्वा । कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि निर्ऋतिं पूजयेत् । एह्येहि रक्षो गणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः । ममाऽध्वरं रक्ष शुभाधिनाथ ! लोकेश्वर ! त्वं भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम् । यो वै यक्षाधिपो देवो नैर्ऋतो नीलविग्रहः । महाखड्गधरो नित्यं तस्मै निर्ऋतये नमः ॥ इत्यावाहनम् । ॐ अशुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ निर्ऋतये नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । प्रार्थना । निर्ऋतिस्तु पुमान्कृष्णः सर्वरक्षोऽधिपो महान् । खड्गहस्तो महासत्त्वस्तस्मै निर्ऋतये नमः ॥ ॐ एष ते निर्ऋते भागस्तञ्जुषस्व स्वाहा ऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्स-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृभ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य ऽउत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य ऽउपरि सद्भ्यो वस्वद्भ्यः स्वाहा । इति नीलपताकां दद्यात् । तत्र वामनाय नमः, इति पूजयेत् । ततो बलिदानम् । निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि-माष-भक्तिबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ४ ॥ ततः पश्चिमे गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि वरुणं पूजयेत् । एह्येहि पापोगणनायकस्त्वं गणेशपर्जन्यसहा-ऽप्सरोभिः । विद्याधरेन्द्रोरगगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानमावाहनं च । ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । प्रार्थना । वरुणः सोऽचलो विष्णुः पुरुषो निम्नगाधिपः । पाशहस्तो महातेजास्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ इति श्वेतपताकां दद्यात् । तत्र शङ्कुकर्णाय नमः, इति पूजयेत् । ततो बलिदानम् । वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि-माष-भक्तबलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

कुशलं कुरु ॥ ५ ॥ ततो वायवे गत्वा, कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि वायुं पूजयेत्। एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः। प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम्। सर्वप्राणाधिपो नित्यं सर्वजन्तुव्यवस्थितः। ध्वजहस्तो मेघवर्णस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इत्यावाहनम्। ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो ऽस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ वायवे नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत्। प्रार्थना। वातस्तु सर्ववर्णो यः सर्वगन्धवहः शुचिः। पुरुषो ध्वजहस्तश्च तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥ इति धूम्रपताकां दद्यात्। तत्र सर्वनेत्राय नमः। इति पूजयेत्। ततो बलिदानम्। वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि-माष-भक्तिबलिं ते नमः। बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ६ ॥ उत्तरे गत्वा कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि सोमं पूजयेत्। एह्येहि यज्ञेश्वर ! यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम्। सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम्। यक्षस्कन्धसमारूढं गदाहस्तं महाबलम्। आवाहयामि धनदं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम् । ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमाय नमः । इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । प्रार्थना । गौरस्त्वं च युगे जातः सर्वौषधिसमन्वितः । नक्षत्राधिपतिः सौम्यस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा ॥ इति श्वेतां पताकां दद्यात् । तत्र सुमुखाय नमः । इति पूजयेत् । ततो बलिदानम् । कुबेराय वा सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि-माष-भक्त-बलिं ते नमः । बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ७ ॥ ततो ईशाने गत्वा, कलशं प्रतिष्ठाप्य, तस्योपरि शिवं पूजयेत् । एह्येहि सर्वेश्वर ! सिद्धसङ्घैस्त्रिशूल-खट्वाङ्गधरेण सार्द्धम् । यज्ञेज्य ! यज्ञेश्वर ! यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ इति ध्यानम् । वृषस्कन्धसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् । आवाहयामि चेशानं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ ईशानाय नमः । इति पाद्यादिभिः पूजयेत् । प्रार्थना । ईशानः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पुरुषः शुक्लः सर्वदेवाधिपो महान्। शूलहस्तो विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ ईशा वास्य-मिदꣳ सर्व्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ इति श्वेत-पताकां दद्यात्। तत्र ईशानाय नमः। इति पूजयेत्। ततो बलिदानम्। ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि माष-भक्तबलिं ते नमः। बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु॥ ८॥ नैर्ऋत्य-वरुणयोर्मध्ये गत्वा, कलशं प्रतिष्ठाप्य, तस्योपरि अनन्तं पूज-येत्। एह्येहि पातालधरामरेन्द्र! नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान!। यन्नोरगेन्द्राप्सरलोकसङ्घैरनन्त-रक्षाध्वरमस्मदीयम्॥ इति ध्यानम्। निःशेषजगदाधारमशेषसुरपूजितम्। आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥ इत्यावाहनम्। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ इति पाद्यादिभिः पूजयेत्। प्रार्थना। इदं याऽनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराच-रम्। पुष्पवद्धार्य्येन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमो नमः॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म्म सप्रथाः॥ इति मेघवर्णां पताकां दद्यात्। तत्र धात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततो बलिदानम्। अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोयदधिमाषभक्तबलिं ते नमः।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-KS-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ९ ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये कलशं प्रतिष्ठाप्य तस्योपरि ब्रह्माणं पूजयेत्। एह्येति विश्वाधिपते सुरेश ! लोकेश ! सार्द्धं पितृदेवताभिः। सर्वस्य धातस्त्वमित-प्रभावो विश्वाधरं नः सततं शिवाय ॥ इति ध्यानम्। इत्येतहंससमारूढं पद्मयोनिं जगद्गुरुम्। आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम्। ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठा. शतश्च योनिमसतश्च व्विवः। ॐ ब्रह्मणे नमः, इति पाद्यादिभिः पूजयेत्। प्रार्थना। पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिवेदाधारः पितामहः। यज्ञाध्यक्षश्च सततं तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पवतासो वृत्राहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः सृक्षते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तु देवाः ॥ इति पञ्चरङ्गं श्वेतं रक्तं वा पताकां दद्यात्। तत्र विधात्रे नमः, इति पूजयेत्। ततो बलिदानम्। ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय-दधि-माष-भक्तबलिं ते नमः। बलिं भक्ष क्रतुं रक्ष यजमानस्य कुशलं कुरु ॥ १० ॥ इति दिक्पालपूजनम्।

अथ चतुर्दशयमपूजनम्। आग्नेय-नैर्ऋत्यान्तं पङ्क्तिरूपेण चतुर्दश कलशोपरि तान् संस्थाप्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निकोण से नैर्ऋत्यकोण तक १४ कलशों के ऊपर क्रमशः १४ यम का नाम मन्त्र से पूजन करे। 'त्रैलोक्ये यानि भूतानि' इससे पूजयेत्। तद्यथा। ॐ यमाय नमः यमं० ॥ १ ॥ ॐ धर्मराजाय० धर्मराजं० ॥ २ ॥ ॐ मृत्यवे० मृत्युमा० ॥ ३ ॥ ॐ अन्तकाय० अन्तकमा० ॥ ४ ॥ ॐ वैवस्वताय० वैवस्वतमा० ॥ ५ ॥ ॐ कालाय० कालं० ॥ ६ ॥ ॐ सर्वभूतक्षयाय० सर्वभूतक्षयमा० ॥ ७ ॥ ॐ औदुम्बराय० औदुम्बरमा० ॥ ८ ॥ ॐ दध्नाय० दध्नमा० ॥ ९ ॥ ॐ नीलाय० नीलं० ॥ १० ॥ ॐ परमेष्ठिने० परमेष्ठिनं० ॥ ११ ॥ ॐ वृकोदराय० वृकोदरं० ॥ १२ ॥ ॐ चित्राय नमः चित्रं० ॥ १३ ॥ ॐ चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तं० ॥ १४ ॥ इति नाममन्त्रैरावाह्य पूजयेत्। प्रार्थना—त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावरजङ्गमानि च। ब्रह्म-विष्णु-शिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि वै॥ ततो मण्डपाभ्यन्तरे यजमानः गृहीतपुष्पाञ्जलिः पूर्वाभिमुखं तिष्ठेत्। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च। सर्वे ममाऽध्वरे रक्षां कुर्वन्त्वेते मुदान्विताः॥ इति सर्वेभ्यः पुष्पाञ्जलिं त्यजेत्। अथैकादशाहश्राद्धार्थं निमन्त्रणादि। तत्राऽशौचान्तदिने निरामिषो भूत्वा, एकवारं

प्रार्थना करे। उसके बाद मण्डप के भीतर पूर्व मुँह खड़ा होकर यजमान हाथ में फूल लेकर 'देव-दानव' इस मन्त्र से सबको पुष्पां-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलि देवे। अब एकादशाह के वास्ते ब्राह्मण को निमन्त्रण करे। जिसका क्रम यह है कि—दशवाँ के रोज यजमान केवल एकबार भोजन करे। रात्रि में सब लोगों के साथ ब्राह्मण के घर जाय, दक्षिण को ढालू रहे ऐसी जमीन पर ब्राह्मण को उत्तर मुँह बैठाकर

भुक्त्वा रात्रौ सर्वजनगृहे विप्रनिवेशनम्। गोमयोपलिप्त-दक्षिणप्रवणभूमौ ब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य कृतापसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः। गतोऽसि दिव्यलोके त्वं कृतान्तविहितात् पथः। मनसा वायुभूतेन विप्रे त्वाहं नियोजये॥ पूजयिष्यामि भौगेन, इति प्रेतोद्देशेन पठित्वा, पुष्प-चन्दन-ताम्बूलानि ब्राह्मणाय दत्वा ब्राह्मणदक्षिणजानुं स्पृष्ट्वा। अस्यां रात्रौ अमुकगोत्रस्य पितु-रमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धकरणाय भवन्तं ब्राह्मणमहमामन्त्रये, इति यजमानः। ॐ आमन्त्रितोऽस्मि, इति ब्राह्मणेनोक्ते। ततो यजमानः पठेत्। अक्रोधनेन शौचेन सतत ब्रह्मवादिना। भवितव्यं तु भवता मया च श्राद्धकारिणा॥ सर्वायासविनिर्मुक्तेन कामक्रोधविवर्जितेन च भवता स्वस्तिमता भवितव्यं श्राद्धकर्मणि, इति ब्राह्मणमुद्दिश्य पठेत्। यद्यविघ्नेन रजनी यास्यति तदा

अपसव्य तथा दक्षिणमुँह होकर बायां पैर मोड़कर 'गतोऽसि' को पढ़े। फूल, चन्दन, पान ब्राह्मण को देकर ब्राह्मण का घुटना छूकर 'अस्यां रात्रौ' इसको पढ़े। 'आमन्त्रितोऽस्मि' यह ब्राह्मण कहे, यजमान 'अक्रोधनेन' इसको पढ़े, पहिले दिन निमंत्रण करे अथवा उसी रोज निमन्त्रण करे। अब एकादशाहकर्म को कहते हैं। स्नान करके नित्य क्रिया कर, नदी के तीर पर अथवा घर के दरवाजे पर, श्राद्ध की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमि की कल्पना करके पञ्चगव्य से लीपकर, जलती हुई अंगार को घुमा कर, सफेद मिट्टी बिछा कर, तिल, सरसों फेंके, बकरा बांधे, नयी मिट्टी के बरतन में पाक बनावे। आचमन कर पूरब मुँह बैठाकर शय्या देय, पहिले ब्राह्मण को संकल्प करके वरण देवे।

सर्वमेतत्करिष्यामि, इति यजमानेनोक्ते। इति ब्राह्मणं निमन्त्र्य पूर्वदिने तद्दि वा।

अथैकादशाहकृत्यम्। स्नात्वा कृतनित्यक्रियो नदीतीरे गृहे वा श्राद्धभूमिं परिकल्प्य, पञ्चगव्येनोपलिप्य, उवलदङ्गारैः संशोध्य, गौरमृत्तिकया आच्छाद्य, तिलैः सर्षपैश्च विकिरेत्। परितः छागान् बन्धयित्वा। नूतनमृण्मयभाण्डे स्वयं पाकमारभेत्। तत्राऽऽचान्तः पूर्वाभिमुखोदङ्मुखो वा शय्यां दद्यात्। ब्राह्मणवरणम्। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि कर्तव्यशय्यादानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्याप्रतिग्रहीत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततः सोपकरणशय्यायै नमः। ब्राह्मणाय नमः, इति पुष्पाऽक्षतै त्रिः सम्पूज्य। इमां सोपकरणां शय्यां ददानि, इति द्विजकरे जलदानम्। ददस्वेति प्रतिवचनम्। ततो वारिणा शय्याभिषेचनं कुर्यात्। कुशतिलजलान्यादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गे अक्षय्यसुखफल-

'वृतोऽस्मि' ब्राह्मण कहे। 'सोपकरणशय्यायै नमः, ब्राह्मणाय नमः' ऐसा कह कर फूल, अक्षत से तीन दफे पूजन करे 'इमां सोपकरणां शय्यां ददानि' कह कर ब्राह्मण के हाथ में जल देवे। 'ददस्व' ब्राह्मण कहे, उसके बाद शय्या पर जल छिड़के। तीन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुशा तिल, जल लेकर 'अद्याशौचान्त॰' वाक्य को कह कर शय्या का दान करके ब्राह्मण को देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे, बाद तीन कुशा तिल जल दक्षिणा द्रव्य लेकर 'अद्य कृतैतत्॰'इस वाक्य से ब्राह्मण को दक्षिणा देवे। ब्राह्मण 'ॐस्वस्ति' कहे, ब्राह्मण

प्राप्तिकाम इमां सोपकरणां शय्यां विष्णुदैवत्याम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति विप्रकरे दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो दक्षिणाद्रव्यमादाय। अद्य कृतैतत्सोपकरणशय्यादानप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति॰। सोपकरणां शय्यां स्पृशेत्। तत आचम्य, ॐ फलवस्त्र समन्वित-काञ्चनपुरुषाय नमः। ॐ ब्राह्मणाय नमः। इति पुष्पाऽक्षतैः त्रिः सम्पूज्य। इदं फलवस्त्र-समन्वितं काञ्चनपुरुषं ददानि, इति द्विजकरे जलदानम्। ददस्वेति प्रतिवचनम्। ततो वारिणा देयदव्यसेचनम्। कुशत्रयतिल-जलान्यादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकाम इदं फलवस्त्र-समन्वितं काञ्चनपुरुषं विष्णुदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति द्विजकरे दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय। अद्य

शय्या को छूवे। उसके बाद आचमन करे, कांचन पुरुष तथा ब्राह्मण को चन्दन, फूल इत्यादि से तीन वार पूजन करे, 'इदं फलवस्त्र-समन्वितं काञ्चनपुरुषं ददानि॰' कह कर ब्राह्मण के हाथ में जल दे, ब्राह्मण कहे ददस्व॰' इसके बाद कांचन पुरुष पर जल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छिड़के। तीन कुशा तिल जल लेकर 'अद्याऽशौचान्त०' इत्यादि पढ़कर कांचन पुरुष को दान कर ब्राह्मण को दान दे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। फिर तीन कुशा तिल, जल, दक्षिणा, द्रव्य लेकर 'कृतैतत्०' इस वाक्य को पढ़कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे, ब्राह्मण

कृतैतत्फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषदानप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततः काञ्चनपुरुषं स्पृशेत्। आचम्य। कुशत्रय-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकामो द्विजदम्पतिपूजनमहं करिष्ये। ततो द्विजदम्पतीभ्यां नमः। इति सम्पूज्य। ततः सूपौदनदानम्। अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकाङ्क्षी स्वर्गाद्युत्तमलोकवासकाम इमानि सूपौदनपञ्चपात्राणि भोजनपाकार्थम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। दक्षिणाद्रव्यं चादाय। अद्य कृतैतत्सूपौदनपञ्चपात्रदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। तौ नमस्कुर्यात्।

'ॐ स्वस्ति' कहे तथा कांचन पुरुष को छूवे। फिर आचमन करके द्विजदम्पती का संकल्प पूर्वक पूजन करे। इसके बाद [सूपौदन] याने पाँच बर्तन का दान करे। भोजन पाक के लिये ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे, तथा तीन कुशा तिल जल दक्षिणा लेकर संकल्प पढ़कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे, ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे, यजमान दोनों को नमस्कार करे। अब वृषोत्सर्ग का क्रम कहते हैं—आचमन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर तीन कुशा तिल जल लेकर 'अद्याऽशौचान्त०' पढ़कर वृषोत्सर्ग का संकल्प करे। यदि नीलवृष हो तो 'नीलवृषोत्सर्ग०' संकल्प

अथ वृषोत्सर्गः। तत आचान्तः पूर्वाभिमुख उपविश्य, कुशत्रय-तिल-जलान्यादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य मोक्षकामः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गमहं करिष्ये। (नीलवृषप्राप्तौ नीलपदप्रक्षेपः) तत्राऽऽदौ ईशाने रुद्रवेद्यां कलशं स्थापयेत्। ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा। ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥ इति सप्तधान्यं विकिरेत्। ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशंत्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशतान्द्रयिः॥ इति धान्योपरि कलशं स्थापयेत्। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्न्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुस्य ऽऋत सदनमासीद॥ इति कलशे जलं पूरयेत्। ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥ इति कलशे गन्धं

में कहे, पहिले ईशान में रुद्रवेदी पर कलश स्थापन की विधि से कलश का स्थापन करे, उस पर वरुण का पूजन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षिपेत्। ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनु व्वभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥ इति कलशे सर्व्वौषधीः क्षिपेत्। ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तो परुषः परुस्परि एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च। इति कलशे दुर्व्वाङ्कुरान् क्षिपेत्। ॐ अश्वत्थे वो निषदनम्पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम्॥ इति कलशे पञ्चपल्लवान् क्षिपेत्। ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः॥ इति कलशे सप्तमृत्तिकां क्षिपेत्। ॐ याः फलनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति सूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥ इति कलशे पूगीफलं क्षिपेत्। ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥ इति कलशे पञ्चरत्नानि क्षिपेत्। ॐ हिरण्यगर्भ्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत्। ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः। व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसोः॥ इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत्। ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत व्वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्रतो॥ इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्। ॐ तत्त्वा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नमस्ते रुद्र० इस मन्त्र से कलश पर रुद्र का षोडशोपचार से पूजन करे।

यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः॥ इति वरुणमावाह्य सम्पूज्य तस्योपरि रुद्रं पूजयेत्। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त इऽषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः, ॐ रुद्रमावाहयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषनामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामों प्रतिष्ठ॥ अस्मिन् कलशे वरुणरुद्राः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। ततो षोडशोपचारैः सम्पूज्य। अनया पूजया वरुणरुद्राः प्रीयन्ताम्। ततः पुरुषसूक्तं षोडशमन्त्रान् रुद्राध्यायं षष्ट्युत्तर-षष्टिमन्त्राः। तद्यथा। ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात। स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्त्य-तिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥ ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २॥ ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ ३॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्य-क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥ ४॥ ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातो

इसके बाद पुरुषसूक्त 'सहस्रशीर्षा १६ मन्त्र, नमस्ते रुद्राध्याय ६६ मन्त्र' पढ़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूममथो पुरः ॥ ५ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्व्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः ॥ ८ ॥ ॐ तं य्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्न्पुरुषञ्जातमग्रतः । तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ ॐ यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू ऽपादा ऽउच्च्येते ॥ १० ॥ ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासद्बाहूराजन्न्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो ऽअजायत ॥ ११ ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोतात्तथा लोकाँ २॥ ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥ ॐ सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञन्तन्न्वाना ऽअबध्नन्न्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन् । ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥ इति पुरुषसूक्तम् । अथ रुद्राध्यायः । ॐ नमस्ते रुद्र-
मन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा-
ऽपापकाशिनी । तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त
हस्ते ब्विभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरिक्षत्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥ ॐ शिवेन व्वचसा
त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि । यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मा सुमना ऽअसत् ॥ ४ ॥ ॐ अद्ध्य-
वोचदधिवक्ता प्रथमो देव्व्यो भिषक् । अहींछंश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्यो ऽधराचीः
परासुव ॥ ५ ॥ ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुण ऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनꣳ रुद्रा ऽभितो
दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेड ईमहे ॥ ६ ॥ ॐ असौ यो ऽवसर्प्पति नीलग्रीवो व्विलो-
हितः । उतैनङ्गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥ ७ ॥ ॐ नमोऽस्तु नील-
ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्यो ऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ ॐ प्रमुञ्च
धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्ज्याम् । याश्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप ॥ ९ ॥ ॐ
ब्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो ब्विशल्ल्यो बाणवाँ २॥ ऽउत । अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निष-

Kartikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षधिः ॥ १० ॥ ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयाऽस्मान्न्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ ११ ॥ ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम् ॥ १२ ॥ ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे । नीशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ १३ ॥ ॐ नमस्त ऽआयुधायानाततायधृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने ॥ १४ ॥ ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो वधोः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ १५ ॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअवष्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान्नुद्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ १६ ॥ ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः ॥ १७ ॥ ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्रद्रायातितायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमः ॥ १८ ॥ ॐ नमो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम ऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पतीनाम्पतये नमः ॥ १९ ॥ ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्व्याधिन ऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाष स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः ॥ २० ॥ ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्क-राणाम्पतये नमो नमः सृकायिब्भ्यो जिघाँसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमो ऽसिमद्भ्यो नक्त-ञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥ २१ ॥ ॐ नम ऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च वो नमो नम ऽआतन्वानेब्भ्यः प्रतिदधानेब्भ्यश्च वो नमो नम ऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥ २२ ॥ ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेब्भ्य ऽआसीनेब्भ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धाव-द्भ्यश्च वो नमः ॥ २३ ॥ ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेब्भ्योऽश्व-पतिब्भ्यश्च वो नमो नम ऽआव्व्याधिनीब्भ्यो व्विविद्धयन्तीब्भ्यश्च वो नमो नम ऽउगणाब्भ्यस्तृꣳ-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतीभ्यश्च वो नमः ॥ २४ ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥२५॥ ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संगृहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो ऽअर्भकेभश्च वो नमः ॥ २६ ॥ ॐ नमस्तक्षभ्य रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमः ॥२७॥ ॐनमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ २८॥ ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥२९॥ ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च ॥३०॥ ॐ नम ऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्राय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥३१॥ ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चापगल्ब्भाय च नमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च ॥३२॥ ॐ नमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च नमः श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च ॥३३॥ नमो व्वन्न्याय च कक्ष्नाय च नमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च नम ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥ ३४ ॥ ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च ॥ ३५ ॥ ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च ॥ ३६ ॥ ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कूल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च ॥ ३७ ॥ ॐ नमः कूप्याय चावटयाय च नमो ब्रीद्ध्र्याय चातप्याय च नमो मेग्धाय च व्विद्यूत्याय च नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्ष्याय च ॥ ३८ ॥ ॐ नमो व्वात्याय च रेष्याय च नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्म्राय चारुणाय च ॥ ३९ ॥ ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽउग्ग्राय च भीमाय च नमो ऽअग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनी-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यसे च नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यो नमस्ताराय ॥ ४० ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ४१ ॥ ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कुल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥ ४२ ॥ ॐ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च नमः ऽइरिण्याय च प्रपत्थ्याय च ॥ ४३ ॥ ॐ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेप्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥ ४४ ॥ ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोल्लप्याय च नमः ऽऊर्य्याय च सूर्य्याय च ॥ ४५ ॥ ॐ नमः पर्ण्याय च पर्ण्यशदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम ऽआखिदते च प्रखिदते च नम ऽइषु-कृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः। नमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यो नमो व्विचिन्वत्केब्भ्यो नमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो नम ऽआनिर्हतेब्भ्यः ॥ ४६ ॥ ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्च नाममत् ॥ ४७ ॥ ॐ इमा रुद्राय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥ ४९ ॥ ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः । अव स्थिरा मघवद्यन्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ५० ॥ ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ ५१ ॥ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः । यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥ ५२ ॥ ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥ ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम् । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५४ ॥ ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा ऽअधि । तेषाꣳ सह० ॥ ५५ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः । तेषाꣳ सहस्र० ॥ ५६ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः । तेषाꣳ सहस्र० ॥ ५७ ॥ ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषाꣳ सहस्र० ॥ ५८ ॥ ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्द्दिनः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषाꣳ सहस्रयो० ॥ ५९ ॥ ॐ ये पथाम्पथि रक्षय ऽऐलबृदा ऽआयुर्युधः । तेषाꣳ सहस्र० ॥ ६० ॥ ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषाꣳ सहस्रयो० ॥ ६१ ॥ ॐ येऽन्नेषु व्विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषाꣳ सहस्र० ॥ ६२ ॥ ॐ य ऽएतावन्तश्च भूयाꣳ सश्च दिशो रुद्द्रा वितस्थिरे । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ६३ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेऽभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेब्भ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६४ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वात ऽइषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६५ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां य्येषामन्नमिषवः । तेभ्यी दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमा ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥ इति रुद्राध्यायं जपेत् । ततो मण्डपनैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये वेद्युपरि तृणमण्डपं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके बाद प्रेतमातृ की वेदी पर तृण का मण्डप बनावे। उस वेदी पर सात प्रेतमातृ कपास सिन्दूर में रंगकर सात जगह रखे और आठ धातु से मिला हुआ लोहा सातो जगह में रखे। क्रम से संकल्प पढ़कर सात प्रेतमातृ के नामोंसे आवाहन करे।

कारयेत्। तत्र सप्तप्रेतमातृः स्थापयेत्। तद्यथा। सिन्दूराक्तकार्पासबीजेन प्रेतमातृः निरूप्य अष्टधातुमिलितलोहं च सप्तसु स्थानेषु संस्थाप्य क्रमेण पूजयेत्। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य विमुक्तिकाङ्क्षी स्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सप्तप्रेतमातृणां पूजनमहं करिष्ये। इति सङ्कल्पः। ॐ कराल्यै नमः करालीमा० ॥ १ ॥ ॐ भीषणायै नमः भीषणामा० ॥ २ ॥ ॐ रौद्रायै नमः रौद्रामा० ॥ ३ ॥ ॐ यमदंष्ट्रायै नमः यमदंष्ट्रामा० ॥ ४ ॥ ॐ कृशोदर्य्यै नमः कृशोदरीमा० ॥ ५ ॥ ॐ उग्रचण्डायै नमः उग्रचण्डामा० ॥ ६ ॥ ॐ महाकाल्यै नमः, महाकालीमा० ॥ ७ ॥ इति गन्धाक्षतपुष्पमाषान्नस्य सप्तवटकनैवेद्याचमनीय-ताम्बूलानि प्रत्येकं समर्पयेत्। एतत्पूजनसाङ्गतासिद्धयर्थं लोहदक्षिणां ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। तत्समीपे सप्तकलशान् स्थापयेत्। तेषु कलशेषु ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।

फूल चन्दन अक्षत से पूजन करे। उरदी का ७ बरे का नैवेद्य लगावे, आचमन करावे, पान सोपड़ी सबको चढ़ावे और पूजनकी पूर्ति के वास्ते लोहा दक्षिणा संकल्प करके ब्राह्मण को दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस वेदी के समीप ७ कलश स्थापन करे। उन कलशों में 'ॐ शन्नो देवा०' इस इस मन्त्र से जल डाले, 'ॐ यवोऽसि०' इस शँय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ इति जलं क्षिपेत्। ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः। इति यवान् क्षिपेत्। ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा। इति तिलान् क्षिपेत्। ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रिपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ इति कुशान् क्षिपेत्। 'ॐ देवस्य त्वे'ति तज्जलं शिरस्यभिषिञ्च्य। तत्र मन्त्रः। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥ ॐ देवस्य त्वा०। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाऽग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥ ॐ देवस्य त्वा०। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि। सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि ॥३॥ ततः सव्येन पूर्वाभिमुखः पुरुषसूक्तं रुद्राध्यायं ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्च कृमा वयम्। अग्निर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ १ ॥ ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च

मन्त्र से यव डाले, 'ॐ तिलोऽसि०' इस मन्त्र से तिल डाले, 'ॐ पवित्रे स्थो०' इस मन्त्र से कुशा डाले, 'ॐ देवस्य त्वा०' इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३ मन्त्र से सातों कलश का जल यजमान अपने शिर पर छिड़के। उसके बाद सव्य होकर पूरव मुँह 'सहस्रशीर्षा १६ मन्त्र', कृमा व्वयम्। व्वायुर्मा तस्मादेनसो व्विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ २ ॥ ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएनाꣳसि च कृमा व्वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः ॥ ३ ॥ इति पठेत्। ततोऽपसव्येन कुशत्रययवजलान्यादाय। अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकाङ्क्षी स्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः वत्सतरीचतुष्टयसहित-वृषोत्सर्गयज्ञे ब्राह्मणद्वारा हवनमहं करिष्ये। तत उत्तराभिमुखं ब्राह्मणमुपवेश्य वरणद्रव्यञ्चादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कर्त्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल-वस्त्र-युग्महेमालङ्कारयुक्तैर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे, ब्रह्माणं वृणुयात्। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। पुनः वरणद्रव्यञ्चादाय। अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कर्त्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्म कर्तुम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल-वस्त्र-युग्महेमालङ्कर-युक्तैर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। यथा तथा 'नमस्ते ६६ मन्त्र' और 'यद्देवादेवहेडनम्' यह ३ मन्त्र पढ़े, अपसव्य होकर तीन कुशा, यव, जल लेकर होम का संकल्प करे और ब्राह्मण को संकल्प करके २ वरणी दे। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहे, यजमान कहे—'जैसा कर्म लिखा है उस विधि से आप करें।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Vartikant Sharma Collection, Najafgarh

ब्राह्मण कहे—'जैसा ज्ञान है वैसा करेंगे।' उसके बाद होता पूर्व मुँह बैठकर आचमन करे और तीन कुशा लेकर होम की वेदी को झाड़े, उस कुशा को ईशानमें फेंके। गोबर जल लेकर वेदीको लीपे। वेदी के मध्य में स्रुवा के जड़ से १० अंगुल की तीन-तीन रेखा करे। उत्तर-उत्तर क्रम से जिस प्रकार से रेखा की गयी है उसी प्रकार से अनामिका तथा अँगूठा से रेखा पर की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

त्रिहितं कर्म कुरु। यथा ज्ञानं करवाणीति। ततो होता प्राङ्मुख उपविश्याऽऽचान्तः कुशैर्हस्तमात्रं चतुरस्रं स्थण्डिलं परिसमूह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य मध्ये प्र देशमात्रा-मुत्तरोत्तरक्रमेण स्रुवमूलेन त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां तां क्षिप्त्वा तं देशं जलेनाऽभ्युक्ष्य तत्र दक्षिणहस्तस्थकांस्यपात्रेणाऽग्निमानीय तूष्णीं स्थापयेत्। अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्माऽऽसनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयं ब्रह्माऽऽसने ब्रह्मोपवेशनम्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने

मिट्टी उठाकर ईशान में फेंके। उन रेखाओं पर जल छिड़के, दाहिने हाथसे काँसे की थालीमें अग्नि लेकर वेदीपर स्थापन करे, बाद कुशकंडिका करे। उसका क्रम यह है—अग्नि के दक्षिण तरफ ३ कुशा ब्रह्मा के वास्ते आसन रखे, अग्निके उत्तर तरफ दो-दो कुशाका आसन रखे, ब्रह्माके आसन पर ब्रह्माको बैठावे। प्रणीतापात्रको अपने आगे रखे, उसको जलसे भरे, कुशाओंसे ढँक अग्नि के उत्तर तरफ जो दो आसन है उस आसनके पहिले आसन पर प्रणीता रखे। इसके बाद ब्रह्मा के तरफ देखकर दूसरे आसन पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखे, उसके बाद मुट्ठी भर कुशा लेवे [अथवा ८१ कुशा] उसमेंसे ४ भाग करे, १भाग वेदीके अग्निकोण से ईशान तक, पूर्व और १भाग ब्रह्मासे अग्नि तक दक्षिण और १ भाग नैर्ऋत्य से वायव्य तक पश्चिम और १ भाग अग्नि से प्रणीता तक उत्तर में, इस तरह कुशा बिछावे। अब कार्य में आनेवाले पात्रका आसादन करते हैं—अग्निके उत्तर-पश्चिमसे पवित्री काटने के वास्ते ३ कुशा

निदध्यात्। ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तं प्राच्याम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं दक्षिणस्याम्। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं प्रतीच्याम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् उत्तरस्याम्। इति परिस्तरणम्। तत्र पात्रासादनमुपयोक्ष्यमाणानामग्नेरुत्तरतः। पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रार्थमनन्तर्गर्भितं साग्रकुशपत्रद्वयं प्रोक्षण्यर्थं मृत्पात्रम् आज्यार्थं ताम्रस्थाली। पायसचरु-पिष्टचर्वर्थश्च सान्तराल-मृत्तिकास्थाली। स्रुवसम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्। उपग्रहार्थं वेणीरूपं कुशत्रयं प्रादेशमात्रम्। पालाश-समित्त्रयम्। स्रुवः। आज्यम्। तन्दुलपिष्टम्। तन्दुलान्। जलम्। दुग्धम्। ब्रह्मदक्षिणार्थं पूर्णपात्रं, होतृदक्षिणार्थं वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यान्युपकल्पयेत्। ततो वाग्यत आसादितकुश-

पवित्रीके लिये, कुशाका दो पत्ता बीचका गर्भ निकालकर और अग्रके सहित रखे, प्रोक्षणी के लिए मिट्टीकी ढकनी रखे, घी के लिये ताँबेका कटोरा रखे, पायसचरु पिष्टचरुके लिये, दो खानावाली मिट्टीकी कड़ाही, स्रुवाको पोंछनेके लिये ३ कुशा, हाथमें लेने के लिये वेणी रूप ३कुशा, १०अंगुलकी पलाशकी लकड़ी ३, दस-दस अंगुलकी स्रुवा,घी, चावलका आटा, चावल जल दूध ब्रह्माकी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Harikant Sharma Collection, Najafgarh

दक्षिणाके लिये चावलसे पूर्णभरा पात्र रखे, होताकी दक्षिणाके वास्ते २वस्त्र, सोना, कांसा रखे। एक के आगे एक क्रमसे रखे। सब चीजें अब चुपचाप रखा हुआ, २कुशा पत्ता और ३ कुशा जो पवित्री काटने वाला है उसे उठावे, १० अंगुल पवित्री को नापके तीन कुशासे बाकीको काट देवे, उस पवित्रीको लेकर प्रणीताका जल तीन दफे प्रोक्षणीमें रखे, दोनों हाथकी अनामिका

पत्रद्वयमादाय पवित्रच्छेदनकुशौ. प्रादेशमात्रं प्रमाप्य छिन्द्यात्। तानपास्य सपवित्रकरेण प्रणीतोदकेन त्रिः प्रोक्षणीपात्रं निधाय पवित्राभ्यामुत्पूय प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणं त्रिरुद्धिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम्। पवित्रशेषजलसहितप्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्ये निधाय। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। सान्तराल-मृण्मयपात्रे प्रणीताजलम् एकस्मिन् स्थाने। एकस्मिन्स्थाने क्षीरं पिष्टमयचरुजलमध्ये क्षिपेत्। ततो ब्रह्मादक्षिणतः आज्यमधिश्रयेत्, तस्योत्तरतः स्वयं चरुं श्रपयेत्। उल्मुकं स-हविष्याग्नेः प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा तत्रैव क्षिप्त्वा ततः

और अँगूठासे पवित्री को थामकर प्रोक्षणी के जलको उत्पवन करे। प्रोक्षणी को बाँये हाथ पर रखे। दाहिने हाथ से पवित्री लेकर प्रोक्षणीके जलको तीन वार उछाले। प्रणीता के जलसे प्रोक्षणी को प्रोक्षण करे। प्रोक्षणी के जलसे जितनी वस्तु रखी है उसको प्रोक्षण करे। पवित्रीके सहित प्रोक्षणीको अग्नि-प्रणीता के बीचमें रखे। होमके कटोरा में घी रखे और दो-खाना वाली मिट्टी की कड़ाही में १ तरफ प्रणीताजल, १ तरफ दूध डाले। जल में चावल का आटा और दूध में प्रणीता के जल से

Amritkant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोकर चावल डाले। ब्रह्मा अग्नि पर दक्षिण तरफ घी रखे और होता घी के उत्तर तरफ चरु रखे। जलती हुई लकड़ी उठा कर प्रदक्षिण क्रम से दोनों हवि के ऊपर घुमाकर अग्नि में छोड़ दे. बाद स्रुवा को नीचे की ओर मुँह करके तपावे। संमार्जन कुशा को लेकर कुशा के अग्र से स्रुवा के अग्र से मूल तक, कुशा के मूल से स्रुवा के मूल तथा अग्र तक पोंछे। प्रणीता के जल से प्रोक्षण

अधोमुखं स्रुवप्रतपनं सम्मार्गकुशानामग्नेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मार्ज्य प्रणीतोदकेऽभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निधाय। आज्योद्वासनं चरुं पूर्वेणाऽऽनीय अग्निपश्चिमे निधाय, पायसचरुमुद्वास्याऽऽज्यपश्चिमेन नीत्वा आज्यस्योत्तरतो निधाय। प्रोक्षणीतः पवित्रे समानीय आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। उपयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तिष्ठन् प्राग्गृहीताक्तसमित्त्रयं ब्रह्मौ क्षिपेत्। उपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तमग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय, ततो

स्रुवा को करे। फिर तपाकर दक्षिण तरफ रखे, घी को अग्नि पर से चरु के पूरव से उतार कर ले आवे। अग्नि के पश्चिम तरफ रखे। पायस चरु उतार कर घी के पश्चिम से ले आवे, घी के उत्तर तरफ रखे, प्रोक्षणी में से पवित्री लेकर घी को प्रोक्षणी की तरह उत्पवन करे और घीमें देखे कोई खराब चीज हो तो निकाल दे। फिर उसी पवित्रा से प्रोक्षणी को उत्पवन करे, उपयमन जो वेणीरूप कुशा है उसको बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से ३ पलासवाली समिधा [लकड़ी] लेकर खड़ा हो ब्रह्मा को मन में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यान करके पूरव को अग्र रहे ऐसा घी में डुबोकर तीनों लकड़ी अग्नि में डाल दे। बैठकर पवित्रा के सहित प्रोक्षणी का जल ईशान से लेकर ईशान तक घुमावे, पवित्रा में प्रणीता रखे, बाद होता को ब्रह्मा कुशा से छूते रहे, होता दाहिना पैर मोड़कर आगे लिखे हुये ब्रह्मणा कुशेनाऽन्वारब्धो दक्षिणजानुं पातयित्वा। ॐ इह रतिः स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ अग्निमध्ये त्यागः, न तु प्रोक्षणीपात्रे। ॐ इह रमध्वꣳ स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ इह धृतिः स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ इह स्वधृतिः स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ ४ ॥ ॐ उपसृजं धरुणं मातरं मात्रधरुणो मातरं धयन् स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ रायस्पोषमस्मासु दीधरत्। स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ ६ ॥ केषाञ्चिन्मते ॐकारसहितः षडाज्याहुतीः कुर्यात्। संस्रवं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ततः आघारावाज्यभागं पायसहोमं तु ॐकारसहितः कुर्यात्। ब्रह्मणान्वारब्ध। ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। तत अनन्वारब्धः पायसहोमः। ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ रुद्राय स्वाहा, इदं रुद्राय०

ॐकार सहित मन्त्रों से ६ आहुति दे और आहुति देने के बाद स्रुवा का शेष प्रोक्षणी में डाले। किसी के मत से ॐकार सहित, किसी के मत से ॐकार रहित करे। ब्रह्मासे स्पर्श किये हुये 'प्रजापतये इन्द्राय अग्नये सोमाय' ४आहुति दे। ब्रह्मासे स्पर्श छोड़-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर इन मन्त्रों से पायस होम देवे 'अग्नये रुद्राय शर्वाय पशुपतये' 'उग्राय उशनसे भवाय महादेवाय ईशानाय' अव पिष्ट चरु का ॥ २ ॥ ॐ शर्वाय स्वाहा, इदं शर्वाय न० ॥ ३ ॥ ॐ पशुपतये स्वाहा, इदं पशुपतये० ॥ ४ ॥ ॐ उग्राय स्वाहा, इदमुग्राय० ॥ ५ ॥ ॐ उशनसे स्वाहा, इदमुशनसे० ॥ ६ ॥ ॐ भवाय स्वाहा, इदं भवाय० ॥ ७ ॥ ॐ महादेवाय स्वाहा, इदं महादेवाय० ॥ ८ ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा, इदमीशानाय० ॥ ९ ॥ अथ पिष्टकेन। ॐ पूषा गा ऽअन्वेतु नः पूषा रक्षत्ववर्वतः। पूषा वाजꣳसनोतु नः स्वाहा, इदं पूष्णे न मम ॥ १० ॥ ततोऽन्वारब्धेन। ततः पायसपिष्टकाभ्यामुत्तरार्द्धावदानभूताभ्याम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। तत आज्येन। ॐ स्वाहा, इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय०। ॐ त्वन्नऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इमग्नीवरुणाभ्यां न मम। ॐ स त्वन्नो ऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्टो ऽस्या ऽउषसी व्युष्टौ। अव यक्ष्व न वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि

होम 'ॐ पूषा गा अन्वेतु नः' इस मन्त्र से करे। बाद ब्रह्मा से स्पर्श करके घी पायस पिष्ट चरु शेष इकट्ठा सब लेकर 'अग्नये स्विष्टकृते' से स्विष्टकृत् आहुति दे, और घी की नव आहुति 'ॐ भू' इत्यादि मन्त्रों से दे। शेष प्रोक्षणी में डाले प्रोक्षणी का

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

घी प्राशन करे, या सूँघे, आचमन करे, पवित्रा से प्रणीता का जल अपने ऊपर छिड़के 'सुमित्रिया न' इस मन्त्र से 'दुर्मित्रिया' स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे०। ॐ ये ते शतं व्वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्विवतता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्कार्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मद्वाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथो व्वयमादित्यव्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायाऽदितये न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा। संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। ॐ सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु। ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्मः, इति ऐशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्। कृतस्य वृषोत्सर्गाङ्गहवनकर्मणः कृता-ऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। केषाञ्चिन्मते पूर्णाहुतिं इस मन्त्र से प्रणीता को ईशान में उलट दे। फिर हाथ में जल तथा पूर्णपात्र लेकर दक्षिणा के सहित संकल्प पढ़कर ब्रह्मा को दे,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मा 'स्वस्ति' कहें। किसी का मत पूर्णाहुति करने का है, किसी का नहीं है.। यदि पूर्णाहुति करना हो तो 'मूर्धानं' इस मन्त्र से दे और वेदी के चारों तरफ का कुशा उठाकर घी में डुबोकर 'देवागातु' इस मन्त्र से अग्नि में डाल दे। कुर्यात्। तत्र मन्त्रः। ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविꣳ साम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्त देवाः स्वाहा॥ इदमग्नये०। तत आस्तरण-क्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्येनाभिघार्य्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातु त्रिदो गातुं त्रिवत्वा गातुमित। मनसस्पत ऽइमं देवयज्ञꣳ स्वाहा, वातेधाः स्वाहा, इदमग्नये०। इति बर्हिहोमः। कुशत्रय-तिल-जलान्यादाय वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यपात्राणि चादाय। अद्य कर्त्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूत-कृतैतद्धोमप्रतिष्ठार्थम् एतानि वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यानि बृहस्पतिवह्निचन्द्रदैवतानि अमुकगोत्रायाऽमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय होत्रे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो रुद्राध्यायं जपेत्। लोहकारमाहूय वृषभं लाञ्छयेत्। ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम्॥ इति मन्त्रेण दक्षिण-

इसको बर्हिहोम कहते हैं। तीन कुशा, तिल, जल, दो वस्त्र सोना, कांसा लेकर संकल्प पढ़ कर होता को दक्षिणा दे, होता 'ॐ स्वस्ति' कहे। उसके बाद 'नमस्ते' इत्यादि ६६ मन्त्र पढ़कर वृषभ दागने वाले को बुलाकर वृषभ को त्रिशूल तथा चक्र का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिह्न करावे, 'ॐ इमा रुद्राय' इस मन्त्र से दाहिने तरफ १२ अंगुल त्रिशूल 'ॐ नमस्ते रुद्र' १ मन्त्र से आठ अंगुल का बायें तरफ पार्श्वे द्वादशाङ्गुलेन त्रिशूलं लिखेत्। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः, बाहुभ्यामुत ते नमः। इति वामपार्श्वे अष्टाङ्गुलं चक्रं लिखेत्। दधिगोमयोर्मध्ये स्नापयित्वाऽङ्कितम्। नः। ततो वत्सतरीचतुष्टयसहितं वृषभं कुशजलेन स्नापयेत्। तत्र स्नानकरणमन्त्राः। ॐ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासु जातः कश्यपो यस्त्विन्द्रः। या ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न ऽआपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ ॐ यासाꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्। या ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शꣳ स्योन भवन्तु॥ ॐ यासां देवा दिवि कृण्वन्तु भक्षं या ऽअन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ ॐ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोपस्पृश तत्वचं मे। घृतश्च्युतः शुचयो याः पावकास्ता न ऽआपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः॥ इति मार्जनम्। ततो लोहघण्टिकानूपुरकनककपर्दिकादिभिः

चक्र लिखे। दधि, गोवर मिलाकर नहलावे, फिर उसको अंकित करे। उसके बाद चारों बछिया के सङ्ग वृषभ को कुश जल से स्नान करावे, स्नान का मन्त्र मूल में देखना। उसके बाद पाँचों को लोह घण्टी पैजेब इत्यादि से अलंकृत कर, अघमर्षण रुद्रा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्याय ६६ मन्त्रा, पुरुष सूक्त १६ मन्त्र, 'यद्देवा देवहेडनं' ३ मन्त्रा पढ़े। बाद बैल के दाहिने कान में 'ॐ पिता वत्सा' इस पञ्चाप्यलङ्कृत्य सावित्रीमघमर्षणं रुद्राध्यायं पुरुषसूक्तं ॐ यद्देवा देवेति च जपेत्। ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्च कृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः॥ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि च कृमा वयम्॥ वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएनाꣳसि च कृमा वयम्॥ सूर्य्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः॥ इति ऋक्त्रयं कूष्माण्डीश्च जपेत्। ततो वृषभस्य दक्षिणकर्णे जपेत्। ॐ पिता वत्सानां पतिरघ्नीयानामथो पितामहता गर्गराणां वत्सो जरायुः। प्रतिधुक् पीयूष ऽआमिक्षा घृतं तदुवस्यरेतः॥ वृषोऽसि भगवान् धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः। वृणोमि त्वामहं भक्त्या स मां रक्षतु सर्वतः॥ सत्यं वृषस्वरूपेण गवामानन्दकारकः। अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन!॥ त्वयि मत्ते क्षयाल्लोकाः प्रेताः सन्तु निरामयाः॥ इति मन्त्रद्वयं जपित्वा। अथ न्यासः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ इति शिरसि। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः॥ इति ललाटे। ॐ नमः शम्भवाय च मयो-

मन्त्राको कहे और 'वृषोऽसि भगवान्' इन श्लोकों को कहे। आगे 'त्र्यम्बकं' इत्यादि मन्त्रोंसे वृषभका न्यास करे, उसके बाद चारों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ इति मुखे। ॐ प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ इति नासिकायाम्। ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि। इति ग्रीवायाम्। ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवेति। दुरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। इति बाह्वोः। ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳसीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥ इति लाङ्गूले। ॐ वृषाग्निं वृषणभरन्नपाङ्गर्भ्भꣳ समुद्रियम्। अग्न ऽआयाहि वीतये ॥ इति वृष्णे। ॐ त्र्यम्बकमिति पादेषु। इति न्यासः। ततो वत्सतरी-सहितं वृषभं पूजयेत्। तत्र क्रमः। वत्सतरीभ्यो नमः। धर्मरूपाय वृषाय नमः, इति पाद्या-र्घ्याचमनीयस्नानादिभिरुपचारैः सम्पूज्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय। अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितरमुकप्रेतस्य मोक्षकामो रुद्रदैवत्यं वृषभमेनं युवानं पतिं वो ददानि तेन क्रीडन्त्यश्च रथप्रियेण। मा नः सप्त्यजनुषा सुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेम ॥ इत्युत्सृजेत्। तत ऐशान्यां

बछिया के सहित वृषभ का पजन करके तीन कुशा तिल जल लेकर चारों बछिया के सहित वृषभ का सङ्कल्प करके त्याग करे और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईशान दिशा के तरफ पाँचों को चलावे, फिर पाँचों का पूजन करे, उसके बाद चारों बछिया के मध्य में वृषभ को मूलमें

दिशि पञ्चापि चालयेत्। पुनः पञ्चापि पूजयेत्। ततो वत्सतरीचतुष्टयमध्यगतं वृषभमभिमन्त्र-
येत्। तत्र मन्त्राः। ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा।
मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा। वस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि
मा व्वाहि स्वाहा। ॐ यास्ते ऽअग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः। ताभिर्नो ऽअद्य
सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि। या वो देवाः सूर्य्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः। इन्द्राग्नी ताभिः
सर्वाभी रुचन्नो धत्त बृहस्पते॥ रुचन्नो धेहि ब्राह्मणेषुस्वः राजसु नस्कृधि। रुचं विश्वेषु
शूद्रेषु मयि धेहि रुचारुचम् ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः। स्वर्णः घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः
स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्य्यः स्वाहा। (अथ नीलश्राद्धम्)
ततोऽपसव्यम्। पितृपक्षाश्च ये केचिद्ये चाऽन्ये मातृपक्षकाः। गुरु-श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु
समुद्भवाः॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १॥ ये चाऽन्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्र-

लिखे हुए मन्त्रों से अभिमन्त्रण करे। आगे अपसव्य होकर पितृपक्ष इत्यादि में लिखे हुए २९ श्लोकों से नील श्राद्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दारविवर्जिताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ २ ॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः । कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ३ ॥ मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः दृष्टाश्च पृष्टाश्च कृतोपकाराः । देशान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ४ ॥ ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । अकालेऽपगता ये च ये चाऽन्धाः पङ्गवस्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ५ ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञातकुले मम । आमगर्भाश्च ये केचिदागता मुखगोचरे ॥ ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ६ ॥ वृषयोनिगता ये च कीटकादि पतङ्गकाः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ७ ॥ रौरवे नरके जाताः कुम्भीपाके च ये गताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ८ ॥ तप्ततैले च क्षीयन्ते यमलोके महाभये । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ९ ॥ पीड्यन्ते किङ्करैर्यै च सुदृढमिक्षुकाण्डवत् । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १० ॥ जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ ११ ॥ यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १२ ॥ कुष्ठा-ऽपस्मार-लूताभिर्जलोदर-भगन्दरैः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १३ ॥ गण्डमाला-पाण्डुरोगैः क्षयव्याधिमृताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १४ ॥ कारागृहे मृता ये च व्याघ्रभीतिहतास्तथा । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम् ॥ १५ ॥ चाण्डालैर्निहिता मार्गे आशौचशयने मृताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥ १६ ॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापा ब्रह्महारिणः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ १७ ॥ कुब्जाश्च बधिरा ये च पितृमातृकुलोद्भवाः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ १८ ॥ संसाररहिता ये च रौरवादिषु ये गताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ १९ ॥ वृक्षयोनिगता ये च तृण-गुल्म-लतास्थिताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २० ॥ देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्प्रेत-पिशाचकाः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २१ ॥ कृमि-कीट-पतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २२ ॥ रौरवे नरके जाताः कुम्भीपाके च ये गताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥ २३ ॥ आसुरीं योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २४ ॥ उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २५ ॥ महापातकजान् घोरान् नरकान् प्राप्य दारुणान् । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु० ॥ २६ ॥ महाप्रेता महाभागाः पूर्वप्रेतत्वसंस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २७ ॥ अगम्यागमनं चैव व्रतभङ्गकराश्च ये । ते सर्वे तृप्तिं गच्छन्तु नील० ॥ २८ ॥ जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः । ते सर्वे तृप्ति गच्छन्तु० ॥ २९ ॥ इति नीलश्राद्धम् ।

(अथ नीलपुच्छतर्पणम्) ततः सव्येनाऽऽचम्य पूर्वाभिमुखः कुशयवजलान्यादाय । ॐ ब्रह्माद्या देवताः सर्वाः ऋषयो मुनयस्तथा । सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १ ॥ असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिकास्तथा । दिक्पाला लोकपालाश्च ग्रहदेवाधिदेवताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु० ॥ २ ॥ विश्वेदेवास्तथाऽऽदित्याः साध्याश्चैव मरुद्गणाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥३॥ क्षेत्रपीठोपपीठादि नदा नद्यश्च सागराः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ४ ॥ पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव स-पर्वताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ५ ॥

(याने यवका पिण्ड २९ दे) करे, आगे सव्य होकर आचमन करे, पूर्व मुँह हो कर कुश, यव, जल लेकर 'ब्रह्माद्या'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ६ ॥
पिशाचा गुह्यकाः प्रेताः गणाः गन्धर्वराक्षसाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ७ ॥
दिवि भुव्यन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ८ ॥
शिवः शिवा तथा विष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीः सरस्वती । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ९ ॥
तपोधनश्च भगवान् व्यक्ताऽव्यक्तः परमेश्वरः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिता ॥ १० ॥
क्षेत्रौषधीर्लता वृक्षाः वनस्पत्यादिदेवताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ ११ ॥
कपिलः शेषनागश्च तक्षकोऽनन्त एव च । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १२ ॥
अनेकजलचरा जीवा असङ्ख्याताश्चानेकशः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १३ ॥
चतुर्दश यमाश्चैव ये चाऽन्ये यमकिङ्कराः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १४ ॥
सर्वे तु यज्ञराजानः पशवः पक्षिणस्तथा । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १५ ॥
स्वेदजोद्भिजजातीया अण्डजाश्च जरायुजाः । शान्तिदाः शुभदास्ते स्युर्नीलपुच्छेषु तर्पिताः ॥ १६ ॥

ततः कृताऽपसव्यो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः यवतिलमोटकवृषपुच्छं च गृहीत्वा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्यादि श्लोकों से नीलपुच्छतर्पण करे। बाद अपसव्य होके दक्षिण मुँह मोटक, तिल, जल से तीन-तीन अञ्जलि मूल में अञ्जलित्रयेण तर्पयेत्। ॐ स्वधा पितृमातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तृप्तये। मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चाऽन्ये पितृपक्षजाः॥ गुरु-श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १॥ ये चाऽन्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्रदारविवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ २॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः। कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ३॥ मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः दृष्टाश्च पृष्टाश्चकृतोपकाराः। देशान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि। ते सर्वे तृप्ति०॥ ४॥ ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ५॥ अकालेऽपगता ये च ये चाऽन्धपङ्गवस्तथा। सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ६॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञातकुले मम। आमगर्भाश्च ये केचिदागताः पुच्छगोचरे॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ७॥ वृषयोनिगता ये च कीट-काक-पतङ्गकाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ८॥ किङ्करैः पीड्यते य च सुतरामिक्षुकाण्डवत्। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ ९॥ जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील०॥ १०॥ यन्त्रमध्ये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः । कुष्ठा-ऽपस्मार-लूतादि-जलोदर-भगन्दरैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ ११ ॥ गण्डमाला-पाण्डुरोगैः क्षय-व्याधिमृताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १२ ॥ कारागृहे मृता ये च सिंह-व्याघ्रहताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नी० ॥ १३ ॥ चाण्डालैर्निहिता मार्गे अशौचशयने मृताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १४ ॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापाः स्वर्णहारिणः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १५ ॥ कुब्जाश्च बधिरा ये च मातृपितृकुलोद्भवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १६ ॥ संसारहिता ये च रौरवादिषु ये गताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ १७ ॥ सर्पयोनिगता ये च तृणगुल्मलतास्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १८ ॥ देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्प्रेतपिशाचकाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ १९ ॥ कृमि-कीट-पतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २० ॥ पश्वादियोनिजाता ये वृश्चिकादिषु ये गताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २१ ॥ आसुरीं योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २२ ॥ उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २३ ॥ महापातकजान् घोरान् नरकान् प्राप्य दारुणान् । ते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखे हुए श्लोकों से तर्पण करे। वृषभ दागने वाले को दगाई द्रव्य देवे। उत्सृष्टा ब्राह्मण लोग 'यत्किंचिद्विजने' इत्यादि सुनावें। अब वैतरणीदान कहते हैं। सब सामग्री के सहित कपिला गौका पूजन और ब्राह्मण का पूजन करे, तीन दफे।

सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २४ ॥ महाप्रेता महाभागाः प्रेतपूर्वे च ये स्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु० ॥ २५ ॥ अगम्यागमनं चैव व्रतभङ्गकराश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छे० ॥ २६ ॥ जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नील० ॥ २७ ॥ ये प्रेतभावमापन्ना ये चाऽन्ये श्राद्धवर्जिताः। वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां प्रीतिमुत्तमाम् ॥ २८ ॥ इति नीलपुच्छतर्पणम्। ततः कर्मकारमाहूयाऽभिवेतनं दद्यात्। उत्सृष्ट्वा ब्राह्मणान् श्रावयेत्। यत्किञ्चिद्विजने मयोत्सृष्टं तदन्यो नयेत्। न बाह्यां न चैतत्क्षीरं पातव्यं केनचित् किञ्चित् क्वचित्॥ रुद्राग्निबहुसर्पिष्कं पायसं ब्राह्मणान् भोजयेत्। (अथ वैतरण्यर्थं सोपकरणयुतां कपिलां दद्यात्) तद्यथा। ॐ सोपकरण-सवत्सकपिलगवे नमः। ॐ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य। इमां सोपकरणां सवत्सां कपिलां गां ददामीति द्विजकरे जलदानम्। जलेन देयद्रव्याऽभिषेचनम्। (वरणद्रव्यं गृहीत्वा) अद्याऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि कपिलागोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्र-

'इमां सोपकरणां' कहकर ब्राह्मण के हाथ पर जल दे और जल गौ के ऊपर छींटे। वरण व हाथ में जल इत्यादि लेकर 'अद्याशौचान्त' इत्यादि उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में देवे। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहे। अब कुश, तिल, यव, जल व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौ की पूछ थाम कर 'अद्याशौचान्त' इत्यादि उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में देवे, ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। बादमें ममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोप्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ततो गोदानम् । कुशादीन्यादाय, अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गप्राप्तिकामः इमां स-वत्सां कपिलां गां हेमशृङ्गीं रौप्यखुरां वस्त्रयुगच्छन्नां कांस्योपदोहां मुक्तालांगूलभूषितां रुद्रदैवत्याममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ स्वस्ति । अथ प्रार्थना । नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण पूजिता । सुरभी ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ यमद्वारे महाघोरे श्रुत्वा वैतरणीं नदीम् । तर्तुकामो ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ गावो मे चाऽग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ विष्णुरूप ! द्विजश्रेष्ठ ! मामुद्धर महीसुर ! । स-दक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ धर्मराजं च सर्वेशं वैतरण्याख्यधेनुकम् । सर्वान् प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ पुच्छं सङ्गृह्य धेन्वाश्च

मूलमें लिखे हुए श्लोकोंसे गौकी प्रार्थना करे और धर्मराज, वैतरणी धेनु (गौ) इत्यादिकी प्रदक्षिणा करके ब्राह्मण को निवेदन करे, गौ वो ब्राह्मण को आगे करके मूलमें लिखे हुए श्लोक से वैतरणी की प्रार्थना करे, अब ऊखका बना मजबूत लोहे का दण्ड

Kritikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सोनेके धर्मराज यह सब वैतरणीके नैर्ऋत्यकोणमें ले आवे। नावके ऊपर कपास, नमक, घी, खाँड़ यह सब रखे, इसके बाद

अग्रे कृत्वा तु वै द्विजम्। धेनुके! त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये। उत्तरणार्थं देवेशि! वैतरिण्यै नमोऽस्तु ते॥ इति सम्प्रार्थ्य, इक्षुदण्डमयं सुदृढं लोहदण्डसमन्वितम्। हेममयं यज्ञपुरुषम् एतत्सर्वं वैतरणीसमीपे कृत्वा। वैतरणीनैर्ऋत्यकोणे नौकामाहूय तत्रोपरि कार्पासं कृत्वा स-लवणं घृतखण्डं यज्ञपुरुषं च स्थापयेत्। ततो गोऽग्रे यजमानः पृष्ठे नौकां गोपुच्छं च गृहीत्वा ईशानद्वारेण पारं गच्छेत्। ततो गोदानसाङ्गता। कृतैतत्कपिलादानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। (अथाऽश्वदानम्)

गौको आगे करे। यजमान व नाव पीछे रहे, गौका पूछ थामकर यजमान वैतरणी के ईशान की तरफ पार होय। गोदानकी सांगता दक्षिणा संकल्प करके ब्राह्मण को दे, ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहें। अब घोड़ा का दान करे। पहिले घोड़ाका व

१–टि० दन्तैर्गजं घोटकमेव केशैर्गा चापि पुच्छैर्महिषीं तु शृङ्गैः। अथाऽऽविकां च स्तननाभिमध्ये उष्ट्रं गलैश्चापि वृषं च अंसैः॥ खड्गं तु चाग्रैस्तव चक्रमध्यैः केशैस्तु दासीं हृदयेन पत्नीम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण का ३ दफे पूजन करे। बाद कुशा इत्यादि लेकर और केश थामकर सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मण को दे। ब्राह्मण

प्रेत० अश्वाय नमः, ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य। त्रिकुशादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्योच्चावचदुर्गभूमिसन्तरणकामः अमुमश्वं सूर्यदैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। अद्य कृतैतदश्वदानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। (अथ महिषीदानम्) यमरूपायै महिष्यै नमः, ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य। त्रिकुशजलान्यादाय (अपसव्यम्) अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम दीर्घायुष्यैहिका-ऽऽमुष्मिक-यज्ञयाज्ञित्वपितृतारणात्मशुभविंशतिधेनुदानसमफलावाप्तिसर्वदोत्तमफलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्ध्यर्थम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गाद्युत्तमलोकनिवासार्थं यमदेवताप्रीत्यर्थं च इमां महिषीं सालङ्कारां रक्तमाल्यां रक्तवस्त्रावृतां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रदोहां हैमतिलकां सप्तधान्ययुतां घण्टाभरणां धेनूपस्करां यमदैवत्याम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। प्रार्थना। महिषी ब्रह्मसूता च

भा० १०७

'ॐ स्वस्ति' कहें। इसके बाद दक्षिणा सङ्कल्प करके ब्राह्मण को दे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहें।

अब महिषीदान कहते हैं। महिषी का व ब्राह्मणका ३बार पूजन करके हाथमें तीन कुशा जल लेके भैंसकी सींग पकड़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सङ्कल्प कहके ब्राह्मणके हाथमें दे, ब्राह्मण ॐ 'स्वस्ति' कहे। महिषी की प्रार्थना मूलमें लिखे हुए श्लोक से करे। बाद तीन कुशा जल दक्षिणा लेकर सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐस्वस्ति' कहे। अब शिविकादान कहते हैं। हाथमें तीन

लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। प्रार्थिताऽसि मया देवि ! यममार्गं निवारय ॥ महिषी यमरूपा त्वं विश्वामित्रविनिर्मिते !। पूजिता हर मे पापं सर्वदानफलप्रदे ! ॥ इन्द्रस्याप्सरसो देवे महिषीरूपविष्णुना। सर्वभाग्यप्रदे देवि दीर्घशृङ्गि ! नमोऽस्तु ते ॥ कृतैतन्महिषीदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। (अथ शिविकादानम्) अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य पापक्षयपूर्वकशिवविष्णुसायुज्यावाप्तिकामः इमां शिविकां यथोपस्करां आङ्गिरोदैवत्यां इष्टलोकावाप्तये अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। प्रार्थना। शिविका ते मया दत्ता यथाशक्त्या विभूषिता। द्विज ! त्वं प्रतिगृह्णीष्व वाञ्छितं तेन मे भव ॥ कृतैतच्छिविकादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। (अथ पृथ्वीदानम्) अद्या- १०८

कुशा तिल जल लेकर शिविका का दंडा थामकर सङ्कल्प करके ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। बाद शिविका की प्रार्थना मूलमें लिखे श्लोकसे करे। तीन कुशा जल दक्षिणा लेके सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मण को दे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtan Sharma Collection, Najafgarh

कहे। अब पृथ्वीदान कहते हैं। तीन कुशा, तिल, जौ, जल हाथमें लेकर सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मणके हाथमें दें। ब्राह्मण उस

ऽशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य समस्तपापक्षयपूर्वकषष्टिवर्षसहस्रमितं स्वर्गे शिवपुरनिवासकामो यथापरिमितां इमां भूमिं सस्योद्भवां स-वृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णुदैवत्याम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ब्राह्मणस्तु भूमिप्रदक्षिणां कुर्वन् प्रतिगृह्णीयात्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु॥ प्रार्थना॥ सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता॥ अनन्तसस्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले॥ भूमेः प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथाः॥ कृतैतद्भूमिदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐ स्वस्ति॥ [अथ द्वादशान्नोदककुम्भदानम्] अपसव्येन दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः। अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य क्षुधातृषानिवारणार्थम् इमानि द्वादशसान्नोदककुम्भानि अमुकाऽमुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यस्ते

भूमिकी प्रदक्षिणा करके ग्रहण करे। 'ॐ देवस्य त्वा'। 'द्यौस्त्वा ददातु' इस मन्त्रसे और आगे मूलमें लिखे हुए श्लोकसे प्रार्थना करे। तीन कुशा,यव, जल,दक्षिणा हाथमें लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। अब अप-

सव्यसे जल भरा १२ कुम्भ अन्नके सहित सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मणोंको देवे, ब्राह्मण लोग 'ॐ स्वस्ति' कहें। इति वृषोत्सर्गः ॥

अब उत्तम षोडशी कहते हैं कि–१२ महीने का १२ पिण्ड और १ पाक्षिकका (याने एकादशाह का), १ डेढ़ महीना पर (याने त्रिपाक्षिक), १ साढ़े पाँच महीने पर (याने ऊनषाण्मासिक), १ साढ़े ग्यारह महीने पर (याने ऊनाब्दिक) यह

मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ इति वृषोत्सर्गप्रयोगः समाप्तः ॥

(अथोत्तमषोडशी)

द्वादश प्रतिमासेषु पाक्षिकं च त्रिपाक्षिकम् ॥ न्यूनषाण्मासिकं पिण्डं दद्यान्न्यूनाब्दिकं तथा ॥ १ ॥ उत्तमं षोडशं चैतन्मया ते परिकीर्तितम् । श्रपयित्वा चरुं तार्क्ष्य ! कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ २ ॥ चत्वारिंशत् तथैवाऽष्टौ श्राद्धं प्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्य जातं विधानेन स भवेत् पितृपंक्तिभाक् ॥ ३ ॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थं कारयेत् षोडशत्रयम् ॥ एतत् श्राद्धविहीनश्चेत् प्रेतो भवति सुस्थिरम् ॥ ४ ॥ [अथैकादशाहाऽपात्रकश्राद्धप्रयोगः] तत्र मध्याह्ने शुचिराचान्तः, शुक्लद्विवासा

सब मिलाकर १६ पिण्ड हुए। इस प्रकार तीन षोडशीका ४८ पिण्ड करनेसे प्रेतत्वका नाश होता है। जो इस विधिसे करेंगे उनके पितर लोग पितरकी पंक्तिमें प्राप्त होंगे। पितृपंक्तिमें प्रवेशके वास्ते तीन षोडशी करे। जिसकी ३ षोडषी नहीं होती वह प्रेत सुस्थिर रहता है। प्रेतत्व छूटता नहीं। यह गरुड़ का वचन है। आगे एकादशाह प्रयोग कहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोपहरमें स्नान करके आचमन करे, दो सफेद वस्त्र पहिनकर गोबरसे लिपी हुई भूमिमें गौके मूत्रसे मंडल किये गये स्थान के बाहर 'ॐ भूम्यै नमः', ऐसा कहकर तीन दफे यव, जल, फूल, लेकर जमीन पर छोड़े। उसके ऊपर कुशासन बिछाकर

गोमयोपलिप्तायामपसव्यवत् कृतगोमूत्रमण्डलायां मण्डलाद्बहिः ॐ भूम्यै नमः, इति त्रिः यवपुष्पैः सम्पूज्य तस्योपरि कुशासनेषूपविश्य पूर्वाभिमुखः कुशोदकेन ॥ ॐ अपवित्र. पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः, इति मन्त्रेण श्राद्धीयद्रव्याण्यात्मानं च सिञ्चेत् ॥ आसनसमीपे तिलतैलेन घृतेन वा दीपं प्रज्वाल्य दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ श्वेतसर्षपान् वामहस्ते कृत्वा दक्षिणेनाऽऽच्छाद्य ॥ ॐ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराणपुरुषोत्तम !। इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः। ॐ प्राच्यै नम ॥ ॐ अवाच्यै नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः ॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥ ततः त्रिकुशतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकामः अद्यादीनि यथाकालं षोडशश्राद्धान्यहं

पूर्व मुँह बैठे। 'ॐ अपवित्रः' इस श्लोकसे कुशाका जल अपने ऊपर और सामग्री पर छिड़के और आसनके समीप तिल्ली के तेलका रक्षादीप जलाकर रखे। पीली सरसों बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे ढँककर 'ॐ नमो नमस्ते' इस श्लोक को पढ़े। बाद दाहिने हाथसे पूरब दक्षिण पश्चिम और उत्तर 'भूम्यै नमः' इस मन्त्रसे क्रमसे फेंके। तीन कुशा तिल जल लेकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिज्ञा सङ्कल्प पढ़े। फिर कुशा आदि लेकर सङ्कल्प पढ़कर सङ्कल्प करे। तीन दफे गायत्री पढ़े। अपसव्य होकर दक्षिण मुँह हो बाँया पैर मोड़कर मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करके आसन देवे। तब सव्य होकह पूर्व मुँह बैठकर छाताका व

करिष्ये ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्ति-हेतुकषोडशश्राद्धान्तर्गताऽऽद्यश्राद्धमहं करिष्ये ॥ त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत् ॥ अपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्मोटकादीन्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे इद-मासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति मोटकरूपासनं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुख उपविश्य ॥ ॐ छत्राय नमः ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य ॥ इदं छत्रं ददानि, इति द्विजकरे जलदानम् ॥ छत्रमभिषिच्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्याऽऽस्तरणकाम इदं छत्रमुत्तानमङ्गिरोदैवत्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्ति ॥ प्रार्थना। इहामुत्राऽऽतपत्राणं कुरु मे केशव प्रभो !। छत्रं

ब्राह्मणका तीन दफे पूजन करके ब्राह्मणके हाथमें जल देवे। ब्राह्मण 'ददस्व' कहे। छातेपर जल छिड़के। कुशा तिल जल व छाता लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। मूलमें लिखे हुए श्लोकसे प्रार्थना करे और तीन कुशा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर दक्षिणा ब्राह्मणको देवे। 'ॐ स्वस्ति' कहे। ब्राह्मण छाताका दंडा धारण करे। उसके बाद जूतापर अक्षत फूल चढ़ावे और ब्राह्मणको गंध, अक्षत, फूलसे तीन दफे पूजन करे। आगे 'इमे उपानहौ कहकर ब्राह्मणके

स्वत्प्रीतये दत्तं ममाऽस्तु च सदा शुभम्॥ कृतैतच्छत्रदानकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे, ॐ स्वस्ति। छत्रदण्डं धारयेत्॥ तत उपानद्भ्यां नमः॥ ब्राह्मणाय नमः, इति त्रिः सम्पूज्य॥ इमे उपानहौ ददानि॥ इति द्विजकरे जलदानम्॥ उपानहावभिषिच्य कुशादीन्यादाय। अद्य मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य तप्तबालुकाऽसि-कण्टकित-भूदुर्गसन्तरणकाम इमे उपानहावुत्तानाङ्गिरोदैवत्ये अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। प्रार्थना। उपानहौ प्रदत्ते मे कण्टकादिनिवारणे सर्वमार्गेषु सुखदे अतः शान्तिं प्रयच्छ मे। कृतैतदुपानद्दानप्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति। इत्युपानहावारोहयेत्॥ ततोऽपसव्यम्॥ दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः, इति वामावर्तेन तिलान् विकीर्य॥

हाथमें जल दे, ब्राह्मण 'ददस्व' कहे। जूतापर जल छिड़के। तीन कुशा जल लेकर सङ्कल्प करके ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे। मूलमें लिखे हुए श्लोकसे प्रार्थना करे। बाद तीन कुशा आदि लेकर,सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मणको देवे। ब्राह्मण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ॐ स्वस्ति' कहे। ब्राह्मणजूता पहिरे। फिर अपसव्य होकर दक्षिण मुख बायाँ पैर मोड़कर 'ॐ अपहता०' इस मंत्रसे बायीं तरफसे तिल छिड़के। 'आयन्तु नः' इस मंत्र को पढ़े। उसके बाद अर्घपात्र में दक्षिणको अग्र करके पवित्रा को रखे। 'ॐ

ॐ आयान्तु नः पितरः सोम्यासो ऽअग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तो-ऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ इति जपेत्॥ ततोऽर्घपात्रे अनखच्छिन्नं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। ॐ शँ य्योरभि स्त्रवन्तु नः, इत्यर्घपात्रे जलं दत्वा ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः॥ प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा॥ इत्यर्घपात्रे तिलान् प्रक्षिप्य गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्॥ अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा॥ ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा सम्बभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्याः॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवाः शꣳस्योना सुहवा भवन्तु॥ इति पठित्वा मोटकादीन्यादाय॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एष

शन्नो देवी' इस मंत्रसे अर्घमें जल देवे। 'ॐ तिलोऽसि' इस मंत्रसे अर्घमें तिल्ली डाले और चन्दन फूल चुपचाप छोड़े। अर्घ पात्रको बायें हाथपर रखे। दाहिने हाथसे पवित्रा निकालकर भोजनपात्रपर उत्तरको अग्र करके रखे। उसके ऊपर किंचित् दूसरे पात्रका जल देकर दाहिने हाथसे अर्घको ढाँके और 'या दिव्या' इस मंत्रको पढ़े। मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्घका थोड़ा जल पवित्राके ऊपर गिराकर पवित्राको अर्घमें रखकर पवित्राके सहित अर्घपात्रको आसनके बायीं तरफ उलट देवें। जब तक दक्षिणा संकल्पका समय न आवे तब तक अर्घपात्रको न हिलावे, न उठावे। श्राद्धके स्थानमें तिल छींटे।

हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इति पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत्। ततोऽर्घपात्रं सपवित्रकं पितृवामपार्श्वे पित्रो स्थानमसि, इत्यधोमुखं स्थापयेत्॥ तच्च दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत्॥ ततः श्राद्धदेशे तिलान् विकीर्य दर्भहस्तो भूतले प्रेतमावाहयेत्॥ तत्र मन्त्रः॥ इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम्॥ इति॥ अत्र स्त्रीश्राद्धेऽपि गतोऽसीत्येवमेव पठनीयमात्मत्वेनोद्देश्यत्वात्॥ ततो मोटकोपरि गन्धादि दद्यात्॥ मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्॥ ततो जलेनाऽऽसनभोजनपात्रसहितचतुष्कोणं मण्डलं कुर्यात्॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति॥ एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥ श्राद्धीयाऽन्नं किञ्चिदुद्धृत्य तिलघृतयुक्तं कृत्वा॥ ॐ इदमन्न-

कुशा हाथमें लेकर 'इमं लोकं' पढ़कर प्रेतका आवाहन करे। स्त्री-श्राद्धमें भी 'गतोऽसि' पढ़े। आत्मउद्देश्यसे आगे मोटकरूप आसनपर गन्धादि चढ़ावे। मोटक आदि लेकर सङ्कल्प करे। बाद 'यथा चक्रायुधो' इस श्लोकसे भोजनपात्रके सहित आसन के चारों तरफ घुमावे। श्राद्धके अन्नमें-से थोड़ा अन्न लेकर घी मधु मिलाकर 'इदमन्नं' कह करके दक्षिण तरफ कुशा पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रख दे। बाद गरम अन्न ताँबेके पात्रमें रख दोनों हाथोंसे उठाकर मनको स्थिर कर पितरका ध्यान करते हुए। मनुष्यके भरपूर भोजन भर परोसे। १ दोनियाँमें घी, १ दोनियाँमें जल रखे और 'मधु व्वाता' इस मंत्रसे दोनों हाथसे अन्नपर

मेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ॥ इति दद्यात् ॥ तत उष्णमन्नं ताम्रपात्रेण कराभ्यामादाय मनाक् स्थित्वा पितरं ध्यात्वा पुरुषतृप्तिक्षमं परिविष्यात् ॥ घृतं जलं चोपनीयमन्नं मधुनाऽभिघारयेत् । ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ मधु मधु मध्विति च जपेत्। व्यस्ताभ्यां पाणिभ्यां पात्रमालभ्य ॥ ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्। ॐ इदमन्नम्। इमा आपः। इदमाज्यम्। इदं कविरिति दक्षिणाङ्गुष्ठमन्नजलघृतादिषु निवेश्य। ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः, इत्यन्नोपरि तिलान् विकीर्य। मोटकादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत

शहद देवे और 'मधु मधु' ऐसा तीन दफे कहे और दोनों हाथ उलटकर भोजनपात्रको छुवे, पृथिवी ते पात्रं, इदं विष्णु० 'कृष्णकव्य' इसको पढ़े। बायाँ हाथ पात्रमें लगा रहे। दाहिने हाथके अँगूठाको अन्नमें, जलमें, घीमें, फिर अन्नमें लगावे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ॐ अपहता' इस मन्त्रसे अन्नपर तिल्ली छींटे। मोटकतिल जल लेकर सङ्कल्प करे। सव्य होकर प्रणव सहित व्याहृतिके

आद्यश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत्। सव्यं स-प्रणवां स-व्याहृतिकां गायत्रीं ॐ मधु व्वातेत्यादि ऋचं मधु मधु मध्विति च जपित्वा। ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु। इति पठित्वा श्राद्धकर्ता दर्भेष्वासीनः। स-प्रणवां स-व्याहृतिकां गायत्रीं मधु व्वाता—इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्विति च जपेत्। ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं य्याहि रोजेवामवाँ२ ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि व्विद्धच रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूँष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः। यो नो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा-दधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२ ऽओषतात्तिग्महेते। यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्द्ध्वो भव प्रतिविद्ध्याद्धच-स्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामि प्रमृणीहि शत्रून्।

गायत्री तीन दफे जपे और 'मधु व्वाता' जपे। 'मधु मधु' कहे। 'अन्नहीनं' इस श्लोकको पढ़े। श्राद्ध करने वाला कुशा पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठे । फिर गायत्री'मधु व्वाता' 'मधु मधु मधु' ऐसा कहे और 'कृणुष्वपाजः' रक्षोघ्नी पाँच मंत्र पढ़े । 'सहस्रशीर्षा' १६मंत्र, 'आशुः शिशान' १२ मन्त्र पढ़े । 'नमस्तुभ्यं' इस श्लोकको पढ़े । अपसव्य होकर भोजनपात्रके समीपमें तीन कुशा जल छींट

इति रक्षोघ्नमन्त्रान् पठित्वा । भूमौ तिलान् विकीर्य । ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असुँ य ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु । ॐ सहस्रशीर्षाषोडशमन्त्रान् पुरुषसूक्तम् । ॐ आशुः शिशानः १२ मन्त्रान्, अप्रतिरथं च जपेत् । नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! । नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् । अपसव्यम् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधावास्तृतदक्षिणाग्रकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य सर्वप्रकारमन्नं तिलघृतसहितं जलेनाऽऽप्लाव्य गृहीत्वा । ॐ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परांगतिम् । इति मन्त्रेण कुशोपरि तदन्नं विकिरेत् । ततः सव्यम् आचम्य हरिं स्मृत्वा । अपसव्यं कृत्वा । उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं हस्तैकप्रमाणं दक्षिणप्रवणं चतुरङ्गुलोच्छ्रितं स्थानं निर्माय तन्मध्ये वामहस्तेन दर्भपिञ्जुलीमादाय तन्मूलेन वामान्वा-

कर रखे । सम्पूर्ण प्रकारके अन्न जल तिल घृतके सहित १ दोनियाँमें लोकर उस दोनियाँको 'अनग्दिग्धा०' इस मंसे कुशाके ऊपर रख दे । उसके बाद सव्य होकर आचमन करे । विष्णुका ध्यान करे । अपसव्य हो भोजनपात्रके समीपमें १हाथ लम्बी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौड़ी ४ अँगुलकी ऊँची दक्षिणको ढालू ऐसी १ वेदी बनावे। उस वेदीके मध्यमें बाँयें हाथसे कुशा एक जुट्टा लेकर दाहिने हाथसे बायाँ हाथ लगा हुआ रहे ऐसी १०अंगुल की १रेखा दक्षिणाग्र 'अपहता' इस मंत्रसे खींचे। कुशाका जुट्टा उत्तर तरफ

रब्धदक्षिणकरेण प्रादेशमात्रं लिखेत् । ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षꣳसि वेदिषदः । इति दर्भ-

पिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि निःक्षिपेत् । तदुपरि । ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। पराऽपुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँ ल्लोकान्प्रणुदात्यस्मात् । इति रेखोपरि उल्मुकं भ्रामयित्वा दक्षिणतः क्षिपेत् । रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनकुशान् दक्षिणाग्रानास्तीर्य सव्यं कृत्वा । ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः। इति त्रिर्जपेत् । ततोऽपसव्यम् । पर्णपुटके तिलजलगन्धपुष्पयुतं वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकादिकमादाय । ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इति कुशमध्ये अवनेजनजलं किञ्चिद्द्यात् । किञ्चिदवशेषयेदग्रे

फेंके। उस रेखाके ऊपर 'ॐ ये रूपाणि' इस मंत्रसे अंगार घुमाकर दक्षिणकी तरफ रखे, बाद रेखाके ऊपर मूलके सहित जरा-सा मूल कटा हुआ तीन कुशा दक्षिणाग्र बिछावे। सव्य होकर 'ॐ देवताभ्यः' इस मंत्रको तीन दफे पढ़े। अपसव्य होकर पलासके दोनियेमें तिल जल चन्दन फूल डालकर बायें हाथमें लेवे, दाहिने हाथमें मोटक तिल जल लेकर संकल्प पढ़करवेदीपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो कुशा बिछाया है उसके मध्यमें आधा जल गिरावे। आधा जलके सहित दोनियाँ आगे रखे। उसके बाद श्राद्धका शेष(बचा) जो अन्न सम्पूर्ण व्यञ्जन तिल शहद घी सब मिलाकर बेलके बराबर १ पिंड बनावे, उसमें घी शहद लगाकर दाहिने हाथमें

निधाय । ततः श्राद्धशेषमन्नं सर्वव्यञ्जनतिलमधुघृतयुतमेकीकृत्य एतेन बिल्वप्रमाणं पिण्डं निर्माय । घृतमध्वभिघारितं कृत्वा दक्षिणहस्तेनादाय मोटकादींश्चादाय । ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत अद्याश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इति कुशोपरि अवनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणकरेण पिण्डं दद्यात् । आस्तृतदर्भमूले करं प्रोक्ष्य । सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ अपसव्यम् ॥ ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व । इति पठित्वा वामावर्तेनोदङ्मुखो भूत्वा मनाक् स्थित्वा श्वासं नियम्य तेनैव यथासुखं पर्यावर्त्तयन् पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन् । ॐ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिष्ट । अवनेजनपात्रमादाय वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय । अद्यामुकगोत्रा पितरमुकप्रेत आद्यश्राद्धे पिण्डेऽत्र

मोटक तिल जल और पिंड लेकर संकल्प पढ़कर-वेदीपर रखे। कुशाके जड़में हाथ पोंछे। सव्यहोकर आचमनकरे,भगवान्का स्मरण करे, अपसव्य होकर बायीं तरफसे उत्तर मुँह हो अत्र पितर इस मंत्रको पढ़कर मनको स्थिर करके श्वाँस खींचे, सुखके सहित मुँह घुमाते हुए पितरको भास्वर मूर्तिका ध्यान करते हुए 'ॐ अमीमदन्त' इस मन्त्रको पढ़े, दक्षिण को श्वाँस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोड़े, अवनेजन का बचा हुआ जल वो मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़के पिण्ड के ऊपर जल चढ़ावे। इसके बाद नीवी को त्याग दे, सव्य होके आचमन करे, विष्णु का ध्यान करे, अपसव्य होकर बाँये हाथ से सूत लेकर दाहिने हाथ से थामकर

प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात्। ततो नीवीं विस्रंस्य। सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा। अपसव्यम्। वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा, ॐ एतत्ते पितर्वासः। इति पिण्डोपरि सूत्रं धृत्वा मोटकादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत अद्यश्राद्धपिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इत्युत्सृजेत्। ततस्तूष्णीं पिण्डे गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि दद्यात्। ततः पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत्। ॐ शिवा आपः सन्तु। इति जलम्। सौमनस्यमस्तु। इति पुष्पम्। अक्षतं चारिष्टमस्तु। इति तण्डुलान् भोजनपात्रे दद्यात्। ततो मोटकादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम्। इत्यक्षय्योदकं दद्यात्। ततः सव्यं

पिण्ड पर 'एतत्ते पितर्वास' इस वाक्य से चढ़ावे, मोटक आदि लेकर संकल्प पढ़कर जल छोड़ दे। उसके बाद चुपचाप पिंडपर चन्दन फूल धूप दीप पान सोपाड़ी दे और पिंड से बचा हुआ अन्न पिंडके समीप में रखे। बाद 'शिवा आपः' इससे जल, 'सौमनस्य' इससे फूल, 'अक्षतं' इससे अक्षत भोजनपात्र पर दे, मोटक तिल जल लेकर संकल्प पढ़कर अक्षय्योदक दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके बाद सव्य होकर पूरब मुँह अँजुलि करे। सुन्दर मन से दक्षिण दिशाको देखे, 'अघोराः०' इसको पढ़े, पिंडके ऊपर पूर्वाग्र जल धारा देना—यह चलन है। पूर्व मुँह होकर 'गोत्रन्नो' यह पढ़कर पितृ से आशीर्वाद माँगे। अपसव्य हो पवित्र के

कृत्वा प्राङ्मुखः कृताञ्जलिस्तन्मनाः सुमनाः दक्षिणां दिशं पश्यन्। अघोरः पिताऽस्तु, इति पठेत्। अत्र समाचारात् पूर्वाभिमुखः पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्। इत्याचारः। ततः पूर्वाभिमुखः ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु। इति पठेत्। ततोऽपसव्यम्। सपवित्र-कुशत्रयं पिण्डोपरि दक्षिणाग्रं धृत्वा पुटके जलं गृहीत्वा। ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीकालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितरम्। इति दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात्। ततो नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत्। पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत्। ततोऽर्घपात्रमुत्तानी-कृत्य मोटकादीन्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतदाद्यश्राद्ध-

सहित तीन कुशा पिंड के उपर दक्षिणाग्र रखे, उसपर जलधारा या पय (दूध) धारा दे। उसके बाद झुककर पिंड को सूंघ कर उठावे, पिंडके नीचेका कुशा और अङ्गार जो घुमाकर दक्षिणमें रखा हो सो दूसरे अग्निमें डाले, अर्घपात्रको उलट दे। मोटक तिल जल दक्षिणा लेकर सङ्कल्प पढ़कर ब्राह्मणको दे, ब्राह्मण 'ॐस्वस्ति' कहे। उसके बाद दाहिने हाथसे ब्राह्मण

Srikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का दाहिना हाथ थामकर शय्या इत्यादि का स्पर्श करावे, ब्राह्मण शय्या इत्यादिको स्पर्शकर शय्या पर घड़ी भर विश्राम करे, सव्य होकर आचमन करे, 'ॐ देवताभ्यः' इस मंत्रको तीन दफे पढ़े, अपसव्य होकर दोनों हाथसे श्राद्धका रक्षादीप

प्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ स्वस्ति । ततो दक्षिणपाणिना पात्रब्राह्मणस्य दक्षिणपाणिं गृहीत्वा शय्याऽऽसनमञ्जनं कङ्कतिकाञ्चाऽर्चयेत् । ब्राह्मणश्चाऽञ्जनं कङ्कतिकां चादाय शय्यामाक्रम्य मुहूर्त्तं विश्रामयेत् । सव्यं कृत्वाऽऽचम्य । ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत् । अपसव्यम् । पाणिभ्यां श्राद्धीयदीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य । सव्येनाऽऽचम्य श्राद्धसम्पूर्णकामः विष्णुं स्मरेत् । ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः । इति एकादशाहप्रयोगः । [अथ मासिक-श्राद्धप्रयोगः] आचम्य, प्राणानायम्य । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ कुशेन श्राद्धीयद्रव्याण्यात्मानं च सिञ्चेत् ॥ रक्षादीपं

बुझावे, हाथ पैर धोवे, सव्य होकर आचमन करे, श्राद्ध की पूर्णताके वास्ते 'प्रमादात्' इस श्लोकको पढ़कर विष्णुका ध्यान करे। [इति भाषाटीकायां एकादशाहप्रयोगः]। अब मासिक श्राद्धको कहते हैं। आचमन, प्राणायाम करके पवित्री अनामिकामें पहिने। 'अपवित्रः' इस श्लोकसे अपने ऊपर और श्राद्ध सामग्री पर जल कुशासे छिड़के, रक्षादीप जलाकर रखे, सफेद

Kritikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरसों बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे ढँककर 'नमो नमस्ते' यह श्लोक पढ़े। बाद उस सरसोंको दाहिने हाथ से पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर भूमि पर फेंके, शेष बचे सो कमरके बाँयें तरफ खोंस ले (किसी का मत है) इसको नीवी बन्धन

प्रज्वाल्य ॥ गौरसर्षपान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ नमो नमस्ते गोविन्द ! पुराणपुरुषोत्तम !। इदं श्राद्धं हृषीकेश ! रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥ ॐ अवाच्यै नमः ॥ ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः ॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥ ततो वामे नीवीबन्धन-मित्याचारः ॥ ॐ यव-पुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः, इति त्रिः सम्पूज्य ॥ त्रिकुशतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुक-षोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रथममासिकश्राद्धमहं करिष्ये। (ततः एकादशमासाभ्यन्तरेऽधिमासपाते चेत् षोडशपदस्थाने सप्तदशपदं तत्र प्रयोज्यम्) एकतन्त्रेण सङ्कल्पः—(अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्ति हेतुकषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रथममासिक - त्रिपाक्षिक - द्वितीयमासिक - तृतीयमासिक - चतुर्थमासिक - पञ्चममासिकोनषाण्मासिक -

कहते हैं, आगे यव फूल लेकर 'श्राद्धभूम्यै' कहकर तीन दफे जमीन पर डाले। तीन कुशा तिल जल लेकर प्रतिज्ञा सङ्कल्प पढ़े। यदि उस साल में अधिक महीना होनेवाला हो तो षोडश श्राद्ध जो सङ्कल्पमें वाक्य है उसकी जगहमें सप्तदश श्राद्ध जोड़ देना और सालभर का एक साथ संकल्प करना हो तो प्रथम मासिकसे लेकर द्वादश मासिक तक उच्चारण करे और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीच में अधिमास हो तो एकादश मासिकके बाद द्वादश मासिक, उसके बाद ऊनवार्षिक तब त्रयोदश-मासिक का उच्चारण करे। यह क्रम है। तीन दफे गायत्री पढ़े। 'ॐ देवताभ्यः' इसको तीन दफे पढ़े। उसके बाद अपसव्य हो, मोटक तिल जल

षाण्मासिक–सप्तममासिका–ऽष्टममासिक–नवममासिक–दशममासिकैकादशमासिकोनवार्षिक–द्वादश-मासिकश्राद्धानि (एकतन्त्रेणाऽहं करिष्ये) अधिमासपाते एकादशमासिकाऽनन्तरं द्वादशमासिकं (तत ऊनवार्षिकं ततस्त्रयोदशमासिकं श्राद्धमिति क्रमः) ततस्त्रिर्गायत्रीं जपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिर्जपेत्। ततो-ऽपसव्यम्। मोटक-तिल-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धे इद-मासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् (वा एकतन्त्रेण सङ्कल्पः। तद्यथा। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिक-त्रिपाक्षिक--द्वितीयमासिक--तृतीयमासिक--चतुर्थमासिक - पञ्चममासिक-ऊनषण्मासिक--षाण्मासिक--सप्तममासिक -- अष्टममासिक -- नवममासिक -- दशममासिकैकादशमासिक-ऊनवार्षिक-द्वादशमासिकश्राद्धेषु इमानि आसनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्) इत्युत्सृजेत् ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाꣳसि व्वेदिषदः। इति वामावर्तेन श्राद्धदेशे तिलान् विकीर्य। ॐ

ले 'अद्यामुकगोत्र' पढ़कर आसन दे। एक सङ्ग सब महीनेका सम्पूर्ण सङ्कल्प करना हो तो पहले कहे मुताबिक करे। 'ॐ अपहता' मन्त्र से बाँयी तरफसे श्राद्धस्थानमें तिल छिड़के 'ॐ आयन्तु नः' इस मन्त्र को पढ़कर आवाहन करे, दोनियाँ में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्षिण को अग्र करके पवित्र रखे 'ॐ शन्नो देवी' से जल डाले 'ॐ तिलोऽसि' से तिल्ली डाले, चन्दन फूल चुपचाप डाले, वह अर्घपात्र बाँयें हाथ पर रखे, उसमें की पवित्री भोजनपात्र पर उत्तराग्र रखे। उसके ऊपर थोड़ा दूसरे पात्र का जल दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्न्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ इति मन्त्रेणावाह्य ॥ ततः पुटकादौ दक्षिणाऽग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शँ य्योरभिस्त्रवन्तु नः । इति पुटके जलं क्षिपेत् । ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितॄँल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा, इति पुटके तिलान् क्षिपेत् ॥ गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा, दक्षिणेन पाणिना पुटकमाच्छाद्य इदं मन्त्रं पठेत् ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः पयसा संबभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योना सुहवा भवन्तु ॥ मोटक-तिल-जलान्यादाय ॥ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत-प्रथममासिकश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पवित्रोपरि अर्घजलमु-

अर्घपात्र को दाहिने हाथ से ढँके 'ॐ या दिव्या' यह पढ़े, बाद मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर पवित्री पर अर्घ का जल थोड़ा दे, पवित्री उठाकर अर्घ में रखकर आसन के बाँयीं तरफ 'पित्रे स्थानमसि' का उच्चारण कर उलट दे, जब तक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्षिणा का समय न आवे तब तक उलटा हुआ अर्घ को न हिलावे, न उठावे। उसके बाद चुपचाप चटरूप आसन पर चन्दन फूल धूप दीप सोपाड़ी जनेऊ वस्त्र चढ़ावे। मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करे, उसके बाद जल लेकर आसन

त्सृजेत् ॥ ततः पवित्रसहितमर्घपात्रमासनवामपार्श्वे ॐ पित्रे स्थानमसि, इति न्युब्जीकुर्यात् ॥ ततो दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत् ॥ ततस्तूष्णीं गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि दद्यात् ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ ततः आसनस्य भोजनपात्रसहितस्य चतुर्दिशं मण्डलं कृत्वा ॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ॥ एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ ततो श्राद्धीयान्नाग्रभागं घृतव्यञ्जनतिलयुतं पुटकादौ कृत्वा ॐ इदमन्नम् एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ॥ इति कुशोपरि दक्षिणत उत्सृजेत् ॥ ततस्ताम्रपात्रादिस्थितमन्नं हस्ताभ्यामादाय पितरं ध्यायन् भोजनपात्रे उपनयेत् ॥ पुटके घृतं जलं चोपनीय ॥ अन्नोपरि हस्तद्वयेन गृहीतपात्रेण मधु दत्वा ॥ ॐ मधु

भोजनपात्र के चारों तरफ घुमावे। 'यथा चक्रायुधो' इस श्लोक से बाद श्राद्ध के लिये जो पाक बनाया है उसके ऊपर से अन्न ले घृत शहद तिल मिलाकर १ दोनियामें रखे 'ॐ इदमन्नं' कहकर दक्षिण तरफ कुशा पर रख दे, बाद ताँबेके बर्तनमें अन्न रखे दोनों हाथ से उठाकर पात्र पितर का ध्यान कर भोजनपात्र पर परोसे, और १ दोनिया में घी १ दोनिया में जल

Kartikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखे और दोनों हाथसे शहद लेकर 'ॐ मधुव्वाता' इस मन्त्र से अन्नके ऊपर गिरावे। उसके बाद दोनों हाथ भोजनपात्र पर उलटे और 'पृथिवी ते पात्रं' 'इदं विष्णुकव्य' इसको पढ़े, बाँया हाथ भोजनपात्र में लगा रहे, दाहिने हाथके अँगठा से

व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमां ऽअस्तु सूर्य्यः॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ मधु मधु मध्विति च जपेत्॥ ततो व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यामन्नपात्रमालभ्य। ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा॥ ॐ इदं विष्णु-र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्॥ इति पठित्वा॥ ॐ इदमन्नम्॥ ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्॥ ॐ इदं कविरिति पुनरन्ने। दक्षिणाङ्गुष्ठं निवेश्य॥ ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिलान् प्रक्षिप्य मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठ-ताम्॥ इत्युत्सृजेत्॥ ततः सव्यं गायत्रीं त्रिर्जपित्वा॥ ॐ मधु व्वाता, मधु मधु मध्विति च

'इदमन्नं' कहकर अन्न में, 'इमा आपः' कहकर जल में, 'इदमाज्यं' कहकर घीमें, 'इदं कविः' कह कर फिर अन्न में लगावे 'ॐअपहता' इस मन्त्रको पढ़ कर अन्न पर तिल छिड़के, मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करे। उसके बाद सव्य होकर ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दफे गायत्री पढ़े—'ॐ मधुवाता' ३ ऋचा 'ॐ मधु मधु' यह पढ़े। 'अन्नहीनं' इस श्लोकको कहे, बाद कुशापर बैठे फिर ३
जपेत् ॥ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ॥ ततः कुशेषूपविश्य ॥
पुनर्गायत्रीं ३ मधु व्वाता ३ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ रक्षोघ्नमन्त्रान् जपेत् ॥ तद्यथा ॥
ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथिवीं य्याहि राजे वामवाँ२ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिं
द्रूणानोस्तासि विद्धय रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशु-
चानः ॥ तपूँष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ ॐ प्रति स्पशो
व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा
किष्टे व्व्यथिरादधर्षीत ॥ ३ ॥ ॐ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२॥ ऽओषतात्तिग्महेते ॥
यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तन्धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रति विद्ध्या-
द्ध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥
अपसव्यम् ॥ भूमौ तिलान् त्रिकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥
असुँ य ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० १६ मन्त्रपुरुष-
दफे गायत्री 'मधुवाता' 'ॐ कृणुष्व पाजः' रक्षोघ्नी ५ मंत्र पढ़े, अपसव्य होकर जमीन पर तिल छींटे। 'उदीरता' यह पितृ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का मंत्र पढ़े। 'सहस्रशीर्षा १६ मन्त्र, आशुः १२ मन्त्र' अप्रतिरथ सूक्त 'नमस्तुभ्यं' यह सब पढ़े। उसके बाद भोजनपात्र के समीप में ३ कुशा से जल छींटे, वहीं पर तीनों कुशा भी रख दे। और एक दोनियाँ में अन्न घृत व्यञ्जन तिल जल लेकर

सूक्तम्। ॐ आशुः शिशानः १२ मन्त्रान् अप्रतिरथं च पठेत्। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्ते-ऽनेकचक्षुषे !। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः। इति पठेत्। ततः उच्छिष्टसन्निधा-वास्तृतकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य पुटके घृतव्यञ्जनतिलयुतमन्नं कृत्वा वारिणाऽऽप्लाव्य। अनग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्रदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम्। इति तदन्नं कुशोपरि विकिरेत्। ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा। अपसव्यम्। पिण्डार्थं वेदिकां निर्माय। नन्मध्ये वामहस्तोपेतदक्षिणहस्तगृहीतदर्भपिञ्जुलीमूलेन प्रादेशमात्रिकां रेखां कुर्यात्। ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः। दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत्। ततो रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा। ॐ बे रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात्। अङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत्। ततो रेखोपरि उपमूल-

'अनग्निदग्धा' पढ़कर कुशाके ऊपर रख दे। सव्य होकर आचमन करे। विष्णु का ध्यान करे, अपसव्य हो पिण्डा के लिये पहिले की तरह की १ वेदी बनाकर उसपर कुशा की जड़ से १० अंगुल की रेखा 'ॐ अपहता' इस मंत्र से दे। कुशा को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर में फेंके, उस रेखा पर 'ये रूपाणि' इस मन्त्र से अंगार घुमाकर, दक्षिणमें रखे, रेखा पर दक्षिणाग्र ३ कुशा जरा-सा जड़ कटा हुआ बिछावे। सव्य होकर 'ॐ देवताभ्यः' इसको ३ दफे पढ़े। अपसव्य हो, १ दोनियाँ में जल तिल चन्दन

सकृल्लूनकुशत्रयं दक्षिणाग्रमास्तीर्य । सव्यम् । देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः । त्रिर्जपेत् । ततोऽपसव्यम् ॥ पुटके तिलजलगन्धपुष्पाणि कृत्वा मोटकादीन्यादाय । ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इति कुशोपरि दद्यात् । ततस्तिलघृतमधुयुतेनाऽन्नेन पिण्डं कृत्वा मधुघृताभ्यामभिघार्य्य दक्षिणहस्तेन मोटकादीन्यादाय । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इति वामान्वारब्धदक्षिणहस्तेनाऽवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात् । ततो दर्भमूले करं प्रोक्ष्य । सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा । अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व ।

फूल रखे, मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करके दोनिया का आधा जल वेदी के कुशा पर दे, आधा जल सहित दोनिया आगे रखे, उसके बाद तिल शहद घीके सहित अन्न लेकर पिण्ड बनावे, घी शहद लगावे, पिण्ड मोटक तिल जल दाहिने हाथ में लेकर सङ्कल्प पढ़कर कुशा पर रखे और पिण्डके नीचे वाले कुशाकी जड़ में हाछ पोंछे। सव्य होकर आचमन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुका ध्यान करे। अपसव्य हो दक्षिण मुख होकर 'ॐ अत्र पितर्' इस मन्त्रको पढ़े। उत्तर मुँह हो श्वाँस खींचे, भास्वर-मूर्ति पितरका ध्यान करके मुँह घुमाते हुए 'ॐ अमी मदन्त' पढ़े, दक्षिणको श्वाँस छोड़े, उसके बाद अवनेजनसे बचा हुआ

इति उत्तराभिमुखः श्वासं नियम्य पितरं भास्वरमूर्तिं ध्यायन् पर्यावर्तयन्। ॐ अमी मदन्त पिता यथाभागमावृषायिष्ट, इति पठेत्। ततोऽवनेजनपात्रं दत्तावशिष्टजलयुतं वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्तेन मोटकतिलजलान्यादाय। ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात्। ततो नीवीं विस्रंस्य। सव्यमाचम्य। अपसव्यम्। वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणहस्तेनादाय उभाभ्यां हस्ताभ्यां पिण्डोपरि एतत्ते पितर्वासः। इति सूत्रं धृत्वा मोटकादीन्यादाय। ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत प्रथममासिकश्राद्धे पिण्डे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति सूत्रमुत्पृजेत्। ततस्तूष्णीं गन्धपुष्पादिकं पिण्डे दद्यात्। पिण्डशेषान्नं पिंडसमीपे विकिरेत्। ॐ

दोनियाँका जल और मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़कर दोनियाका जल पिण्ड पर दे। उसके बाद नीवीको त्याग करे। सव्य होकर आचमन करे। अपसव्य होकर बाँये हाथ से सूत उठाकर दाहिने हाथ से थामकर दोनों हाथ से पिण्ड के ऊपर 'एतत्ते पितर्वासः' कहकर चढ़ा दे। मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करके त्याग करे। बाद चुपचाप पिण्ड के ऊपर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्दन, फूल, पान, इत्यादि चढ़ावे और पिंडसे बचा हुआ अन्न पिंडके समीपमें रखे। बाद 'शिवा आपः' इससे जल, 'सौमनस्य'से पुष्प, 'अक्षतं चारिष्टं'से अक्षत—यह सब भोजनपात्रपर डालकर मोटक, तिल, जल लेकर सङ्कल्प पढ़के अक्षय्योदक-

शिवा आपः सन्तु ॥ इति जलम् ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ इति पुष्पम् ॥ ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु ॥ इति तण्डुलान् भोजनपात्रोपरि क्षिपेत् ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ॥ इत्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा ॥ ॐ अघोरः पिताऽस्तु ॥ इति दक्षिणां दिशं पश्यन् पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ ततः पूर्वाभिमुखो ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु ॥ मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ सन्त्वेताः सत्या आशिषः ॥ इति प्रार्थनां कुर्यात् ॥ ततः अपसव्येन पिण्डोपरि सपवित्रान् कुशान् धृत्वा ॥ ततः पुटकादिस्थजलं गृहीत्वा ॥ ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत

दान दे। सव्य होकर 'ॐ अघोरः पिताऽस्तु' ऐसा कहकर पिंडके ऊपर पूर्वाग्र जलधारा देवे, यह चलन है। उसके बाद पूरब मुँह होकर 'गोत्रन्नो' यह पढ़के पितृसे आशीर्वाद माँगे (अर्थात् प्रार्थना करे) बाद अपसव्य होकर, पवित्राके सहित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन कुशा दक्षिणाग्र पिण्डके ऊपर रखे, उस पर १ दोनियामें जल या दूध लेकर 'ऊँ ऊर्ज्जं' पढ़कर दक्षिणाग्र जलधारा या पयधारा दे। नम्र होके पिण्ड को सूँघकर उठावे और पिण्ड के नीचे का कुशा व अङ्गारा को दूसरी अग्नि में डाले,

मे पितरम्। इति कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात्॥ ततो नाम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत्॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुल्कं च वह्नौ क्षिपेत्॥ अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य मोटकादीन्यादाय॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्प्रथममासिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे॥ इति दक्षिणां दद्यात्॥ सव्यमाचम्य॥ ॐ देवताभ्यः० इति त्रिर्जपेत्॥ ततोऽपसव्यम्॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां दीपं निर्वाप्य॥ हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य॥ सव्यमाचम्य॥ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ॐ विष्णवे नमः, इति त्रिः॥ एवं त्रिपाक्षिकश्राद्धमपि कर्त्तव्यम्। तच्च मासिकवत्।

'अर्घपात्र को सीधा करके मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प उच्चारण करके दक्षिणा दे। सव्य होकर आचमन करे। 'ॐ देवताभ्यः' इस मन्त्र को तीन दफे पढ़े। उसके बाद अपसव्य हो दोनों हाथ से रक्षादीप को बुझावे। हाथ पैर धोवे। सव्य होकर आचमन करे। 'प्रमादात्' इस श्लोक को पढ़कर श्राद्धपूर्ति के वास्ते विष्णु का स्मरण करे। इसी प्रकार से त्रिपाक्षिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-Grant-2

इत्यादि श्राद्ध आगे सङ्कल्प में लिखे हुए क्रम से करना। इति भाषाटीकायां मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥

प्रेत० अब सपिण्डन श्राद्ध को कहते हैं। आचमन, प्राणायाम करके 'अपवित्रः' इससे अपने और श्राद्ध की सामग्री पर कुशा भा

एवमेव द्वितीयमासिक-तृतीयमासिक--चतुर्थमासिक--पञ्चममासिक-ऊनषाण्मासिक-षाण्डमासिक-सप्तम-

१३५ मासिक-अष्टममासिक--नवममासिक--दशममासिक--एकादशमासिक - ऊनवार्षिक - द्वादशमासिक-श्राद्धेषु तत्तत्पदप्रक्षेपेण प्रयोगो ऊह्यः ॥ अधिकमासपाते एकादशमासिकानन्तरं द्वादशमासिकं तत ऊनवार्षिकं ततस्त्रयोदशमासिकं श्राद्धमिति क्रमः ॥ इति मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ सपिण्डनश्राद्धप्रयोगः

आचम्य। प्राणानायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्ड-रीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः, इत्यात्मनं आद्धसामग्रीं च प्रोक्षयेत् ॥ ततः आसनसमीपेषु तिलतैलेन पञ्चदीपान् स्थापयेत् ॥ पीतसर्षपान् गृहीत्वा, दिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ ॐ नमो नमस्ते० ॥ ॐ प्राच्यै नमः ॥ ॐ अवाच्यै नमः। ॐ प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ उदीच्यै नमः। ॐ अन्तरिक्षाय १३५

से जल छिड़के और तिल्ली के तेल का ५ रक्षादीप जलाकर पाँचों आसन के पास रखे अथवा १ दीप रखे। बाद पीली सरसों बाँये हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढँककर 'नमो नमस्ते' पढ़े। बाद दाहिने हाथ से पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर भूमि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर सब जगह छींटे । बाद में फूल लेकर तीन दफे जमीन पर छोड़े । बाद तीन कुशा तिल जल लेकर प्रतिज्ञा सङ्कल्प पढ़े । अधिमास यदि हो तो पहले की तरह जोड़ लेना । आगे तीन दफे गायत्री पढ़े और 'देवताभ्यः' यह भी तीन दफे पढ़े, बाद

नमः । ॐ भूम्यै नमः ॥ ततो यव, पुष्पैः, ॐ श्राद्धभूम्यै नमः ॥ इति त्रिः सम्पूज्य ॥ कुशत्रय-तिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुक-षोडशश्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धमहं करिष्ये । (अधिमासपाते चेत् षोडशपदस्थाने सप्तदशपदं प्रयोज्यम्) गायत्रीं त्रिर्जपेत् ॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत् ॥ ततो देवश्राद्धार्थोपकल्पितासनादिदेशमागत्यो-दङ्मुखोपविश्य कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण-निमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः ॥ इति पश्चिमदिशि विश्वेदेवासने पूर्वाग्रं कुशत्रयरूपं स-जल-यवप्रोक्षितमुत्सृजेत् ॥ ॐ विश्वान् देवानहमावाहयिष्ये ॥ ॐ विश्वे देवास ऽआगत शृणुता म ऽइमꣳ हवम् ॥ एदं बर्हिर्निषीदत ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ॥ इति यवान् विकीर्य ॥ ॐ विश्वेदेवाः शृणुते मꣳ हवं मे ये ऽअन्तरिक्षे ये ऽउप द्यविष्ठ ॥ ये ऽअग्नि-

विश्वेदेव के आसन के पास उत्तर मुँह बैठे, तीन कुशा यव जल लेकर सङ्कल्प पढ़कर विश्वेदेव को आसन दे और विश्वेदेव का आवाहन 'विश्वे देवास' इस मन्त्र से करे ।'ॐ यवोऽसि' इस मन्त्र से यव छींटे । 'ॐ विश्वे देवा शृणुते' इत्यादि मंत्रों को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़े। उसके बाद दोनिया में पूरब को अग्र करके पवित्री धरे, 'ॐ पवित्रे स्थो' इस मन्त्र से 'ॐ शन्नो देवी' इस मंत्र से दोनिया में जल डाले।। 'ॐ यवोऽसि' इस मन्त्र से दोनिया में यव डाले व चन्दन फूल चुपचाप डाले। उस अर्घपात्र को

जिह्वा उत वा यजत्रा ऽआसद्याऽस्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः॥ ये चाऽत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥ इति पठेत्॥ ततो पुटके पूर्वाग्रं पवित्रं धृत्वा ॐ पवित्रे स्थेति मन्त्रेण॥ ॐ शन्नो देवीरिति पुटके जलं क्षिपेत्॥ ॐ यवोऽसीति पुटके यवान् क्षिपेत्॥ गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्॥ तदर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे पूर्वाग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा। पुटकदक्षिणहस्तेनाऽऽच्छाद्य। ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या ऽअन्तरिक्षा ऽउत पार्थिवीर्य्याः॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न ऽआपः शिवा शꣳ स्योना सुहवा भवन्तु॥ इति पठित्वा। कुशत्रय-यव-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह–प्रपितामह–वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्रद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष वो हस्तार्घो नमः। पवित्रोपरि अर्घजलमुत्सृजेत्।

बाँये हाथ में रखे दाहिने हाथ से उसमें का पवित्रा निकाल कर भोजन पात्र पर पूरब को अग्र करके रखे। उस पवित्रा पर थोड़ा जल दूसरे पात्र से देना। बाद अर्घपात्र को हाथ उलट कर ढाँके 'ॐ या दिव्या०' इस मंत्र को पढ़े, तीन कुशा यव जल लेकर संकल्प से अर्घका जल आधा पवित्री पर देकर पवित्री के सहित 'ॐ विश्वेभ्यो' कहकर अर्घपात्र आसनके दक्षिण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीधा रखे। दक्षिणा दान तक उसको न छुवे। अब चन्दन इत्यादि विश्वेदेव के आसन पर चढ़ाकर संकल्प करे। बाद भोजनपात्र व आसन के चारों तरफ जल 'यथा चक्रायुधो' इस श्लोक से घुमावे। अपसव्य होके दक्षिण मुँह मोटक तिल

ततः पवित्रसहितमर्घपात्रमासनदक्षिणपार्श्वे ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि ॥ इति उत्तानमेव स्थापयेत् ॥ दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत्। ततो गन्धादि दद्यात्। त्रिकुशयव-जलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स-पिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् अमुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि वो नमः। इत्युत्सृजेत्। ततो भोजनपात्राऽऽसन-योश्चतुर्दिशं जलेन चतुष्कोणं मण्डलं कृत्वा। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ अपसव्यं दक्षिणाभिमुखो मोटक-तिल-जलान्यादाय घृतव्यञ्जनयुतमन्नं चादाय ॥ ॐ इदमन्नम् एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः। इत्युत्सृजेत्। ततः सव्यं कृत्वा। ताम्रपात्रादिकं गृहीत्वा तेनाऽन्नमादाय देवान् ध्यायन् पात्रे परिविष्यात् ॥ घृतं जलं

जल लेकर और घी व्यञ्जन के सहित अन्न लेकर 'इदमन्नं' कहके दक्षिण तरफ कुशा पर रखे। बाद सव्य से ताँबे के बरतन में अन्न लेकर देवता का ध्यान करते हुए भोजनपात्र पर परोसे। और दोनियाँ में घी रखे। दोनिया में जल रखे और दोनों हाथसे अन्न पर शहद 'मधु व्वाता०' इस मंत्रसे डाले और 'मधु-मधु' ऐसा तीन बार कहे व सीधे हाथसे भोजन पात्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को छुवे। 'ॐ पृथिवी ते०' और 'इदं विष्णु कृष्णहव्य०' इनको पढ़कर बाँया हाथ पत्तल में लगा रहे, दाहिने हाथका अँगूठा उलट कर अन्नमें, जलमें, घी में, फिर अन्न में लगावे। 'ॐ यवोऽसि०' इससे यव अन्न पर डाले। तीन कुशा यव जल लेके

च तत्रोपनीय ॥ अन्नोपरि हस्तद्वयेन मधु दत्वा। ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधु-

मान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्य्यः॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ मधु मधु मध्विति च जपेत्॥ ततो ऋजुहस्ताभ्यामन्नपात्रमालभ्य॥ ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे ऽअमृते-ऽमृतं जुहोमि स्वाहा॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्णहव्यमिदं रक्ष मदीयम्। इति पठित्वा। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं हविरिति पुनरन्ने दक्षिणकराङ्गुष्ठन्युब्जमावेश्य॥ ॐ यवोऽसि यवयाऽस्मद्-द्वेषो यवयोरातीः॥ इत्यन्नोपरि यवान्निःक्षिप्य॥ कुशत्रय-यव-जलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकाऽमुकामुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम-

सङ्कल्प करके त्याग करे। यह देवकर्म समाप्त हुआ। हाथ पैर धोकर आचमन करे। प्रेत श्राद्ध की जगह पर आवे। दक्षिण मुँह बैठे, अपसव्य होके मोटक तिल जल लेके संकल्पसे प्रेत को आसन दे। 'ॐ अपहता०' इस मन्त्रसे अन्न पर तिल डाले।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ॐ आयन्तु नः' इस मन्त्रसे आवाहन करे। उसके बाद दोनियामें दक्षिणको अग्र करके पवित्री रखे। 'ॐ शन्नो देवी०' इस मंत्रसे जल डाले। 'ॐ तिलोऽसि०' इस मंत्रसे तिल डाले। और चन्दन फूल चुपचाप डाले। वह प्रेतार्घपात्र बाँये हाथ पर

मुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतद्वोऽन्नं नमः, इत्यन्नमुत्सृजेत् ॥ इति देवकाण्डं निर्वर्त्य। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ प्रेतश्राद्धदेशमागत्य दक्षिणाभिमुखोपविश्य ॥ अपसव्यं मोटक-तिल-जलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति प्रेतासनं दद्यात् ॥ ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः ॥ इति तिलान् विकीर्य ॥ ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्ष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्न्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ इति पठेत् ॥ ततोऽर्घपात्रे अनखच्छिन्नं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयेति पुटके जलम् ॥ ॐ तिलोऽसीति, तिलान् क्षिपेत् ॥ गन्ध-पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ प्रेतार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रे भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा ॥ तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ दक्षिणहस्तेन पुटकमाच्छाद्य ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः, इति पठित्वा ॥

रखे, दाहिने हाथ से पवित्री लेकर भोजनपात्र पर उत्तर को अग्र करके रखे। उस पर अर्घ से अतिरिक्त दूसरा जल थोड़ा दे और अर्घपात्र को दाहिने हाथसे ढके। 'ॐ या दिव्या०' इस मंत्र को पढ़कर दाहिने हाथमें मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

करके अर्घका जल थोड़ा पवित्री पर देकर और जो अर्घमें जल बचा है सो आगे रखे। सव्य होकर हाथ-पैर धोकर आचमन करके पितामह श्राद्धकी जगह पर आकर बैठे। अपसव्य होकर मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करके पितामह को आसन

मोटक-तिल-जलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । पवित्रोपरि अर्घजलं उत्सृजेत् ॥ अवशिष्टजलसहितार्घपात्रं अग्रे निधाय, सव्यम् । हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याऽऽचम्य । पितामहानिश्राद्धदेशमागत्योपविश्याऽपसव्यादि कृत्वा, मोटक - तिल - जलान्यादाय ॥ ॐ आद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तक-श्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्या-मुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा ॥ पुनर्मोटकादिकमादाय ॥ ॐ अद्धामुकगोत्ररय पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डी-करणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगौत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा ॥ ॐ पितृनावाह-

दे। फिर मोटक इत्यादि लेकर सङ्कल्प करके प्रपितामह को आसन दे। फिर मोटक इत्यादि लेकर सङ्कल्प करके वृद्धप्रपि-तामह को आसन दे। 'ॐ उशन्तस्त्वा०' इस मंत्र से पितामहादिको आवाहन करे। 'ॐ अपहता०' इस मंत्र से तीनों जगह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तिल छींटे । अब तीन दोनिया में नोक कटा न हो ऐसी पवित्री दक्षिण को अग्र करके रखे । 'ॐ शन्नो देवी०' इस मंत्र से जल डाले । 'ॐ तिलोऽसि०' इस मंत्र से तिल डाले, और चन्दन फूल चुपचापसे डाले । बाद पितामहका अर्घपात्र बाँये हाथ

यिष्ये ॥ ॐ उशन्तस्त्वा निधीह्युशन्तः समिधीमहि ॥ उन्नुशत ऽआवह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥ इति पितामहादीनावाह्य ॥ ॐ अपहतेति त्रिषु स्थानेषु तिलान् विकीर्य ॥ त्रिषु अर्घपात्रेषु अनख-च्छिन्नं दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरिति जलम् । ॐ तिलोऽसीति, तिलान् प्रक्षिप्य गन्ध-पुष्पे तूष्णी प्रत्येकं क्षिपेत् ॥ ततः पितामहार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रं भोजनपात्रे उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ ॐ या दिव्या ऽआपः, इति पठित्वा ॥ दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे अमुकगोत्र पिता-महाऽमुकशर्म्मन्नेष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ इति पवित्रोपरि अर्घ्यं दद्यात् ॥ अवशिष्टजलयुतपात्रनम्रे धारयेत् ॥ ततः प्रपितामहार्घपत्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रं भोजनपात्रे उत्तरागे धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ 'ॐ या दिव्ये' ति तठित्वा ॥ दक्षिणहस्ते मोटकादीन्यादाय ॥

में रखे । दाहिने हाथ से पवित्री भोजन पात्र पर उत्तर को अग्र करके रखे ओर पवित्रीके ऊपर थोड़ा जल देकर दाहिने हाथ से अर्घ को ढाँके । 'ॐ या दिव्या०' इस मंत्राको पढ़कर मोटक तिल जल लेके सङ्कल्प करके अर्घका जल आधी पवित्री

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

पर देकर आगे रखे । इसी प्रकारसे प्रपितामह०, वृद्धप्रपितामहको अर्घ देवे और आगे धरे । बाद सव्य होकर आचमन करे अपसव्य होके माँगे तीन दोनिया दूसरी रखना और प्रेत का अर्घपत्र उठावे । 'ॐ ये समानाः' यह दो मंत्र पढ़कर प्रेत के

ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्म्मनेष ते हस्तार्घः स्वाधा ॥ स्वधा ॥ इत्यर्घजलं पवितोपरि किञ्चिदुत्सृजेत् ॥ तदर्घपात्रमवशिष्टजलयुतमग्रे धारयेत् ॥ ततो वृद्धप्रपितामहार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा ॥ पवित्रं भोजनपात्रे उत्तरांग धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्वा ॥ ॐ या दिव्या आपः, इति पठित्वा ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्म्मन्नेष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ इत्यर्घजलं पवित्रोपरि किञ्चिदुत्सृजेत् ॥ तदर्घपात्रमवशिष्टजलयुतमग्रे धारयेत् ॥ सव्यं कृत्वा ॥ आचम्य ॥ अपसव्यम् ॥ अन्यपुटकत्रयमग्रे धृत्वा ॥ प्रेतार्घपात्रं गृहीत्वा ॥ ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ॥ तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ १ ॥ ॐ ये समानाः समनसो जीवाऽजीवेषु मामकाः ॥ तेषꣳ श्रीर्मति कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳ समाः ॥ २ ॥ इति मन्त्राभ्यां

अर्घ जल का तीसरा हिस्सा पहिली दोनिया में रखे । दो मंत्र पढ़कर शेष तीसरा दोनियाँमें रखे । फिर चुपचाप से पहिले कोनिया का जलविभाग किया हुआ प्रेत के अर्घपात्र में रखे और 'ॐ ये समानाः' इस दो मंत्र को पढ़कर पितामह के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्घपात्र में मिलावे। फिर दूसरे दोनिये का जल प्रेत के अर्घ में लेकर दो मंत्र से प्रपितामह के अर्घपात्र में मिलावे, फिर तीसरी दोनिया का जल प्रेत के अर्घ में रखो, दो मन्त्र पढ़कर वृद्धप्रपितामह के

प्रेतार्घपात्रस्थं जलं तृतीयभागं पुटकान्तरे धृत्वा ॥ पुनरपि 'ये समानाः', इति मन्त्रद्वयं पठित्वा ॥ अपरतृतीयभागं पुटकान्तरे धृत्वा ॥ पुनरपि 'ये समानाः' इति मन्त्रद्वयं पठित्वा ॥ अपरतृतीय-भागशेषजलं तृतीयपुटके धृत्वा । तूष्णीं प्रथमपुटकस्थविभक्ततृतीयभागजलं प्रेतार्घपत्रे कृत्वा । ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वय्यं पठित्वा, पितामहार्घपत्रे मेलयेत् एवमपरनटकस्थिततृतीयभागं जलं प्रेतार्घप कृत्वा । ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा प्रपितामहार्घपत्रे मेलयेत् ॥ एवमूषरपुटकस्थिततृतीयभागं जलं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा, ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयं पठित्वा वृद्धप्रपितामहार्घ्यपात्रेमेलयेत । ततः प्रेतार्घपात्रं पवित्रसहितं पितरासनवाम पार्श्वे 'पित्रे स्थानमसि' इति न्युब्जीकुर्यात् । ततो वृद्धप्रपितामहार्घ्यपात्रस्थं जलादिकं प्रपितामहार्घ्यपात्रे कृत्वा तत्सर्वं

अर्घ में मिलावे। इसके बाद प्रेत के अर्घ पात्र को पवित्री के सहित प्रेत आसन की बायीं तरफ 'पित्रो स्थानमसि' कह कर उलट दे। बाद वृद्ध प्रपितामहार्घ पात्र का जल प्रपितामह के अर्घपात्र में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलावे। यह सम्पूर्ण जल पितामह के अर्घपात्र में मिलावे। इसके बाद पितामह का अर्घपात्र प्रपितामह के अर्घपात्र पर रखे। ये दोनों पात्र वृद्धप्रपितामह के अर्घपात्र पर रखे। ये तीनों पात्र पितामह के आसन के बाँयें इकट्ठा तोनों पात्र 'पितामहादिभ्य' कहकर उलट दे। इस प्रकार से स्थापित किया हुआ चारों अर्घपात्र दक्षिणा दान तक न उठावे, न चलावे। अब प्रेतके आसन पर चन्दन इत्यादि चढ़ाकर मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे। इसके बाद पितामह आदि के आसन पर चन्दन आदि को चढ़ाकर मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे। फिर मोटक आदि लेकर प्रपितामह का संकल्प करे। फिर मोटक आदि लेकर

पितामहार्घपात्रे कृत्वा। पितामहार्घपात्रमुत्तानं प्रपितामहार्थपात्रोपरि धृत्वा॥ तद्द्वयमुत्तान वृद्धप्रपितामहार्घपात्रोपरि धृत्वा॥ पात्रत्रयमेकदैव पितामहासनवामपार्श्वे पितामहादिभ्यः स्थानमसीति न्युब्जं कृत्वा स्थापयेत्॥ एवं स्थापितमर्घपात्रचतुष्टयं दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेन्न चालयेत्॥ प्रेतासनोपरि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वासांसि दद्यात्। मोटक-तिल-जलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्॥ ततः पितामहाद्यासनोपरि गन्धादि दद्यात्॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेतानि गन्धादीनि ते स्वधा॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय, ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्धप्रपितामह का संकल्प करे। इसके बाद प्रेतके भोजनपात्र व आसन के चारों तरफ जल घुमावे, 'यथा चक्रायुधो' इस मंत्र से। इसी प्रकार से पितामह आदि के तीनों आसन के चारों तरफ जल घुमावे। सव्य होकर पूरब मुँह बैठे, दाहिना पैर मोड़-

निमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतानि गन्धादीनि ते स्वधा ॥ ततः प्रेतासन-भोजनपात्रसहितं चतुर्दिशं चतुःकोणं मण्डलं जलेन कुर्यात् ॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परि-रक्षति ॥ एवं मण्डलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥ एवमपरं पितामहादि त्रिषु आसनेषु क्रमेण चतुष्कोणं मण्डलं कुर्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखोपविश्य पातितदक्षिणजानुस्ताम्रपात्रादौ व्यञ्जनक्षारवर्जितं स-घृतमन्नं कृत्वा ॥ पुटकादिजले आहुतिद्वयं हस्तेनैव जुहुयात् ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ॥ ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ अवशिष्टमन्नं पितामहादि-पात्रेषु किञ्चित् किञ्चिद् दद्यात्। पिण्डार्थं चाऽवशेषयेत् ॥ ततो हस्ताभ्यां ताम्रपात्रमादाय तेन प्रेताऽन्नं गृहीत्वा प्रेतपात्रे ध्यायन् परिविष्यात् ॥ पृथक्-पृथक् पुटकादिस्थितानि घृतजलव्यञ्जनानि

कर खारा वस्तु से अतिरिक्त व्यञ्जन घी, अन्न लेकर ताँबे के पात्र में एक दोनिया में जल रखे। उस जल से इसी अन्न की दो आहुति 'अग्नये कव्यवाहनाय, सोमाय पितृमते' इस मन्त्र से दे। इसके बाद अपसव्य होकर आहुति से बचा हुआ अन्न पितामह आदि के भोजन पात्र पर थोड़ा-थोड़ा परोसे। और बाकी अन्न पिण्ड के वास्ते बचाकर रखे। आगे दोनों हाथ से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तांबे का पात्र लेकर उसमें प्रेत का अन्न लेकर प्रेत के भोजनपात्र पर, प्रेत का ध्यान करते हुए परोसे और अलग-अलग दोनिया में घी, जल, व्यञ्जन रखे। इसी तरह से पितामह आदि के भोजनपात्र पर पितामह आदि का अन्न परोसे। घी, जल, व्यञ्जन इत्यादि अलग-अलग रखे। उसके बाद प्रेत के भोजनपात्र के अन्न पर और पितामह आदि के भोजनपात्र पर दोनों

चोपनयेत् ॥ ततस्तेनैव क्रमेण पितामहादिपात्रेषु प्रत्येकं परिवेषणं कुर्यात् ॥ घृतं जलं चोपनीय ततः प्रेतादिपात्रस्थिताऽन्नेषु हस्तद्वयेन प्रत्येकं मधु दत्वा ॥ ॐ मधु व्वातेति ॥ ततः प्रेतान्नपात्रं व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यामालभ्य ॥ ॐ पृथिवी ते पात्रमिति ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, इति च। ॐ कृष्णकव्यमिति पठित्वा दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेन। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं कविरिति पुनरन्ने ॥ ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिलान् प्रक्षिप्य ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पित्रे अन्नमुत्सृजेत् ॥ अनेनैव क्रमेण पितामहाद्यन्नपात्रमालभ्य

हाथ से अलग-अलग शहद दे 'ॐ मधु व्वाता' इस मन्त्र से। उसके बाद प्रेत के अन्नपात्र को दोनों हाथों को उलटकर छूवे, और 'पृथिवी ते पात्रं' तथा 'इदं विष्णु' व 'कृष्णकव्य' यह पढ़कर बायाँ हाथ भोजनपात्र में लगा रहे, दाहिने हाथ के अँगूठा को अन्न में, जल में, घी में, फिर अन्न में लगावे। 'ॐ अपहता' इस मन्त्र से अन्न पर तिल छींटे, मोटक, तिल, जल लेकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

संकल्प को पढ़कर त्याग करे। इसी तरह पितामह इत्यादि पात्रों को छूवे और अन्न, जल, घी फिर अन्न में अँगूठा लगावे। 'ॐ

प्रेत० ॐ पृथिवी ते पात्रमित्य दि पठित्वा। ॐ इदमन्नमित्यादिना स्वदक्षिणकराङ्गुष्ठनिवेशन कृत्वा ॐ अपहतेति अन्नोपरि तिल न् विकीर्य ॥ मोटकादीन्याद य ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुक- १४८ प्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितःमहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते ऽन्नं सोपकरणं ते स्वधा॥ इति पितामहायाऽन्नमुत्सृजेत्। एवं प्रपितमहा-वृद्धप्रपित महायोरपि पूर्ववदन्नमुत्सृजेत्-सव्यम्। स-प्रणवव्याहृतिकां गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। ॐ मधु वाता, इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्विति च जपित्वा॥ अन्नहीनमिति पठेत्॥ श्राद्धकर्त्ता दर्भेष्वासीनः॥ स-प्रणवव्याहृतिकां गायत्रीं त्रिर्ज- पित्वा॥ ॐ मधु व्वाता, इत्यादि ऋचं मधु मधु मध्विति च जपित्वा॥ ॐ कृणुष्व पाजः प्रसि- तिन्न पृथिवीं याहि राजेवामवाँ॥ ऽइभेन॥ तृष्वीमनु प्रसितिन्द्रूणानोऽस्तासि व्विद्धय रक्षसस्त- पिष्टैः॥ १॥ तव ब्भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः॥ तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः॥ २॥ प्रति स्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायु- मा० १४८ असहता' इस मन्त्र से अन्न पर तिल छींटे। मोटक आदि लेकर संकल्प करके त्याग करे। सव्य होकर ॐकार व्याहृति के महित गायत्री ३बार पढ़े और 'मधु व्वाता' व 'मधु मधु' 'अन्नहीनं' इत्यादि पढ़े। श्राद्ध करनेवाला कुशा पर बैठे, फिर गायत्री

'मधु व्वाता' मंत्र 'मधु मधु' पढ़े और 'कृणुष्व पाजः' यह रक्षोघ्नी ५मन्त्र पढ़े। इसके बाद जमीन पर तिल छींटे। 'ॐउदीरता'

र्विशा ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिराद्धर्षीत् ॥ ३ ॥ उद्ग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ २॥ ऽओषतात्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्ध्याद्ध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्या-न्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाञ्जामिमजामिम्प्रमृणीहि शत्रून् ॥ ५ ॥ इति रक्षोघ्नमन्त्राः ॥ भूमौ तिलान् विकीर्य ॥ ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥ असुं य ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ (केचित्तु उदीरता इति त्रयोदशमंत्राः पठन्ति) ॐ सहस्रशीर्षा० षोडशमंत्रयुक्तपुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आशुः शिशान० द्वादशमंत्रयुक्तमप्रतिरथ-सूक्तम् ॥ ॐ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ! नमस्तेऽनेकचक्षुषे ! ॥ नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् ॥ ततः पितामहपात्रसन्निधावास्तृतदक्षिणाग्रकुशत्रयीं भूमिं प्रोक्ष्य सर्व-प्रकारमन्नमादाय सतिलं घृतं जलेनाऽऽप्लाव्य ॥ ॐ अनग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः

यहाँ पितृ मन्त्र पढ़े। और सहस्रशीर्षा १६ मंत्र, आशुः १२ मंत्र तथा 'नमस्तुभ्यं' यह सब पढ़े। उसके बाद पितामह के भोजनपात्र के समीप में तीन कुशा से जल छींटकर तीनों कुशा वहाँ पर रखे। सब प्रकार का अन्न तिल घी जल से भरी हुई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनियाँ में लेकर 'अनग्नि०' इस मन्त्र को पढ़कर बिछे हुए कुशा पर अन्न को रखे। पवित्रा, मोटक को भी वहीं उतार दे। उसके बाद सव्य होकर आचमन करे, विष्णु का ध्यान करे। अपसव्य हो के प्रेतपिण्ड के वास्ते एक वेदी १० अंगुल की

कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम् ॥ इत्यास्तृतकुशोपरि तदन्नं विकिरेत् ॥ पवित्रमोटकादेस्तत्रैव त्यागः ॥ ततः सव्यं कृत्वाऽऽचामेत्। हरिं स्मृत्वा। अपसव्यम्। ततः प्रेतपिण्डपातनार्थमेकां वेदिकां प्रादेशमात्रामपरां वेदिकां पितामहादित्रिकपिण्डदानार्थम् एकहस्तमितां चतुरस्रां चतुरङ्गुलोच्छ्रितां दक्षिणप्लवां वा प्रादेशमात्रां निर्माय ॥ तन्मध्ये वामेन पाणिना दर्भपिञ्जुलीं गृहीत्वा दक्षिणहस्ते कृत्वा तन्मूलेन सव्योपगृहीतदक्षिणपाणिना 'ॐ अपहते'ति दक्षिणाग्रां रेखां कुर्यात् ॥ दर्भपिञ्जुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ एवमपरपिण्डिकायामप्येकां रेखां कुर्यात् ॥ उभयत्र रेखोपरि अङ्गारं भ्रामयित्वा ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानेति, अङ्गारं दक्षिणतस्त्यजेत् ॥ ततः उभयत्र रेखोपरि उपमूलसकृल्लूनान् दक्षिणाग्रान् कुशानास्तृणुयात् ॥ ततः

बनावे और पितामह आदि तीन पिंड के वास्ते १ हाथ लम्बी, चौड़ी ४ अंगुल ऊँची दक्षिण को ढालू रहे ऐसी बनावे। अथवा १० अंगुल की बनावे। उसके बाद उसके मध्य में बाँयें हाथसे कुशा लेकर दाहिने हाथमें ले, दोनों हाथ से प्रेत की वेदी पर 'ॐ अपहता' इस मंत्र से रेखा करे। कुशा को उत्तर की तरफ फेंके। इसी तरह से पितामह आदि की वेदी पर करे। उसके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

बाद दोनों वेदी की रेखा पर 'ॐ ये रूपाणि' इस मंत्र से अङ्गार घुमाकर दक्षिण की तरफ रखे। उसके बाद दोनों वेदी की रेखा पर थोड़ा मूल कटा हुआ कुशा तीन-तीन दक्षिण के अग्र करके बिछावे। उसके बाद सव्य होकर 'ॐ देवताभ्यः' इस मंत्र

सव्यम् ॥ 'ॐ देवताभ्यः' इति त्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्यम्। पुटकचतुष्टये तिल-जल-गन्ध-पुष्पाणि क्षिप्त्वा ॥ पथमपुटकं वामहस्ते कृत्वा। दक्षिणेन मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे प्रेतपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति पथमपिण्डिकायां छिन्नमूलकुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ ततो द्वितीयवेद्यां पथमपुटकमादाय मोटकादीनि चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेत तस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नत्रावने निक्ष्व ते स्वधा ॥ इति कुशमूले अवनेजनं दद्यात् ॥ द्वितीयाऽत्रनेजनपात्रमादाय ॥ मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेत तस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे प्रपिण्डस्थाने अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नत्राऽत्रने निक्ष्व ते स्वधा,

को तीन बार पढ़कर अपसव्य होकर ४ दोनियाँ में तिल जल चन्दन फूल डाले, १ दोनियाँ बायें हाथ में ले, दाहिने हाथ में मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके, प्रेत वेदी के छिन्न मूल कुशा पर आधा जल दे, आधा आगे रखे, अब पितामह आदि की वेदी पर पहिली दोनिया बायीं हाथ में लेकर दाहिने हाथ में मोटक आदि लेकर संकल्प करके कुशा को जड़ में आधा जल दे,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधा रखे। इसी प्रकार से दूसरी दोनियाँ का जल संकल्प करके कुशा के मध्य में दे, आधा आगे रखे। तीसरी दोनिया का संकल्प करके कुशा के अग्र में दे, आधा रखे। अब प्रेत के अन्न में तिल शहद घी चीनी मिलाकर नारियल की तरह पिण्ड १ बनावे और पितामह आदि का अन्न लेकर सब चीज पहिले की तरह मिलाकर तीन पिंड गोल बनावे। और चारो पिण्डों में शहद घी लगावे। मोटक तिल जल प्रेतपिंड लेकर संकल्प करके पहिली वेदी पर अवनेजन की जगह रखे। अब दूसरी

इति कुशमध्ये अवनेजनं दद्यात्॥ तृतीयाऽवनेजनपात्रमादाय॥ मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तिकश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्राऽवने निक्ष्व ते स्वधा। इति कुशाग्रे अवनेजनं दद्यात्॥ ततः तिल-मधु-शर्करा-घृतयुतप्रेतान्नेन नारिकेलाकृतिप्रेतपिंडं निर्माय॥ ततः सर्वव्यञ्जनतिलमध्याज्ययुत-हुतशेषाऽन्नेन पितामहादीन् पिण्डत्राय च निर्माय॥ चतुरः पिंडान् मधुघृताभ्यामभिघार्य॥ प्रथमं प्रेतपिण्डमादाय मोटकादीनि चादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरण-श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ इति प्रथमवेद्यां अवनेजनस्थाने प्रेतपिण्डं दद्यात्॥ ततोऽपरवेद्यां प्रथमपिण्डमादाय मोटकादीनि चादाय॥ ॐ अद्याऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिण्डः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदी पर पितामह का पिंड संकल्प करके कुशा की जड़ में दे। दूसरा प्रपितामह का पिंड संकल्प करके कुशा के मध्य में रखे, तीसरा वृद्धप्रपितामह का पिंड संकल्प करके कुशा के अग्र में रखे। पितामह के पिंड के नीचे की कुशा की जड़ में

स्वधा ॥ इति कुशमूले पितामहाय पिंडं दद्यात् ॥ द्वितीयं पिंडं मोटकादीनि चादाय ॥ अद्याऽमुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिण्डः स्वधा ॥ इति कुशमध्ये प्रपितामहाय पिंडं दद्यात् ॥ तृतीयपिंडं मोटकादीनि चादाय। ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेष ते पिंडः स्वधा ॥ इति कुशाग्रे वृद्धप्रपितामहाय पिंडं दद्यात्। ततः पितामहादिपिंडास्तरणकुशमूले ॐ लेपभागभुजस्तृप्यन्तु, इति करं प्रोक्ष्य ॥ सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा। ततोपऽसव्यं दक्षिणाभिमुखः पितरमुद्दिश्य ॥ ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथा भागमावृषायस्व, इति पठित्वोत्तराभिमुखो भूत्वा श्वासं नियम्य भास्वरमूर्तिं पितरं ध्यायन् मुखं दक्षिणं दिशं प्रत्यावर्त्तयन् ॐ अमी मदन्त पितर्मादयस्व यथा भागमावृषायिषत् ॥ इति प्रथमवेद्याम् ॥

हाथ पोंछे और सव्य होकर आचमन करे। विष्णु का ध्यान करे। अपसव्य होकर दक्षिण मुख हो पितर निमित्त 'ॐ अत्र पितर' यह पढ़ उत्त र मुँ ह होकर बाँयीं तरफ से श्वाँस खींचे। भास्वर मूर्ति पितर का ध्यान करते हुए दक्षिण दिशा की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधा रखे। इसी प्रकार से दूसरी दोनियाँ का जल संकल्प करके कुश के मूल में से आधा आगे रखे। तीसरी दोनिया का

घुमाते हुये 'ॐ अमी मदन्त' इस मंत्र से श्वाँस छोड़े। पहिली वेदी के यहाँ। इसी प्रकार से दूसरी वेदी के यहाँ। अब पहिले

एव द्वितीयवेद्याम्। श्वासं नियम्य ॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। ॐ अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत्। इति पठेत् ॥ ततः प्रथमवेद्यां प्रत्यवनेजनपात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्धे पिंडेऽत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। इति प्रेतपिंडे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो द्वितीयवेद्यां पितामहाऽवनेजनपात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिंडे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा ॥ इति पितामहपिंडे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ द्वितीयाऽवनेजनं पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिंडे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्र इत्यवने निक्ष्व ते स्वधा ॥ इति प्रपितामहपिंडे प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ तृतीयाऽवनेजनं पात्रं वामहस्ते कृत्वा मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिंडे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा

की दोनियाँ उठाकर संकल्प करके प्रेतपिंड पर जल दे। इस प्रकार से पितामह आदि तीनों पिंडों पर संकल्प करके दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

उसके बाद नीवी का त्याग करे। सव्य होकर आचमने करे। विष्णु का ध्यान करे। अपसव्य होकर बायें हाथ से सूत लेकर

प्रेत० इति वृद्धप्रपितामहपिंडे प्रत्यवनेजनं दद्यात्॥ ततो नीवीं विस्रंस्य॥ सव्यमाचम्य हरिं स्मृत्वा॥ भा०
ततोऽपसव्यम्॥ वामेन पाणिना धृतं सूत्रं दक्षिणेनादाय॥ ॐ एतत्ते पितर्वासः, इत्युभाभ्यां
पितृपिंडोपरि सूत्रं धारयेत्॥ मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत सपिंडीकरण-
१५५ श्राद्धे पिंडे एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ ततः पूर्ववत् पुनः सूत्रमादाय॥ ॐ नमो
वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः
पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो
वः पितरो देष्म। एतद्वः पितरो वासः॥ इति मन्त्रं पठित्वा द्वितीयवेद्यामुभाभ्यां हस्ताभ्यां
प्रत्येकपिंडोपरि सूत्रं धारयेत्॥ ततो मोटकादीन्याय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य
सपिंडीकरणनिमित्तकश्राद्धे पिंडे अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा॥ इति पिता-
महाय सूत्रमुत्सृजेत्॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय॥ ॐअद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरण- १५५

दाहिने हाथ पकड़कर 'एतत्ते' कहकर दोनों हाथ से पिंड पर सूत दे। मोटक आदि लेकर संकल्प करके त्याग करे। फिर सूत लेकर 'ॐ नमो वः' इस मन्त्र से दूसरी वेदी पर दोनों हाथ से पितामह आदि पिंडों पर चढ़ावे, मोटक आदि संकल्प

करके तीनों जगह सूत का त्याग करे। चारों पिंडों पर चन्दन चढ़ावे और पिण्डों का शेष अन्न पिंडों के समीप में रखे।

निमित्तकश्राद्धे पिंडे अमुकगोत्र प्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा। इति वृद्धप्रपितामहाय सूत्र-मुत्सृजेत् ॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणनिमित्तक-श्राद्धपिंडे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाऽमुकशर्मन्नेतत्ते वासः स्वधा ॥ इति वृद्धप्रपितामहाय सूत्र-मुत्सृजेत् ॥ ततः प्रत्येकं पितृपिंडादिषु गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूलानि दद्यात् ॥ ततः पिण्ड-समीपे तत्तत्पिण्डशेषाऽन्नं विकिरेत् ॥ ततः पिण्डेषु सूत्रादिकमपनीय हस्तद्वयेन सुवर्ण-रजत-कुशानादाय ॥ ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ॥ तेषाँलोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ ॐ ये समानाः समनसो जीवाऽजीवेषु मामकाः ॥ तेषांॐ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳ समाः ॥ इति मन्त्रद्वयं पठित्वा प्रेतपिंडं त्रिधा विभजेत् ॥ ततः प्रथमपिंडभागमादाय ॥ ॐ ये समानाः, इति मन्त्रद्वयेन पितामहपिंण्डे नियोजयेत् ॥ एवं द्वितीयपिंण्डभागमादाय मन्त्र-द्वयेन प्रपितामहपिण्डे नियोजयेत् ॥ एवं तृतीयपिण्डभागमादाय मन्त्रद्वयेन वृद्धप्रपितामहपिण्डे

बाद पिण्डों पर का सूत इत्यादि हटा दे, और दोनों हाथ से सोने का सूत अथवा चाँदी का सूत हो अथवा कुशा लेकर 'ॐये समानाः' ये दो मन्त्र पढ़कर प्रेतपिंड को तीन हिस्सा करे। पहिला भाग लेकर 'ॐये समानाः' दो मंत्र से पितामह के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिण्ड में मिलावे। दूसरा भाग लेकर दो मन्त्र से प्रपितामह के पिण्ड में मिलावे। तीसरा भाग लेकर दो मन्त्र पढ़कर

नियोजयेत्। ततः प्रेतभागेन सह पिण्डत्रयं प्रत्येकं समं वर्तुलं कुर्यात्॥ ततः प्रेतपूर्वकं पितामहादीनुद्दिश्य पिण्डत्रये गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात्॥ ततः सव्येन देवान्नपात्रे॥ अपसव्येन पित्राद्यन्नपात्रेषु॥ ॐ शिवा आपः सन्तु, इत जलम्॥ ॐ सौमनस्यमस्तु, इत पुष्पम्। ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु, इत्यक्षतान्। एवं क्रमेण प्रत्येकभोजनपात्रेषु जलादिकं दत्वा॥ मोटक-तिल-जलान्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य पितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु, इति पितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात्॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु, इति प्रपितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात्॥ पुनर्मोटकादीन्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्याऽमुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु॥

वृद्धप्रपितामह के पिण्ड में मिलावे। तीनों पिंड बराबर गोल करे। उसके बाद प्रेतके सहित पितामह आदि तीनों पिंड पर चदन आदि चाढ़ावे। सव्य होकर विश्वेदेव के भोजनपात्र पर अपसव्य होकर पितृ आदि भोजनपात्र पर 'शिवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपः' से जल, 'सौमनस्य' से फूल, 'अक्षतं' से अक्षत, मोटक आदि लेकर पितामह आदि को संकल्प करके, अक्षय्योदक दे। सव्य होकर दक्षिण तरफ देखे। 'अघोराः पितरः' कहकर तीनों पिण्डों पर पूर्वाग्र जलधारा दे। यह जल-

इति वृद्धप्रपितामहायाऽक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणां दिशं पश्यन् । ॐ अघोरा पितरः सन्तु ॥ पिण्डत्रयोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ अत्र वारिधारादानमाचारात् ॥ अन्यथा तु पाठमात्रम् ॥ प्राङ्मुखः प्रार्थयेत् । ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ इति ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ पिण्डोपरि सपवित्रकुशत्रयं दक्षिणाग्रमास्तीर्य ॥ ततो वामहस्तोद्धृतं जलपात्रं दक्षिणेनाऽऽदाय । ॐ ऊर्ज्जं व्वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्प्पयत मे पितॄन् ॥ इति पित्रादीनुद्दिश्य सपवित्रकुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । ततो नम्रीभूय पिण्डानाघ्रायोत्थापयेत् ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ सव्येन देवार्घपात्रं सञ्चाल्य । अपसव्येन

धारा देना चलन है। केवल पाठ कर देना, पूरब मुँह होकर 'गोत्रन्नो' इससे प्रार्थना करे। बाद अपसव्य होकर तीनों पिण्डों पर पवित्रा के सहित ३ कुशा दक्षिण को अग्र करके रखे, बाँये हाथ से दोनियाँ में जल लेकर दाहिने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ में ले, दोनों हाथों से 'ॐ ऊर्ज्जं' इस मन्त्र से पवित्रा के सहित ३ कुशा पर दक्षिणाग्र जल धारा दे। उसके बाद झुक कर पिण्डों को सूँघे, पिण्डों को उठावे। पिण्डों के नीचे की कुशा और जौ अंगार घुमाकर दक्षिण में रखा है

पित्राद्यर्घपात्राण्युत्तानीकृत्य दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सव्येन कुशत्रय-यव-जलान्यादाय द्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्ध-प्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इति प्राङ्मुखमुत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वा मोटकादीनि दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्रास्य ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। पुनर्मोटकादीन्यादाय दक्षिणाद्रव्यं चादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुक-प्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाममुका-ऽमुकशर्मणां श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ततः सव्यम्।

उन दोनों को दूसरी आग में डाले। सव्य होकर देवता का अर्घपात्र हिलावे। अपसव्य होकर पितृ आदि का अर्घपात्र चारों सीधा कर दे। सव्य होकर ३ कुशा यव-जल लेकर संकल्प करके दक्षिणा देवे। अपसव्य होकर मोटक, तिल,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल लेकर पितृपितामह आदि के श्राद्ध का अलग-अलग संकल्प करके अलग-अलग दक्षिणा देवे। उसके बाद सव्य होकर 'विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्' इससे विश्वेदेव का विसर्जन करे। अपसव्य होकर 'ॐ आ मा वाजस्य' मन्त्र से पितृ

विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इति देवविसर्जनम्॥ अपसव्यम्॥ ॐ आ मा व्वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥ इ प पितृविसर्जनम्॥ सव्यम्॥ ॐ देवताभ्यः, इति त्रिर्जपेत्॥ ततोऽपसव्यम्॥ सव्याऽपसव्याभ्यां हस्ताभ्यां देव-पितृ-पितामहादीन् श्राद्धदीपान्निर्वापयेत्। ततः सव्यं पाणिपादं प्रक्षाल्याऽऽचम्य॥ ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु॥ न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ एतत्फलकामो विष्णुं स्मरेत्॥ इति पितृसपिण्डनश्राद्धपद्धतिः समाप्ता॥

लोगों का विसर्जन करे। सव्य होकर 'ॐ देवताभ्यः' यह मन्त्र ३ बार पढ़े। सव्य-अपसव्य होकर दोनों हाथ से देवता व पितृ का दीप बुझावे। उसके बाद सव्य होकर हाथ-पैर धोकर आचमन करे। 'ॐ प्रमादात्' व 'यस्य स्मृत्या' दोनों श्लोकों को पढ़कर श्राद्ध सम्पूर्णता के वास्ते विष्णु का स्मरण करे॥ इति भाषाटीका सपिण्डन श्राद्ध समाप्त॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब घर पर शय्यादान की विधि कहते हैं। पहिले आचमन, प्राणायाम करे। 'ॐ अपवित्रः' से अपने ऊपर व पूजन सामग्री

अथ शय्यादानम्

तत्रादावाचम्य, प्राणानायम्य। ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्-पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य॥ हस्ते अक्षत-पुष्पाण्यादाय॥ ॐ सोपकरणशय्यायै नमः॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः॥ इति त्रिः सम्पूज्य॥ ततो लक्ष्मी-नारायणयोः स्वर्णमयीं प्रतिमां पूजयेत्॥ तद्यथा॥ शय्योपरि नारिकेलं निधाय तस्योपरि स्वर्णमयीं प्रतिमां निधाय॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा॥ इत्यावाह्य॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमन्दधातु॥ विश्वेदेवास ऽइह मादायन्तामों ३ प्प्रतिष्ठ। इति प्रतिष्ठाप्य। गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-दक्षिणादिभिः सम्पूज्य। वरणद्रव्यमादाय। ॐ अद्यामुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः त्रयोदशाहे शय्यादानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्याप्रतिगृहीतृत्वेन

पर जल छींटे। हाथ में अक्षत, फूल लेकर शय्या व ब्राह्मण के ऊपर तीन बार छोड़े। उसके बाद लक्ष्मीनारायण की सोने की प्रतिमा शय्या पर नारियल रखकर उसके ऊपर प्रतिमा रखकर 'इदं विष्णु' इस मन्त्र से पूजन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

बाद वरण द्रव्य लेकर संकल्प करके ब्राह्मण को दे, जो कि शय्या को लेंगे। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहे। यजमान 'प्रमाण्यै

त्वामहं वृणे। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ॐ प्रमाण्यै देव्यै नमः, इति क्रमेण चतुर्दिक्षु प्रणम्य॥ वामहस्तेन शय्यास्पर्शन कृत्वा दक्षिणहस्ते त्रिकुश-यव-जलान्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः समस्तपापक्षयपूर्वकाऽप्सरोगण-सेवायुत-विमानकरणेन्द्रपुरगमनोत्तर-षष्टिसहस्रवर्षाधिकरणकक्रीडन-स्त्रीसङ्घसमावृत-सर्वलोकमहिमत्व-तदुत्तरषष्टियोजनमण्डलराज्यभोगाऽनन्तर-शिवसायुज्यावाप्तिकाम इमां शय्यां ईशानादिकोणचतुष्टय-क्रमेण घृत-कुङ्कुम-गोधूम-जल-घृत-कुम्भसमेतां हंसतूलीप्रच्छन्नां शुभ्रगण्डोपधानिकां प्रच्छादन-पटा॰तृतां सप्तधान्ययुतां यथोप॰करसहितां च विष्णुदैवतामुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे, इति शय्यां दद्यात्। ॐ स्वस्ति, इति ब्राह्मणो वदेत्। कृतैतत् सोपकरणशय्या-दानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ स्वस्ति॥ प्रार्थना॥ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया। तथा शय्या ममाऽप्यस्तु अशून्या जन्म-

देव्यै' कहकर चारों तरफ शय्या के हाथ जोड़े। बाद बायाँ हाथ शय्या में लगाकर दाहिने हाथसे शय्या संकल्प करके ब्राह्मण को दे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहे, इसके बाद दक्षिणा संकल्प करके दे। ब्राह्मण 'ॐ स्वस्ति' कहें 'यथा न कृष्ण' इस श्लोक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

से यजमान प्रार्थना करे। अब पद-दान को विधि कहते हैं। 'पदेभ्यो' कहकर अथवा 'देयद्रव्येभ्यो' कहकर चन्दन, अक्षत, फूल

प्रेत० जन्मनि। अथ [1]पददानम्। पदेभ्यो नमः। अथवा देयद्रव्येभ्यो नमः, इति गन्धाऽक्षतैः सम्पूज्य। मा०

अद्येत्यादि गोत्रः शर्माऽहम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः श्रुत्यादि-यथोक्त-फलप्राप्त्यर्थम् इमानि

१६३ त्रयोदशपदानि तत्तत्पदेषु आस्तरणार्थम् आसनं भूमिदैवतं तप्तबालुकाऽसिकण्टकितभूदुर्गसन्तरण-

काम इमे उपानहौ उत्तानाङ्गिरो दैवते आतपनिवारणार्थं छत्रम् अङ्गिरो दैवतम् आभरणार्थं सुवर्ण-

रजत-ताम्रनिर्मित-पवित्रमङ्गुलीयकं कुबेरदैवत त्रिसूपशमनार्थं शीतमिष्टवारिपूर्णं पित्तलमयं ताम्रमय

वा कमण्डलुं वरुणदैवत शीतोष्णवातलज्जासंरक्षणार्थं परिधानार्थमङ्गप्रोक्षणार्थं च वस्त्रयुगं बार्हस्पत्य दैवतं स-दक्षिणाक नानानाम-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥ प्रार्थना॥

त्रिलोकीनाथ! देवेश! सर्वभूतदयानिधे!। पददानेन तुष्टस्व प्रच्छ मम वाञ्छितम्। इति।

अथ गणपत्यादि-पूजन हवनं च कुर्यात्। आचम्य प्राणानायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रो वेति।

से पूजन कर ३ कुशा इत्यादि लेकर १३ पद का संकल्प एक संग में करके १३ ब्राह्मण को दे। ब्राह्मण लोग 'ॐ स्वस्ति' १६३

१—अत्र सपिण्डीकरणान्ते त्रयोदशाहे पददानम्। तथा च गारुडे कृष्णवाक्यम्। छत्रोपानहवस्त्राणि मुद्रिका च कमण्डलुम्। आसनं भाजनं चैव पदं सप्तविधं स्मृतम्। देयानि सर्ववस्तूनि वरिष्ठानि त्रयोदशे। यो ददाति मृतस्येह जीवन् वाऽप्यात्महेतवे॥

कहें। 'त्रिलोकीनाथ' इस श्लोक से यजमान प्रार्थना करे। गणेशपूजन और होम करने की विधि कहते हैं। आचमन, प्राणायाम करके 'अपवित्रः' इस श्लोक से अपने ऊपर और पूजन सामग्री पर कुशा से जल छिड़के। हाथ में अक्षत, फूल लेकर

आत्मान पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य ॥ हस्ते अक्षात-पुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मङ्गलमन्त्रान् पठेत्। सङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहम् अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः कृतैतत्स-पिण्डनान्ते शुभफलप्राप्त्यर्थं हवन करिष्ये॥ तदङ्गत्वेन कलश-स्थापनं सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च करिष्ये ॥ ततो गणपत्यादिदेवानामावाहनं पूजनं सूर्यादिग्रहाणां हवनं च ग्रहशान्त्यनुसारेण कुर्यात् ॥ ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति त्रयोदशाहकृत्यं समाप्तम् ॥

हाथ जोड़े, 'आनो भद्रा' इत्यादि मन्त्र को पढ़े। संकल्प करके गणेश पूजन, कलश स्थापन, सूर्यादि ग्रहों का स्थापन-पूजन और ग्रहों का होम ग्रहशान्ति के क्रम से करे। बाद ब्राह्मण भोजन करावे। इस क्रम से करे॥ इति त्रयोदशाहकृत्य समाप्त।

इति काशीस्थ-मध्यमेश्वरवास्तव्येनाऽग्निहोत्रिणा

पण्डित श्रीवायुनन्दनमिश्रेण विरचिता तेनैवाऽनूदिता

प्रेतमञ्जरी समाप्ता।

—☆—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* सामग्री *

१६५

चन्दन घिसा हुआ
.१० रोरी .१० सिन्दूर
.१० नारा .२० चूड़ी
.१० कच्चा सूत .१० अबीर
तिल काली १। किलो
यव १२५ग्रा. .१० सर्वौषधी
चावल २।। किलो
उड़द १२५ ग्राम
त्रिकाष्ठिका २०
.१० खश
ऊन ६० ग्राम
भृङ्गराजपत्र
१० राल
पान २००
सोपाड़ी २००

दूध २।। किलो
.१५ फल
दोनिया २००
हँड़िया ६ छोटी, बड़ी
दीया ५०
कसोरा ५०
कलशा ४५
पत्तल २५
वस्त्र ३५
जनेऊ २ कोड़ी
सप्तधान्य २ किलो
सप्तमृत्तिका
पञ्च पल्लव
शहद १२५ ग्राम
घी आधा किलो

चीनी १ किलो
माला फूल ५०
धूपबत्ती २००
दीपबत्ती २००
द्विज-दम्पती की चाँदी की प्रतिमा १
सोने की प्रतिमा २
नारियल २
वरणी मैं सामान के ६
पलङ्ग २
तोशक १
दरी २
चाँदनी २
तकिया २
ओढ़नी २

थाली २
बटुआ ४
लोटा २
गिलास २
कटोरा २
कटोरी ३
गगरा २
चूल्हा २
कड़ाही २
तावा २
कलछुल २
सड़ँसी २
चिमटा २
लालटेन १
छाता ४

जूता ४
खड़ाऊँ २
पीढ़ा २
चौकी २
आसन २
पञ्चपात्र २
आचमनी २
गौमुखी २
माला २
पंखा २
छड़ी २
चँवर २
दर्पण २
कंघी २
सुरमा सलाई २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेत०

१६६

होरसा २
चन्दन २
मिठाई १। किलो
फल
बनउर २ किलो
तिल्ली का तेल आधा किलो
घी २ किलो
गुड़ ५ किलो
सिद्धान्न यथाशक्ति
डीयट २
पानदान २
उगलदान २
गऊ २ ब्याई हुई
भैंस १
घोड़ा २

पालकी २
मशहरी २
अङ्गा २
पगड़ी २
दुपट्टा २
धोती २

मण्डप का सामान

बाँस ५०
सरपत १० बोझ
ईंटा ५००
केला का खम्भा १२
पताका के २१ बाँस पतला
लाल कपड़ा २॥ मीटर
पीला कपड़ा १। मीटर

हरा कपड़ा १। मीटर
काला कपड़ा ७ मीटर
सफेद थान १
बछवा १
बछिया ४
घुँघुरू २४
घण्टी पीतल की ८
लोहे की घण्टी १
अष्टधातु मिलित लोह ७
बरा ७ उड़द का
कपास १२५ ग्राम
.१० सिन्दूर
यमराज की प्रतिमा १
लोड दण्ड १
खाँड़ आधा किलो

सेंधा नमक आधा किलो
ऊख २१ या ११
घड़ा ११ जलभरा
सिद्धा ११ मैं सामान के
यजमान को वस्त्रोपवस्त्र
पहिरने को ४
दुइपेटिया-कड़ाहीमिट्टी की १
चावलका का आटा २५० ग्रा.
धुवांस २५० ग्राम
पद्दान १३
धोती १३
अँगोछा १३
आसन १३
गगरा या लोटा १३
थाली १३

छाता १३
जूता १३
छड़ी १३
पवित्री १३
कमण्डल १३
मीठा १३
पंखा १३
दक्षिणा १३

होम सामान

शाकला १। किलो
घी २५० ग्राम
पलाश की लकड़ी
वेदी के बालू

सा०

१६६

इति दशाहादारभ्य होमान्तसम्भाराः।

—०—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

समाप्त

* प्रेत मंजरी *

टीका.—पं० वायुनन्दन मिश्र

मुद्रक—मास्टर प्रिन्टिग वर्क्स, शीतल प्रसाद
वुलानाला, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2